कप्तान की कन्या

प्रकाशक—सुलभ-ग्रन्थ-प्रचारक मंडल,
३६ शंकरघोष लेन, कलकत्ता

कप्तान की कन्या

(एक रूसी कहानी)

अनुवादक

श्रीजगमोहन 'विकसित'

(*Late Prof. C. N. College.*)

प्रकाशक

सुलभ ग्रन्थ-प्रचारक-मण्डल,

३६, शंकरघोष लेन,

कलकत्ता ।

प्रथमबार १०००

सर्वाधिकार सुरक्षित

सन् १९२९ ई०

मूल्य १॥)

मुद्रक और प्रकाशक :—

महादेवप्रसाद सेठ,

"बालकृष्ण प्रेस"

३६, शंकरघोष लेन,

कलकत्ता।

दो शब्द

'कप्तानकी कन्या' रूसी भाषाकी एक सुन्दर कहानी है। इन पंक्तियोंके लेखकने इसे अंगरेजीसे लिया है और रशियन भाषासे अंगरेजीमें भाषान्तर करनेवाले हैं अंगरेजी और रशियन भाषाके विद्वान श्री टी० कीन महाशय।

मूल लेखक अलेग्जेण्डर पोशकीनका जन्म मास्कोमें सन् १७९९ ई० में हुआ था। धनी घरमें उत्पन्न होनेपर भी ये रूसी जन-साधारणके कवि माने जाते हैं। इनका पहला पद्य-ग्रन्थ सन् १८२५ की प्रसिद्ध रूसी राजक्रान्तिसे पहले ही प्रकाशित हो चुका था। इस क्रांतिमें इन्होंने यद्यपि प्रकट रूपसे भाग नहीं लिया फिर भी इसके साथ इनकी सहानुभूति पर्याप्त रूपमें थी। परिणाम यह हुआ कि देश-निष्कासनका दण्ड देकर इनको काकेशश प्रान्तमें भेज दिया गया। काकेशशसे लौटनेके अनन्तर इनके जो चार काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित हुए, उनमें 'यूजेन ओनीजिन' का विशेष स्थान है। इस पद्यात्मक कहानीसे अन्य रूसी कहानी लेखकोंको कलाके विकासमें पर्याप्त उपकरण प्राप्त हुए। शैशव-कालीन सुख-सम्पत्ति अब इनका साथ छोड़ चुकी थी, इसलिये आर्थिक संकटोंसे ऊब कर अन्तमें इन्होंने सरकारी इतिहास-विभागमें नौकरी कर ली। यहींसे इनके औपन्यासिक जीवनका प्रारम्भ होता है। थोड़ेही दिनोंमें ये सुकविके साथ-साथ

कुशल-उपन्यासकार भी प्रसिद्ध हो गये। आज रूसी भाषामें ये—*'राशियन उपन्यास लेखनशैलीके पिता'* कहकर पुकारे जाते हैं।

कैथराइन द्वितीयके समयमें कासक-क्रान्ति हुई थी। उस क्रान्तिका नायक था पावगाशफ। 'कप्तानकी कन्या' में इसी पावगाशफका, जिसका सिद्धान्त था, 'पूर्ण दण्ड या पूर्ण क्षमा' चरित्र अंकित है। पुस्तक आदिसे अन्ततक साहसिक चित्रणसे परिपूर्ण है और दृढ़ता, वीरता तथा उदारताका मानों सन्देश दे रही है। वृद्ध सेवक सेवलिच स्वामि-भक्ति और कर्त्तव्य-परायणताकी सजीव मूर्त्ति है। पाठक यह देखकर विस्मित होंगे कि कहानीको मनोरञ्जक बनानेके लिये लेखक न तो राजनीतिक गुत्थियोंको स्पर्श करता है और न सामाजिक उलझनोंको। उसके पात्र निरे सरल और सीधे-सादे ढंगसे सामने आते हैं। किन्तु हैं वे मनोभावोंके स्पष्ट चित्र, पढ़नेवालोंको वे चिन्तन-मनन, और सोचने समझनेके लिये पर्याप्त सामग्री प्रदान करते हैं। इसी-लिये सीधी-सादी वर्णनशैली ही अत्यन्त मनोरञ्जक और तुष्टिकर हो उठी है।

अन्तमें हम अपने नगर (कानपुर) के सुयोग्य नागरिक श्रीविश्वम्भरनाथजी शर्मा कौशिकको धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इतनी सुन्दर पुस्तककी हमसे चर्चा की तथा इसको भाषान्तरित करनेके लिये हमें सत्परामर्श दिया।

जगमोहन 'विकसित'

याञ्चा

श्रीमान पं० बलदेवप्रसादजी शुक्ल

अध्यापक, गवर्नमेण्ट हाई स्कूल,

फतहपुर (युक्तप्रान्त)

श्रीमान्,

पुरानी बात है, बहुत पुरानी बात है, अबसे कोई बीस वर्ष पहलेकी बात है। प्रयागराजकी पुण्यभूमिमें विद्यार्थी रूपसे, आपके श्रीचरणोंके निकट थोड़ासा स्थान पाकर, जीवनके पवित्र कर्त्तव्योंके अन्तर्गत मातृभूमि तथा मातृभाषाके प्रति क्रियात्मक सम्मान-प्रदर्शनकी विशद व्याख्या सुनता हुआ, मैं अपनेको धन्य मानता था। उन्हीं दिनों, एकबार आपने मातृभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें मेरा कुछ अंगरेजीका वर्क देखनेकी इच्छा प्रकट की थी। उस इच्छाको आज मैं पूर्ण कर सका हूं, किन्तु आंशिक रूपमें, जो नगण्य है। आशीर्वाद दीजिये कि मुझे अनावकाशसे अवकाश मिले और भविष्यमें मैं वस्तुतः कुछ कर सकूं।

अनुचर—जगमोहन

कमान की कन्या

पहला परिच्छेद

सारजण्ट

मेरे पिता ऐण्ड्री पीट्रोविच ग्रीनेफ अपनी युवावस्थाके अन्तिम दिनोंमें सैनिक सेवासे पृथक हुये। महान पीटरके शासन कालमें 'काउण्ट म्यूनिच' नामका रूसी एक प्रसिद्ध जर्मन सेनामें जेनरल था, इसीके अधीनस्थ मेरे पिता सीनियर मेजरके पद पर थे। सिमबर्स्क जिलेमें हम लोगोंकी पैतृक-सम्पत्ति स्वरूप कुछ जागीर थी। पिताने सन् १७—, में सेनासे अलग होकर, वहीं अपना निवासस्थान बनाया और एवडोशिया वेसिलीवना यू—नामकी एक निर्धन पड़ोसीकी कन्यासे विवाह करके गृहस्थ जीवनमें पदार्पण किया।

हम नौ भाई-बहन थे, पर मेरे अतिरिक्त शेष सब शैशव कालहीमें चल बसे थे। प्रिंस बी—, जिनसे मेरे परिवारका निकट-सम्बन्ध था, सेमेनोस्की रेजीमेंटमें मेजर थे। इन्हींके अनुग्रहसे मैं सारजण्टके पद पर नियुक्त हुआ। मेरे लिये यह निश्चय किया

गया कि, जब तक मैं लिख-पढ़ न लूं, तब तक सेनामें मेरी अनुपस्थिति छुट्टीके रूपमें समझी जाय।

पांच वर्षकी अवस्थामें मैं अपने गेम-कीपर (आखेट-रक्षक) सेवलिचके हाथमें सौंपा गया; वह समझदार और देख-रेखमें चतुर था। मैं अपनी आयुके बारहवें वर्षमें रूसी भाषा भली प्रकार लिखने-पढ़ने लगा। सेवलिच मेरा केवल पुस्तक गुरु ही न था, बन-बीहड़, जङ्गल-पहाड़में घूम फिरकर मृगयाकी शिक्षा देनेका भार भी उसी पर था। सात वर्षकी शिक्षाका परिणाम यह हुआ कि, मैं यदि अच्छा शिकारी न था तो बुरा भी न था। मेरा लक्ष्य-बेध प्रायः अचूक होता था। शिकारी कुत्तोंकी पहचानमें तो मेरा निर्णय वैसा ही होता था जैसा किसी मुकद्दमेमें हाईकोर्टके जजका।

अब पिताने मेरी शिक्षाके लिये मासू बोप्रे नामके एक फ्रांसीसी को मास्कोसे बुलाया। ये अपने अन्य सामानके साथ मदिरा भी अच्छे परिमाणमें लेते आये। सेवलिचको इनका आना बहुत खला, वह इनको देखते ही अपने आप बड़बड़ा उठा,—

'यही हैं वे शिक्षक महाशय, जिनके बुलानानेमें इतना धन व्यय किया गया है। ईश्वर रक्षा करे, देखें, ये क्या सिखाते हैं! क्या अपने लोगोंमें सिखानेवाले मर गये? न जानें क्यों यह रुपया बरबाद किया जा रहा है!"

मासू बोप्रे पहले अपने देश—फ्रांस—में बाल बनानेका काम करते थे, फिर वे जर्मनोंमें एक सेनामें भरती हुये तथा कुछ

दिन बाद, सेनासे निकल कर मास्कोमें शिक्षा देनेके काम पर चले गये। ये गये तो थे शिक्षा देनेके काम पर, परन्तु, दिल्लगी यह थी कि, जिस समय ये मास्को पहुंचे थे, उस समय रूसी भाषाके शब्दोंका शब्दार्थ तक प्रायः न समझते थे।

मासु बोप्रे डीलडौल और रूपरंगके तो बुरे न थे, पर थे अदूर-दर्शी और निपट घामड़। उनके हृदयकी सबसे बड़ी निर्बलता यह थी कि, वे सौन्दर्योपासनाकी सीमा अतिक्रम कर गये थे। सुन्दर रंग-रूप पर तत्काल रीझ जाते थे और आन्तरिक अदम्य आवे-गसे विह्वल तथा अधीर हो उठते थे, मुखसे आहें निकल पड़ती थीं और आकृति पर म्लानता बरस जाती थी। मदिरा देवीके वे पक्के पुजारी थे। पहले वे फ्रांसकी शराबको बड़ी प्रशंसा किया करते थे। पर, रहते-रहते, थोड़े ही दिनों बाद, वे रूसी शराबको फ्रांसीसी शराबसे अच्छी कहने लगे। उनका निजका अनुभव था कि, रूसी शराबमें फ्रांसीसी शराबकी अपेक्षा पाचन-शक्ति अधिक है।

उन्होंने बहुत जल्द मुझे अपना मित्र बना लिए। मुझको फ्रांसीसी और जर्मन भाषाएँ सिखाने तथा सब प्रकारकी वैज्ञानिक शिक्षा देनेके लिये वे नियुक्त हुये थे, पर, उनका मनोयोग इस ओर जरा भी न था। सिखाने पढ़ानेकी अपेक्षा मुझसे रूसी भाषा में गपशप करना उनको बहुत प्रिय था। हम दोनों गुरु-शिष्यकी मित्रता दिन-दिन गाढ़ी और घनी होने लगी। अन्तमें हम लोगोंका समय उसी रूपमें बीतने लगा जिस रूपमें हमलोग उसे रुचिके

साथ बिताना चाहते। मित्रता इतनी गहरी हो गई कि, मैंने कभी किसीसे इस बातकी चर्चा करना उचित न समझा कि, हम लोगों-का समय गपशप और अनाप-शनापके कामोंमें किस प्रकार कट रहा है। बड़े सुखसे दिन जा रहे थे, रटने-रटाने और माथापच्चीकी झन्झटसे मैं बिलकुल पाक था। किन्तु, भाग्यदेव हमारा यह सुखका टाइमटेबल अधिक दिन न देख सके, हम दोनोंको शीघ्र ही अलग होना पड़ा।

बात यह हुई कि, एक दिन हमारी धोबिन और ग्वालेने मिल-कर मांसे चुगली खाई। मांके पैरों पर गिर कर उन दोनोंने अपने अपराधोंकी क्षमा मांगते हुये कहा,—

"मालकिन, मास्, आप लोगोंके भोलेपनसे अत्यन्त अनुचित लाभ उठा रहा है और आपको बरबश सत्यानाशकी ओर लिये जा रहा है।"

धोबिनकी आंखोंमें आंसू छलछलाये हुये थे और ग्वाला बेतरह उदास, रोता-रोता सा, जान पड़ता था। माताने इनकी बातोंको हँसीमें उड़ा देना उचित न समझा। वे उठीं, तत्काल पिताके कमरेमें पहुंचीं, जो कुछ सुना था सांगोपांग पितासे कहा और उसी समय इसकी जांच, पड़तालके लिये पिताको विवश किया। पिताने उसी समय मेरे अध्यापकको तलब किया, उत्तरमें उन्हें यह सूचना दी गई कि, अध्यापक महोदय मुझे पढ़ानेमें लगे हुए हैं।

पिता मेरे पढ़नेके कमरेमें आये। मास् बोप्रे पलङ्ग पर, गहरी

नींदमें खर्राटे भर रहे थे और मैं एक बड़े सुन्दर काममें लगा हुआ था। मुझे भूगोल सिखलानेके लिये, मास्कोसे एक मानचित्र मंगवाया गया था, वह मानचित्र दीवारमें लटक रहा था, आकार प्रकार बड़ा था, कागज मोटा और सुन्दर था, रंग भी अच्छे चढ़े थे। मैं उस मानचित्रको अपने इच्छानुसार व्यवहारमें लानेके लिये अत्यन्त उत्कंठित और लालायित था और उपयुक्त अवसरकी ताकमें था, मैं एक पतङ्ग बनाना चाहता था। मास्यू बोप्रे जब खर्राटे लेने लगे, तब मैंने अपनी इच्छाकी पूर्तिके लिये बड़ा सुन्दर अवसर समझा और पतंग बनानेमें लग गया। पिताने ठीक उसी समय कमरेमें प्रवेश किया जिस समय मैं अफरीकाके दक्षिण-छोर-स्थित गुडहोप अन्तरीपको पतङ्गकी पूंछके रूपमें संवार रहा था। पिताने मेरी भूगोलकी सिखाई देखी और मेरे दोनों कान पकड़ कर जोरसे उमेठ दिये। आह! आज भी मेरे कानोंमें पीड़ा हो उठती है। फिर, बोप्रेकी ओर झुके और स्मरण हो आने पर, मानों बड़ी निश्शीलताके साथ उन्होंने बोप्रेको जगा दिया। पिता रोषके मारे आपेसे बाहर थे, बकझक कर रहे थे। बोप्रेने पलङ्गसे उठना चाहा पर, नशेमें चूर होनेके कारण, उठ न सके। पिताने हाथ पकड़ कर निर्दयता पूर्वक उनको पलङ्गसे खींच लिया और धक्का देकर कमरेसे बाहर कर दिया। सेवलिचको इस दशासे असीम प्रसन्नता हुई। मास्यू बोप्रे उसी समय मास्टरीसे अलग कर दिये गये, साथ ही मेरा भी पढ़ने-लिखनेसे पिण्ड छूटा। पिताने मेरे लिये फिर किसी शिक्षकको नियुक्त

न किया। इस प्रकार मेरी शिक्षा यहीं पर समाप्त हो गई।

अब मैं स्वच्छन्द विचरने लगा, मेरे दिन नटखट, बदमाश और आवारा लड़कोंके साथ बीतने लगे। मेरी दिनचर्य्या हुई, लड़ना-भिड़ना, कबूतर उड़ाना, धौलधप्पड़ और हाहा-हीही आदि। मेरी यह दिनचर्या मेरे सोलहवें वर्षमें पदार्पण करनेतक जारी रही। इसके बाद मेरे जीवन-अभिनयका एक नया सीन आरम्भ हुआ।

बसन्त ऋतुके दिन थे; मांने मुरब्बा बनानेके लिये शहद आग पर चढ़ाया था, जो धीरे-धीरे खौल रहा था और बड़ा सुन्दर फेना दे रहा था। मैं दूर बैठा हुआ फेनेको ललचौहीं आंखों-से देख रहा था और चुपके-चुपके अपने ओंठ चाट रहा था। पिता खिड़कीके पास कोच पर बैठे हुये "कोर्ट-कैलेण्डर" देख रहे थे। पिता पर इस "कोर्ट-कैलेण्डर" का बड़ा प्रभाव पड़ता था, वे सदा इसे ध्यान और रुचिके साथ पढ़ा करते थे। मेरी मां इसके प्रभावसे भली प्रकार परिचित थीं, वे प्रायः इस चेष्टामें रहती थीं कि, यह मनहूस "कोर्ट-कैलेण्डर" जितनी ही देर पिताके हाथमें न रहे, उतना ही अच्छा। हां, तो जैसा मैंने कहा, पिता "कोर्ट-कलेण्डर" देख रहे थे और बीच-बीचमें कन्धे उभाड़ कर बड़बड़ा उठते थे—

"लेफ्टिनेण्ट जेनरल! मेरे समयमें वह एक सारजण्ट था! .....के० आर० ओ०!.....कितने दिन बीत गए जब!....."

अन्तमें पिताने "कैलेण्डर" कोच पर रख दिया और आंखें बन्द कर लेट गए।

उनकी यह क्रिया सदैव ही किसी न किसी अशुभकी सूचक होती थी।

कुछ क्षण पश्चात अकस्मात पिताने मांको पुकारा और कहा,—

"एवडोशिया बेसिलीवना, पीटर कितने वर्षोंका हुआ?"

माताने उत्तर दिया,—

"सोलह वर्ष पूरे हो गये, पीटर अब सतरहवें में पड़ा है, यह उसी वर्ष जन्मा था जिस वर्ष इसकी चचीकी आंखें जाती रही थीं और....."

पिताने बीचमें ही रोककर कहा,—

"हां, ठीक है, अच्छा, अब समय आ गया कि, यह अपनी नौकरी पर जाय। यह यथेष्ट खेल कूद चुका है!"

मेरे बिछोहका विचार कर मेरी माता ऐसी सहम उठी, कि उसके हाथ कांप गये और चम्मच डेगचीके भीतर गिर पड़ा; वह रोपड़ी। किन्तु, मैं इतना प्रसन्न हुआ कि उस प्रसन्नताका चित्र शब्दों द्वारा खींचनेमें असमर्थ हूं। मैंने सोचा कि, सैनिक सेवा करते हुये सेण्ट पीटर्सवर्गमें मेरा जीवन कितनी स्वच्छन्दता और प्रसन्नतासे भरा-पूरा होगा। मैंने अपनेको अपनी धारणाके अनुसार मानवीय तुष्टिके बड़े ऊंच रूपमें—सैनिक शासकके रूपमें—देखा और अपने ऊपर गर्व अनुभव किया।

मेरे पिता दृढ़ विचारके मनुष्य थे; एक बार जो निश्चय कर

लेते थे उसमें फिर फेरफार करना वे न जानते थे। शुभस्य शीघ्रम्के अनुसार वे अपने निश्चयको अविलम्ब कार्य्यके रूपमें परिणत करते थे। मेरी यात्राका दिन निश्चित हो गया। यात्राके एक दिन पूर्व सन्ध्या समय, पिताने यह कहकर कि, 'लाओ, तुम्हारे अफसरको एक पत्र लिख दूं' मुझसे कागज मांगा।

मेरी माताने कहा,—

"ऐण्ड्री पीट्रोविच, प्रिंस बी—, को मेरा सलाम लिखना न भूल जाना, मेरी ओरसे लिख देना कि, वे मेरे पीटरको अपनी ही देखभालमें रखें।"

मेरे पिताकी त्यौरी चढ़ गई। उन्होंने ऊंचे स्वरमें कहा,—

"क्या वाहियात बकती हो? मैं प्रिंस बी—, को क्यों लिखने लगा?"

"क्यों, अभी तुम्हीं तो पीटरके अफसरको पत्र लिखनेके लिये कह रहे थे!"

"हां, तो फिर?"

"तो फिर क्या, प्रिंस बी—, ही तो पीटरके अफसर हैं, पीटर सेमेनोस्की रेजीमेण्टमें ही तो सारजण्टके पद पर नियुक्त हुआ है।"

"नियुक्त हुआ है! होगा। पीटर, सेण्टपीटर्सबर्ग नहीं जा रहा है, वहां जाकर यह क्या सीखेगा? धनका सत्यानाश करना, विलासिताका अभ्यासी बनना, गुण्डेपनका जीवन बिताना—नहीं, पीटर्सबर्ग जानेकी कोई आवश्यकतनहीं है। उसे ऐसी जगह

जाने दो जहां वह कमरबन्द बांध कर, झोला लेकर, बारूदके धुयेंका परिचय प्राप्त कर सके और एक अच्छा सैनिक बन सके, नकि, सारजण्टीमें सुस्त और निकम्मा बन जाय। उसका पास-पोर्ट कहां है ? ले आओ।"

मां पासपोर्ट लेने चली गईं, जिसे उन्होंने उस छोटेसे बक्समें सावधानीसे रख छोड़ा था जिसमें मेरे नामकरणके समयकी कमीज रखी थी। मांने मेरा पासपोर्ट लाकर कांपते हुए हाथोंसे पिताको दे दिया। उन्होंने बड़े ध्यानसे उसे पढ़ा, पढ़कर अपने सामने मेजपर रख लिया और पत्र लिखना आरम्भ किया।

मैं अब यह जाननेके लिये उत्सुक हुआ कि यदि मैं सेण्ट पीटर्सबर्ग नहीं तो फिर और कहां जा रहा हूं! लेखनी मन्द गतिसे चल रही थी, मेरी आंखें उसी पर दृढ़ताके साथ लग गईं। निदान पत्र समाप्त हुआ, पिताने पासपोर्ट सहित पत्रको लिफाफेमें बन्द किया, चश्मा उतार कर मेज पर रखा और मुझे अपने पास बुलाते हुये कहा,—

"लो, यह ऐण्ड्री कार्लबिच आर—के नाम पत्र है। ये मेरे पुराने सहयोगी और मित्र हैं। इन्हींकी अधीनतामें तुम्हें ओरन-बर्गमें रहना होगा।"

मेरी सारी आशायें धूलमें मिल गईं। मैंने सोचा था, सेण्ट पीटर्सबर्गकी रङ्गरलियोंमें सुख लूटूंगा और गुलछर्रे उड़ाऊंगा। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि सुनसान, दूरदेशका उकतानेवाला

जीवन मेरी बाट हेर रहा है। एकक्षण पहले जिस सैनिक सेवाकी भावनाने मुझे अवर्णनीय आनन्दमें निमग्न कर रखा था उसीने बातकी बातमें मेरे नेत्रोंके सामने महान दुर्भाग्यकी किरणें बिखेर दीं! किन्तु, अब कोई उपाय न था, तर्क और वाद-विवादको सामने आनेका अधिकार न था।

प्रातःकाल यात्राकी गाड़ी द्वारके सामने आ खड़ी हुई; कपड़े, बिछौने, बक्स, पेटी आदि मेरा सब सामान यथा स्थान गाड़ीमें रख दिया गया। मैंने प्यार भरी चितवनसे एक बार घरको देखा और यात्राके लिये उद्यत हो गया। माता-पिताने मुझे आशीर्वाद दिया, पिताने कहा,—

"पीटर, अपने कर्त्तव्यका सचाई और ईमानदारीसे पालन करना; अपने अफसरोंका आदेश पालन करना; उनकी मिहरवानियोंकी आकांक्षा न करना; काम पानेके लिये कभी स्वयं उत्सुक न होना किन्तु, यदि मिल जाय तो कर्त्तव्य समझ कर उसे पूरा करके छोड़ना। बाधाओंसे कदापि विचलित न होना। यह प्राचीन शिक्षा सदा स्मरण रखना कि,—"अपने कोटकी उसी समय रक्षा करो जब कि वह नया है और अपनी प्रतिष्ठाकी उस समय जब कि वह नव-स्थापित है।"

मांने आंसू बहाते हुये कहा,—

"बेटा, अपने स्वास्थ्यपर विशेष ध्यान रखना।"

सेवलिच मेरे साथ जा रहा था, मांने सेवलिचसे कहा,—

"सेवलिच, बच्चेकी सब प्रकारसे देखभाल रखना।"

मैंने शश-चर्म्म निर्मित एक लबादा कन्धों पर डाला और दूसरा शृगाल-चर्म्म निर्मित ऊपरसे ओढ़ लिया। फिर गाड़ीमें सेवलिचके साथ जा बैठा। मैंने बड़ी चेष्टा की, पर, अश्रुपात न रुका, मैं रो पड़ा, गाड़ी चल दी।

उसी दिन रातको मैं सिमबर्स्क पहुंचा। यहां मुझे चौबीस घंटे ठहरना पड़ा, जिसमें सेवलिचको मेरे लिये आवश्यक वस्तुओंको जुटानेका अवसर मिल जाय। मैं एक सरायमें ठहरा। रात बीती, सवेरा हुआ, सेवलिच सामान मोल लेनेके लिये बाजारकी ओर चला गया। खिड़कीसे एक तंग और गन्दी गलीको देखते देखते जब मेरी आंखें थक गईं तब मैं सरायके अन्यान्य कमरोंके इर्द गिर्द टहलने लगा। टहलते टहलते मैं बिलियर्ड-रूमकी ओर बढ़ गया। मैंने वहां एक भले आदमीको देखा,—लम्बा डील, बड़ी-बड़ी काली मूंछें, अवस्था पैंतीसके लगभग होगी। वह मार्निङ्ग-गाउन पहने हुये था; उसके हाथमें बिलियर्ड खेलनेका बल्ला था और दांतोंमें चुरट दबा हुआ था। मार्कर अर्थात् दांव लिखने वालेके साथ वह बिलियर्ड खेल रहा था। पास ही शराबसे भरा हुआ प्याला रखा था। मैं ठहर गया और खेल देखने लगा।

मार्कर बराबर हार रहा था। उस भले आदमीने घृणाव्यञ्जक स्वरमें यह कहकर कि, 'तुम्हारे साथ क्या खेलें!' मार्करके साथ खेलना बन्द कर दिया और मेरी ओर देखकर, मुझसे खेलनेके लिये अनुरोध किया। मैंने कहा कि, मैं खेलना नहीं जानता।

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। करुणा भरी दृष्टिसे मेरी ओर देखकर वह मुझसे बातें करने लगा। बातचीत करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि, उसका नाम आइवन आइवनोविच जूरिन है, और वह हुसार सेनामें कप्तान है और यहां सिमबस्कमें, रङ्गरूट भरती करनेके लिये इसी सरायमें जिसमें मैं था, टिका हुआ है।

अन्तमें जूरिनने अपने साथ बैठकर, भोजन करनेके लिये मुझे आमंत्रित किया। मैंने हर्षके साथ निमन्त्रण स्वीकार किया। हमलोग मेजसे सटकर बैठ गये। जूरिनने एक बड़ा सा प्याला पीते हुये मुझसे अनुरोध किया और कहा कि, सैनिक सेवामें इसका व्यवहार नितान्त आवश्यक है। जूरिनने इस सम्बन्धमें कई एक मनोरञ्जक घटनायें वर्णन कीं, मैं हंसता हुआ सुनता रहा। हमलोगजब खाना खाकर उठे तो जान पड़ा कि हमलोगोंका परिचय गहरी मित्रताके रूपमें पलट गया है। अब जूरिनने मुझे यह सिखाना आरम्भर किया कि बिलियर्ड कैसे खेला जाता है?'

"एक सैनिकके लिये उसने कहा,—"यह खेल अनिवार्य है; मान लीजिये, आपकी सेना एक छोटेसे गांवके निकट ठहरी है, अब आप वहां अपना समय कैसे काटेंगे? बिलियर्ड बड़ा सुन्दर खेल है, इसे आप वहां बड़ी सरलतासे खेल सकते हैं और आनन्दसे समय बिता सकते हैं। आपको बिलियर्ड अवश्य सीखना चाहिये।"

जूरिनने मुझे बिलियर्ड सीखनेके लिये पूर्ण प्रकारसे उत्साहित किया। मैंने बड़े चावसे खेल सीखना आरम्भ किया। उसने

मुझे पहले खेलनेकी प्रक्रिया समझाई, तत्पश्चात् खेलना आरम्भ किया। उसने मेरे खेलनेके ढंगकी बड़ी प्रशंसा की। मैं अविलम्ब अभ्यस्त खिलाड़ियोंके समान खेलने लगूंगा—इसको जूरिनने बड़े भावपूर्ण और सुन्दर ढङ्गसे व्यक्त करके विस्मय प्रकट किया। कहना नहीं होगा कि, मेरी मनोरञ्जकता दूनी हो गई और मेरा उत्साह चौगुना बढ़ गया। कुछ देर खेलनेके पश्चात जूरिनने कहा,—

"इस प्रकार खेलनेमें तो जी नहीं लगता, जी लगनेके लिये कुछ थोड़ा सा हमलोग दांव लगाते जांय तो बड़ा अच्छा हो। केवल थोड़ा सा! मनोविनोदके लिये, अधिकका तो मैं बड़ा विरोधी हूं क्योंकि, उससे एक बुरी बान पड़ जाती है।"

मैंने जूरिनका प्रस्ताव स्वीकार किया। खेल आरम्भ हुआ, जूरिनने पहले कुछ इस ढङ्गसे खेलना आरम्भ किया कि मेरा साहस और भी बढ़ गया। इसके बाद मेरी हार आरम्भ हुई। कुछ मार्कर लिखनेमें भी गड़बड़ करने लगा, मैं उस पर बिगड़ा। जूरिनने समझा-बुझाकर मुझे शान्त किया। मैंने देखा कि, मैं जूरिनके साथ बिलकुल बच्चेकी तरह खेल रहा हूं। समय हो गया, जूरिनने घड़ीकी ओर देखकर बल्ला हाथसे फेंक दिया, और मुझे सूचना दी कि,—"आप सौ रबल * हारे।"

मैं इस सूचनासे हक्का-बक्का हो गया, मेरा रुपया सेवलिचके—

---

*रबल रूसका रुपया, उन दिनों इसका मूल्य तीन शिलिंग, चार पेन्सके लगभग था।

हाथमें था। मैं जूरिनसे बहाने करने लगा। जूरिनने बीचमें ही बात काटकर कहा,—

"चिन्तित न हो, न सहो इस समय, फिरदे देना, मैं प्रतीक्षा करलूँगा।"

मैं अब क्या कहता? जिस मूर्खताके साथ मेरा दिन आज आरम्भ हुआ था वैसी ही मूर्खताके साथ समाप्त हुआ। हमलोग सन्ध्या समय भोजन करने बैठे, जूरिन प्याले भर-भर कर बराबर मुझे देता गया और मैं पीता गया; मैं जिस समय खाना खाकर उठा, उस समय कठिनाईसे अपने पैरोंके बल खड़ा हो सका। अन्तमें जूरिनने मुझे मेरे कमरे तक पहुंचाया। आधीरात होनेमें अब कुछ ही समय शेष था।

सेवलिच कमरेसे निकल कर, द्वारपर मुझसे मिला। मेरी अवस्था देखकर उसके मुंहसे एक आह निकल गई, व्याकुल होकर उसने कहा,—

"यह क्या हुआ? कहां तुमने इतनी शराब पीली? तुम तो इतनी कभी नहीं पीते थे!"

सुनकर मैं बहुत बिगड़ा, मैंने लड़खड़ाती आवाज़में उसे डाँट कर कहा कि, हमने पी है कि तुमने पी है? जीभ संभाल कर बातें नहीं करते बनती! जाओ बिस्तर तैयार करो।

सवेरे जब मैं जगा, मेरा सिर बड़े वेगसे धमक रहा था। पिछले दिनकी सारी घटना मेरी आंखोंके सामने नाच उठी, सेवलिचने चायका प्याला मेरे हाथमें देते हुये कहा,—

"इतना पियक्कड़ तो तुम्हारे घरमें कोई नहीं था, न तो तुम्हारे पिता हैं और न तुम्हारे पितामह थे, तुम्हारी मां तो बहुत ही कम, कदाचित् ही कभी, पीती हैं। यह सब मासूको संगतिका फल है। वही दुष्ट तुम्हें यह बुरी लत लगा गया है। अच्छा तुमने मास्टरसे पढ़ा!"

मैं झेंप गया, मैंने मुंह फेर कर कहा,—

"सेवलिच, जाओ, चाय ले जाओ, मुझे चाय न चाहिये।"

पर, यह कठिन बात थी कि सेवलिच जब उपदेश देने पर तुल गया हो तब अकस्मात उसे चुप करा दिया जाय। उसने कहा,—

"पीटर ऐण्ड्रिच सोचो, यह बहुत बुरा है, तुमको क्या लाभ हुआ? सिरमें पीड़ा है, मन थका हुआ और उदास है, मुखाकृति उतरी हुई है। अब कभी न पीना, शराबी आदमी दो कौडीका होता है। बोलो, क्या सोच रहे हो?

इसी समय एक लड़का मेरे कमरेमें आया; वह ज़ूरिनका पत्र लाया था। मैंने पत्र खोला, उसमें लिखा हुआ था,—

"प्रिय पीटर ऐण्ड्रीविच,

"कल जो आप सौ रबल हार गये थे, इसी समय इस लड़के-के हाथ भेज दीजिये तो बड़ा अच्छा हो, मुझे अत्यन्त आवश्यकता है।

"आपका विश्वस्त—

"आइवन ज़ूरिन"

सेवलिच मेरा कोषाध्यक्ष था। पत्र पढ़कर मैंने सेवलिचसे

कहा कि, इस लड़केको सौ रबल दे दो। सेवलिचने विस्मित होकर कहा,—

"क्या, आ-आ-आ ! क्यों ?"

मैंने ठण्ढी सांस भर कर कहा,—

"उसका पावना है।"

सेवलिच और भी अधिक विस्मित हो गया, उसने कहा,—

"पावना ! तुमने ऋण कब लिया, किस लिये लिया ? जो तुम्हारे जीमें आये करो; मैं रबल नहीं दूंगा।"

मैंने सोचा कि, यदि इस दुराग्रही व्यक्तिसे इस समय मैं रबल न ले सका तो इसका परिणाम भयङ्कर होगा, मेरी स्वाधीनता सदाके लिये जोखोंमें पड़ जायगी। मैंने अभिमान भरी दृष्टिसे सेवलिचकी ओर देखा और कहा,—

"मैं मालिक हूं और तुम मेरे नौकर हो, धन मेरा है। मैं खेलमें हार गया, मेरी इच्छा थी, मैंने उस खेलको पसन्द किया, तुम कौन होते हो मेरे कामोंमें बाधा डालनेवाले ? सुनो, मैं तुमको सदाके लिये सचेत किये देता हूं कि तुम मेरी इच्छाका विरोध करनेका अब कभी साहस न करना, तुम्हारा काम केवल आज्ञा पालन करना है।"

सेवलिच मेरे शब्दोंसे इतना चकित हुआ कि, मुट्ठियां बन्द करके, पत्थरकी मूर्ति सा बन गया, उसके मुंहसे एक शब्द न निकला। मैंने क्रोध भरे स्वरमें चिल्लाकर कहा,—

"क्यों खड़े रह गये ? जाओ, रुपये ले आओ।"

सेवलिच रो पड़ा, उसने कांपते हुये स्वरमें—लड़खड़ाती हुई जीभसे कहा,—

"भैय्या पीटर ऐण्ड्रियच, मुझे न सताओ, दुख देकर मेरा हृदय विदीर्ण न करो। तुम मेरे जीवनके प्रकाश हो, मैं संसार देखते देखते बूढ़ा हुआ हूं। सुनो मेरी बात, उस लुटेरेको लिख दो कि, मेरे पास इतना धन नहीं है, मैं तो केवल मनोरञ्जनके ढङ्ग पर आपके साथ कल खेलता रहा था। मेरे माता पिताने दृढ़ता पूर्वक आदेश....."

मैंने रोककर कहा,—

"बको मत, बस इसीमें भलाई है, कि रुपये ले आओ, नहीं, मैं गर्दन पकड़ कर तुमको अभी निकाल बाहर करूंगा।"

सेवलिचने दुःख भरी गहरी सांस लेकर मेरी ओर देखा। मेरी मुखाकृति दृढ़ थी। सेवलिच रुपया लेने चला गया। मुझे वृद्ध सेवलिच पर तरस आया; पर, मुझे अपनी स्वतन्त्रताका ध्यान था। मैं यह दिखाना चाहता था कि, अब मैं बच्चा नहीं हूं।

जूरिनके रुपये दे दिये गये। सेवलिचने बड़ी शीघ्रताके साथ इस मनहूस सरायको छोड़नेका प्रबन्ध किया। उसने मुझसे आकर कहा घोड़े तैयार हैं। मैं अपने हृदयमें एक अव्यक्त वेदना अनुभव कर रहा था और पश्चात्तापकी ज्वालामें जल रहा था। निदान, मैंने सिमबर्स्क छोड़ दिया। चलते हुये मैंने अपने बिलियर्ड-शिक्षकसे भेंट भी नहीं की।

उससे फिर कभी भेंट होगी मैंने यह ख़याल भी नहीं किया।

—०—

दूसरा परिच्छेद ।

—:o:—

मार्ग-दर्शक

प्रत्यक्षमें तो मैं गाड़ी पर सुखसे बैठा हुआ यात्रा कर रहा था किन्तु, मेरा मन बड़े उलझनके विचारोंमें व्यस्त था। रुपयेकी मुझे अकस्मात जो हानि उठानी पड़ी थी वह, रुपयेका उस समयका मूल्य देखते हुये, कोई साधारण बात न थी। प्रकटमें तो नहीं, पर, मन ही मन मैंने स्वीकार किया कि, सिमबर्स्कको सरायमें मेरा ढङ्ग बड़ा मूर्खतापूर्ण रहा। मैंने वास्तवमें सेवलिचके सामने अपनेको अपराधी पाया। मैं अत्यन्त खिन्न हो गया। बुड्ढा उदासता व्यञ्जक मौनताके साथ, मेरी ओरसे मुंह फेरे हुये गाड़ीमें बैठा हुआ था, और बीच-बीचमें ठण्ढी साँसें ले रहा था। मैं सेवलिचसे सुलह करना चाहता था, किन्तु, बड़ी देर तक मैं यह न निश्चय कर सका कि, प्रसङ्ग कैसे छेड़ूं! अन्तमें मैंने उससे कहा,—

"सेवलिच, अब अधिक खेद न करो। मुझे दुःख है कि मैंने कल तुम्हारा अकारण तिरस्कार किया। अपराध मेरा ही था, मैं कुराहका राही बन गया था, मेरे कलके काम

उल्लूपनके थे। मैं अब तुम्हें वचन देता हूं कि, इस प्रकारकी मूर्खता भविष्यमें न करूंगा। तुम्हारी हित भरी बातें मैं सदा ध्यानसे सुनूंगा और उनके अनुसार चलूंगा। अब तुम अपना रोष दूर करो। मैं आशा करता हूं कि, एक हितूकी भाँति तुम मेरी भूल अपने मनसे भुला दोगे।"

एक गहरी साँस लेकर सेवलिचने कहा,—

"आह, पीटर ऐण्ड्रिच, मैं तुम्हारे ऊपर नहीं, अपने ही ऊपर बिगड़ रहा हूं। कल जो कुछ हुआ उसका दोषी केवल मैं हूं। मैंने तुमको सरायमें अकेला छोड़ क्यों दिया! मैं कितना अभागा हूं। घर लौटकर मालिक और मालकिनको कैसे मुंह दिखाऊंगा? कैसे मैं उनसे कहूंगा कि, मेरे रहते हुये तुम्हारा लड़का शराबी और जुवारी हो गया?"

सेवलिचके सन्तोषके लिये मैंने प्रतिज्ञा की कि, अब बिना उसकी अनुमतिके मैं एक पाई भी न खर्च करूंगा। धीरे-धीरे उसका रोष शान्त हुआ, फिर भी वह प्रायः सिर हिलाकर बड़बड़ा उठता था,—"आह, सौ रबल! कुछ थोड़े होते हैं!"

मेरा अभीष्ट स्थान निकट आ रहा था। मार्ग भयंकर था, दूर दूर तक ऊंची नीची भूमि फैली हुई थी। कहीं पहाड़ी थी और कहीं घाटी। बर्फकी सफेद चादर सब ओर बिछी हुई थी। सूर्य्य अस्त हो रहा था। गाड़ी एक संकरे मार्गको पार कर रही थी या स्पष्ट शब्दोंमें यों कहना चाहिये कि, अब मेरी गाड़ी देहाती लढ़ियोंकी लीकसे जा रही थी। अकस्मात गाड़ीवानने

सामनेकी ओर ध्यानसे देखा और फिर टोपी हाथमें लेकर, मुझसे कहा—

"आप आज्ञा दें, कि मैं गाड़ी पीछे लौटा लेचलूं ?"

"क्यों ?"

"मुझे लक्षण अच्छे नहीं जान पड़ते ; हवा भयङ्कर, चक्करदार रूपमें सरसराई है। वह देखो बर्फ कितने वेगसे गिरना आरंभ हुई है ?"

"तो क्या हुआ ?"

"और, हाँ वह सामने क्या है ?"—गाड़ीवानने चाबुकसे पूर्वकी ओर संकेत किया। मैंने कहा,—

"कहाँ, कुछ तो नहीं, बर्फीले मैदान और स्वच्छ आकाशके अतिरिक्त और कुछ तो नहीं जान पड़ता।"

"वह, दूर, बहुत दूर, वह बादल उठ रहा है।"

मैंने ध्यानसे देखा, वास्तवमें दूर पर, क्षितिजके निकट सफेद बादलका एक छोटासा टुकड़ा था। मैंने उसे पहले हिमाच्छादित पहाड़ी समझा था। गाड़ीवानने सशंकित मुखाकृतिसे बतलाया कि, यह क्षुद्र मेघ घोर हिमवर्षाका सूचक है।

मैं हिम-वर्षाका प्रभाव जानता था। मैंने सुना था कि वेगकी हिम-वृष्टिमें गाड़ियाँ हिम प्रवाहमें डूब जाती हैं। सेवलिच गाड़ीवानके विचारसे सहमत था। उसने कहा, हम लोगोंको पीछे लौट पड़ना चाहिये। किन्तु, मुझे वायुका प्रवाह प्रबल न जान पड़ा। मुझे आशा हुई कि, आजके विश्राम-स्थान तक

पहुंच रहनेके लिये अभी पर्य्याप्त समय है। मैंने गाड़ीवानसे कहा कि, नहीं, घबड़ाओ मत, अभी समय है, अब कौन दूर है, गाड़ी तेज हाँको, अभी पहुंचते हैं।

गाड़ीवानने घोड़ोंको सरपट छोड़ दिया, किन्तु, वह पूर्वकी ओर बराबर देखता रहा। घोड़े अपनी चाल बराबर बढ़ाते गये। इधर वायुका वेग भी धीरे धीरे प्रबल हो चला। क्षुद्र मेघ, वृहद् श्वेत जलद राशिमें परिणत हो गया, और बातकी बातमें सारा आकाश मेघाच्छादित हो उठा। हिम-वृष्टि प्रारम्भ हो गई। वायु भयङ्कर नाद करती हुई अति प्रबल वेगसे बह उठी। बर्फका तूफान आ गया, आकाश निरा हिम-सिन्धु बन गया।

गाड़ीवानने चिल्लाकर कहा,—

"अब क्या हो सरकार, बर्फके विकट तूफानसे पाला पड़ा है! हम लोगोंका दुर्भाग्य!"

मैंने इधर उधर देखनेकी चेष्टा की, पर, अन्धकारके अतिरिक्त कुछ दिखलाई न पड़ा। वायुकी भयङ्कर-तीव्रताके कारण ऐसा प्रतीत होता था मानों वह सजीव हो उठी हो। हिम-वृष्टि बराबर हो रही थी। मेरे आस पास बर्फ जमा हो रही थी। सेवलिच भी बर्फसे भर रहा था। घोड़ोंने चाल धीमी कर दी, वे अब ऐसे चलने लगे जैसे वायु सेवनके समय दो मित्र बातें करते हुए टहलते हैं। कुछ ही देरमें वह चाल भी धीमी होकर रुक गई, घोड़े खड़े हो गये। मैंने अधीर होकर गाड़ीवानसे कहा,—

"क्यों भाई, ठहर क्यों गये ?"

गाड़ीवान गाड़ीसे कूद कर नीचे खड़ा हो गया और बोला,—

"ठहर न जाऊं तो क्या करूं ? घोड़ोंको कहाँ बढ़ाऊं ? मार्गका पता नहीं है, ऊंची नीची भूमि, नाला, घाटी—सब बर्फसे समतल हो रहे हैं। मैं यह भी नहीं अनुमान कर सकता कि, इस समय हम हैं कहाँ ? चारों ओर तो घना अन्धकार छाया हुआ है।"

मैंने गाड़ीवानको झिड़कना आरम्भ किया। सेवलिचने उसका पक्ष लिया। क्रोधसे भभक कर उसने कहा—

"गाड़ीवान पर क्यों बिगड़ रहे हो," उसने तो आरम्भमें ही कहा था, उसकी बात तुमको मान लेनी चाहिये थी। पिछला छोटा स्टेशन निकट था, वहीं आनन्दसे लौट चलते, न है-है होती न खै-खै। रात भर सुखकी नींद सोते, हिम-वृष्टि कहाँ तक होती, रात भर में समाप्त हो जाती, आनन्दसे प्रातः काल उठते और अपनी यात्रामें चल पड़ते। और इतनी जल्दी ही काहेकी पड़ी थी ? कहीं व्याह-बारातमें सम्मिलित होने तो जा ही नहीं रहे थे !"

सेवलिचकी बातें ठीक थीं पर, अब उपाय क्या था ! हिम-वृष्टिमें कुछ भी अन्तर न पड़ा, ढेर की ढेर बर्फ गाड़ीके आस-पास जमा होने लगी। घोड़ोंका साहस टूट चुका था, वे बड़े कातर हो रहे थे और रह रहकर काँप उठते थे। गाड़ीवान उनको धीरज बंधानेके लिये उनपर हाथ फेरने लगा। मैंने बड़ी उकताहट और व्याकुलताके साथ फिर चारों ओर

इस आशासे देखा कि, कहीं कुछ सहारा देख पड़े या रास्ता मिले। किन्तु, हिम-स्तूपोंके अतिरिक्त और कुछ न दिखाई पड़ा। अचानक कोई काली वस्तु मुझे देख पड़ी। मैं चिल्ला उठा,—

"ए, गाड़ीवान! देखो वह सामने काला काला क्या देख पड़ता है?"

गाड़ीवानने ध्यानपूर्वक उस ओर देखा, फिर वह झपट कर गाड़ी पर चढ़ आया और बोला,—

"भगवान जानें, वह क्या है? वह पेड़, पौधा तो है नहीं, वह तो चल सा रहा है। वह या तो मनुष्य है या भेड़िया!"

मैंने उसे उस अज्ञात वस्तुकी ओर गाड़ी बढ़ानेकी आज्ञा दी जो क्रमशः हमारे सन्निकट आ रही थी। मिनटोंमें हम उसके निकट आ गए। अब ज्ञात हुआ कि वह मनुष्य था। गाड़ीवानने पुकारा,—

"महाशय, अच्छे मिले, क्या आप जानते हैं कि रास्ता किधर है?"

उस मनुष्यने उत्तरमें कहा,—

"हाँ, रास्ता यह है, मैं इस समय ठीक रास्ते पर खड़ा हूं, पर, रास्ता पूछ कर क्या करोगे?"

मैंने कहा,—

"भाई सुनो, क्या तुम यहीं कहींके रहने वाले हो? क्या यहाँ पासमें कोई ऐसा स्थान है जहाँ हम यह भयङ्कर रात काट सकें?"

उसने उत्तर दिया,—

"हाँ, हम यहींके रहने वाले हैं, हम यहाँके गली-घाटसे भली प्रकार परिचित हैं। पर, आप देखें कि, कैसा दुर्दिन है। बहुत सम्भव है कि, कुछ ही दूर चल कर, आप राह भूल जायँ। आप कुछ देर और प्रतीक्षा करें तो अच्छा हो, सम्भवतः जल्द ही हिम-प्लावन रुक जायगा, गगन-मण्डल स्वच्छ हो जायगा, और तारागण निकल आवेंगे, तब हमलोग बड़ी सुगमतासे आगे बढ़ सकेंगे।"

ये बातें मुझे समयानुकूल जँचीं। मैंने अपनेको ईश्वरकी इच्छा पर छोड़ दिया, और जो कुछ बीते उसे सहनेके लिये अपनेको दृढ़ किया। सहसा वह मनुष्य निकट आ गया, और गाड़ी पर चढ़कर उसने गाड़ीवानसे कहा,—

"ईश्वरको धन्यवाद है, यहाँ पासहीमें एक मकान है; गाड़ी दाहिने घुमा कर सीधे हाँक दो।"

गाड़ीवानने असन्तोष-व्यञ्जक स्वरमें कहा,—

"गाड़ी दाहिने क्यों घुमा दूं? रास्ता कहां है? क्रूरता पूर्वक चाबुक मार मारकर घोड़ोंको व्यर्थ क्यों कष्ट दूं, मैं इन घोड़ोंका मालिक थोड़े ही हूं।"

मुझे गाड़ीवानकी बात ठीक समझ पड़ी। मैंने उस अपरिचित पुरुषसे पूछा,—

"तुमने कैसे जाना कि, यहां बहुत पास ही कोई घर है?"

उसने उत्तरमें कहा,—

"हवा इधरसे ही आ रही है, और हवामें धुंयेंकी गन्ध है; इसीसे निश्चय होता है कि कोई गाँव अत्यन्त पास है।"

उसकी बुद्धिकी कुशाग्रता और उसकी घ्राण-शक्तिकी उत्तमता पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने गाड़ी चलानेकी आज्ञा दी। घोड़े गहरी बर्फमें बड़ी कठिनाईसे बढ़ने लगे। गाड़ी मन्द गतिसे चलने लगी। कभी वह खड़ी पर्वत-श्रेणी पर चढ़ जाती और कभी विस्तृत हिमतलको चीरती हुई चलने लगती। जिस समय गाड़ी हिमतल चीरती हुई बढ़ने लगती उस समय ऐसा जान पड़ता था कि, मानों हमलोग जलयानमें बैठे हुए हिम-सिन्धुमें यात्रा कर रहे हैं। सेवलिच बड़ा भयभीत हो गया था, आहें भरता था, काँपता था और कराहता था। मैं अपना लबादा ओढ़कर गाड़ीके भीतर लेट गया, गाड़ीका हिलाव-डुलाव थपकियाँ लगा रहा था और हिम वृष्टि लोरियाँ गा रही थी, मुझे झपकी आ गई।

इस साधारण झपकीमें ही मैंने एक ऐसा स्वप्न देखा जिसे मैं अपने जीवनमें कभी न भूलूंगा। वह स्वप्न आज भी, जब मैं उसकी अपने जीवनकी विचित्र घटनाओंसे तुलना करता हूं तो, मुझे एक दैवी सूचनाके समान प्रतीत होता है। पाठक यहां मुझे उसका वर्णन करनेके लिए क्षमा करेंगे? क्योंकि वह सम्भवतः यह जानते होंगे कि मनुष्य प्रत्यक्षमें अन्ध विश्वासका चाहे जितना बड़ा विरोधी क्यों न हो है वह स्वभावतः अन्ध विश्वासशील।

मेरे मस्तिष्ककी इस समय वैसी ही अवस्था थी जैसी

नशाकी प्राथमिक दशामें कल्पना और वास्तविकताके एक साथ मिल जानेपर हुआ करती है। मुझे ऐसा भान हुआ मानों तूफ़ान अभी चल रहा है, हिमवृष्टि हो रही है और हम वर्फके उजाड़ और सुनसान जंगलमें इधर उधर भटकते फिरते हैं,..... अचानक मेरी दृष्टि एक फाटक पर पड़ी, मैं उसके भीतर पहुंचा। मैंने देखा कि, वह मेरा ही निवास-भवन है। मैं यह सोचकर बड़ा भयभीत हुआ कि, जब पिता यह देखेंगे कि, मैं उनकी आज्ञाके प्रतिकूल, जान-बूझकर अपनी स्वच्छन्दतासे घर लौट आया तब बड़े कुपित होंगे। घबराहटके भावावेशमें मैं अपनी गाड़ीसे नीचे कूद पड़ा और देखा कि माँ सामनेसे आ रही हैं, उनके मुख पर गहरे शोककी कालिमा छायी हुई है। उन्होंने मुझसे कहा,—

"बेटा, तुम्हारे पिता मृत्यु शय्या पर पड़े हैं, और अन्तिम वार तुमको देखना चाहते हैं।"

मेरे प्राण सूख गये, मैं माँके पीछे-पीछे पिताजीके शयन कक्षमें प्रविष्ट हुआ। देखा, कमरेका प्रकाश अत्यन्त धुंधला था और बहुतसे लोग पलङ्गकी चारों ओर खड़े थे, उनके मुंह पर उदासी बरस रही थी। मैं पलङ्गके पास पहुंचा, मेरी माँने कहा,—

"ऐण्ड्रो पीट्रोविच! पीटर आया है, तुम्हारे अधिक बीमार होनेका समाचार पाकर यह लौट आया है, इसे आशीर्वाद दो।"

मैं झुका, मेरी आँखें रोगी पर पड़ीं। मैं झिझक कर एक पैर पीछे हट गया। यह क्या? मैंने देखा, पलंगपर मेरे पिता नहीं हैं, वरन् एक दढ़ियल गंवार लेटा हुआ है और मेरी ओर मसखरेपनसे

देख रहा है। मैं चकित हो गया, घूम कर मैंने मातासे कहा,—

"मैं यह क्या देख रहा हूं? यह मेरे पिता नहीं हैं, तुम मुझे इस गंवारसे आशीर्वाद मांगनेके लिये क्यों कह रही हो?"

माँ ने उत्तर दिया,—

"पीटर, ये तुम्हारे सौतेले बाप हैं, इनका हाथ चूमो और इनसे आशीर्वाद लो।"

मुझे यह रत्ती भर भी नहीं रुचा, अतः मैं इस पर राजी नहीं हुआ। यह देखकर गंवार उछल कर पलंगसे नीचे खड़ा हो गया और पीछे खूंटी पर टंगे गड़ासेको उतार कर, बड़े वेगसे चारों ओर घुमाना आरम्भ किया। मैंने चाहा कि, भागकर तत्काल कमरेसे बाहर निकल जाऊं, पर मैं भाग न सका। कमरेमें जहाँ-तहाँ लाशें गिरती देख पड़ीं। कमरा रक्त-प्लावित हो गया, मैं शव-समूहोंसे टकराने लगा और रक्त-कुण्डमें मेरा पैर फिसलने लगा। उस भयानक देहातीने बड़े मधुर स्वरमें मुझे पुकारा और मुझसे कहा,—

"डरोमत, आओ और मेरा आशीर्वाद लो।"

शङ्का और भयसे मैं अधमरा हो गया.....इसी समय मेरी आँखें खुल गईं; गाड़ी स्थिर खड़ी थी और सेवलिच मेरा हाथ पकड़कर कह रहा था,—

"हम लोग पहुंच गये हैं, आओ, गाड़ीसे उतरें।"

मैंने अपनी आँखें मलते हुए पूछा,—

"कहाँ पहुंच गये?"

सेवलिचने उत्तरमें कहा,—

"गाँव मिल गया, इस भयङ्कर रातमें हमलोगोंको यहाँ शरण मिलेगी। ईश्वरने दया की कि, हमलोग यहाँ तक सकुशल आ पहुंचे। उतरो, चलो, शरीरको कुछ गर्मी पहुंचानेका प्रबन्ध करें।"

मैं गाड़ीसे उतर पड़ा, आंधी अभी भी चल रही थी। परन्तु पहलेकी सी भयङ्करता अब न रह गई थी। चतुर्दिक अन्धकार छाया हुआ था, आँखोंका होना न होना दोनों समान था। घरका मालिक लालटेन लिये हुये द्वार पर आया और हम लोगोंको कमरेमें ले गया। कमरा साधारणतः साफ था। दीवाल पर एक ओर राइफल टँगी थी और दूसरी ओर वैसी टोपी जैसी कि कासक (Cossack) जातिके लोग देते हैं।

गृहस्वामी येकियन कासक जातिका था। वयसमें लगभग साठके होगा परन्तु, हट्टा-कट्टा और पुष्ट-शरीर था। सेवलिचने चाय निकाली और चाय बनानेके लिये आग चाही। मैंने चायके महत्वको जितना इस अवसर पर अनुभव किया उतना जीवनमें कदाचित ही कभी अनुभव किया हो। मैंने सेवलिचसे पूछा,—

"मार्ग दर्शक सज्जन कहाँ हैं?"

कोठे परसे उत्तर मिला,—"मैं यहाँ हूं, महाशय!"

मैंने ऊपर देखा, एक बड़ी सी दाढ़ी और दो चमकती हुई आंखें देख पड़ीं। मैंने कहा,—

1V32
हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ० (पुस्तकालय) इलाहाबाद

"कहिये मित्र, मारे शीतके आप तो व्याकुल हो रहे होंगे ?"

उसने उत्तरमें कहा,—

"अवश्य, इस पतले सलूकेसे ठंढ कैसे बच सकती है। मेरे पास एक ऊनी कोट था, किन्तु आपसे छिपाऊं क्यों, उसे मैंने एक शराब बिक्रेताके यहां बन्धक रख दिया ; कल जाड़ा उतना प्रबल नहीं प्रतीत होता था !"

इसी समय गृहस्वामी एक देगमें गरम चाय लेकर मेरे कमरेमें आया ; मैंने मार्गदर्शकसे एक प्यालाचाय लेने कहा ; वह नीचे आया, उसकी बाहरी आकृति मुझे कुछ आश्चर्य-जनक प्रतीत हुई। उसकी उम्र चालीसके लगभग थी, डील-डौल सामान्य, देह दुर्बल और कन्धे चौड़े थे। उसकी काली दाढ़ीमें जहाँ-तहाँ भूरे बालोंने बेलबूटे बनानेकी चेष्टा की थी, बड़ी-बड़ी काली आंखें आतुर और चञ्चल थीं। उसकी मुखाकृति आकर्षक थी, यद्यपि उसमें प्रतिहिंसाके भाव भी कुछ-कुछ थे। सरके बाल खूब छोटे-छोटे कटे हुए थे। सलूका फटा हुआ था और पाय-जामा तातारी ढंगका था। मैंने उसे चायका प्याला दिया ; उसने उसे चीखा और मुंह बनाकर कहा,—

"सरकार, हम कासक चाय नहीं पसन्द करते, कृपाकर मुझे एक ग्लास शराब मंगवा दीजिए।"

मैंने उसकी प्रार्थना सहर्ष स्वीकार की। निदान गृहस्वामी आलमारीसे बोतल और ग्लास निकालकर उसके पास गया, और उसके मुंहकी ओर ध्यानसे देखकर कहा,—

"ओह, तुम फिर हमारे पड़ोसमें आगये! कहांसे आ रहे हो?"

मार्गदर्शकने सार्थक पलक मार कर कहा,—

"कुसुम काननमें उड़ते हुये और बीज चुनते हुये; वृद्धाने ढेला मारा पर लगा नहीं। हाँ यह तो बतलाओ तुम्हारा क्या हाल है?"

गृहस्वामीने उसी रूपकमय भाषामें उत्तर दिया,—

"हमारा क्या हाल है? वे सन्ध्या-कालीन ईश-आराधना आरम्भ करने वाले थे किन्तु, पोपकी स्त्रीने आज्ञा नहीं दी, पोप मिलने गये हैं और शैतानके हाथमें गिरजेकी रखवाली छोड़ गये हैं।"

मेरे मार्गदर्शकने जीभ दांतों तले दबाकर, कहा,—

"अरे, ऐसा न कहो। वर्षा होने पर कुकुरछत उगता ही है, और.....(सांकेतिक पलक मार कर) हां, अपना गँड़ासा अपने पास रखना, वन-पर्यटक चारों ओर घूम रहा है।"

फिर उसने मेरी ओर मुंह करके कहा,—

"आपकी आरोग्यताके नाम पर मैं यह प्याला पीता हूं।"

प्याला पीकर उसने झुककर मुझे प्रणाम किया और फिर कोठे पर चला गया।

इस संकेत भरी भाषाका उस समय तो मैं कुछ भी अर्थ न समझा, किन्तु बादमें मुझे ज्ञात हुआ कि, उसका संबन्ध उस बेक्रियन सेनासे था, जो सन् १७७२ के विद्रोह के बाद अभी हाल ही में पराजित हुई थी। सेवलिच उक्त वार्तालाप सुनकर बड़ा असंतुष्ट हुआ, उसने शंकित और भयातुर

दृष्टिसे पहले गृहस्वामीको देखा और फिर मार्ग दर्शकको। उसने समझा कि, यह सराय नहीं डाकुओंका अड्डा है, पर, अब उपाय क्या था! मैंने उठकर सोनेका प्रबन्ध किया, शयन-भवनमें हम लोगोंके बिस्तरे बिछ गये। गृहस्वामीने अपना बिछौना दूसरे स्थान पर बिछाया। रात अधिक जा चुकी थी, पड़ते ही सब सो गये; मैं तो ऐसी गहरी नींदमें सोया मानों शयनागारमें नहीं, कब्रमें लेटा था।

दूसरे दिन जब मैं जगा, तब दिन चढ़ आया था, आकाश स्वच्छ हो गया था, हिम वृष्टिका नाम न था, सूर्य्य चमक रहा था, हिमस्तूप रवि-उत्तापसे पिघल रहे थे। घोड़े जोते गये, मेरे टिकनेके कारण गृहस्वामीका जो व्यय हुआ था, मैंने सब चुका दिया। खर्चकी रकम इतनी साधारण थी कि सेवलिचको भी अपने स्वभावके अनुसार हिसाब चुकाते हुये तर्क-बितर्कके साथ हिसाब समझ लेनेकी आवश्यकता नहीं जान पड़ी। सेवलिचका अब उन लोगोंके डाकू होनेका सन्देह दूर हो गया था; मैंने मार्गदर्शकको पुकारा और सहायता देनेके लिये उसे धन्यवाद दिया और सेवलिचको उसे शराब पीनेके लिये आधा रबल देनेकी आज्ञा दी।

सेवलिचने माथेपर बल डालकर कहा,—

"शराबके लिये आधा रबल? क्यों? इसलिये कि, आपने इसे यहां इस सराय तक ले आनेकी कृपा की! मैं क्षमा चाहता हूं। हमारे पास आवश्यकतासे अधिक रुपये नहीं हैं। इस प्रकार

जितने लोगोंसे हमें व्यवहार करना पड़ेगा उन सबको यदि मैं शराबके लिये देने लगा तो हमें खुद फ़ाके करने पड़ेंगे।"

मैं सेवलिचको वचन दे चुका था कि, अब तुम अपनी इच्छानुसार रुपये व्यय करना, मैं तुम्हारे बीचमें न बोलूंगा, इसलिये मैं ताव-पेंच खाकर रह गया। पर, मुझे बड़ा दुःख हुआ, कि मैं अपने एक ऐसे उपकारीके प्रति जिसने हमें मृत्युके मुखसे बचाया था, कृतज्ञता प्रकाश नहीं कर सकता। मैंने झुंझला कर कहा,—

"अच्छा, उसे यदि आधा रबल नहीं देना चाहते हो तो, मेरे कपड़ोंमेंसे कोई कपड़ा ही देदो। इसका वस्त्र ऋतुके विचारसे बहुत हलका है सुनो, हमारा शश-चर्म-निर्मित अंगरखा उसे देदो।"

सेवलिचने कहा,—

"ईश्वरके लिये पीटर, मुझे क्षमा करो, इसे अंगरखा देनेसे क्या लाभ होगा? यह कुमार्गी आज ही बेंच डालेगा और शराब पियेगा।"

मार्गदर्शकने उत्तर दिया,—

"ऐ बुड्ढे! वह सब सोचना तुम्हारा काम नहीं है, मैं बेंचूं या रखूं—तुम्हें इससे क्या? सरकार अपने कपड़ोंमेंसे मुझे एक कपड़ा देना चाहते हैं, यह उनकी उदार इच्छा है, तुम्हारा काम सेवककी भांति आज्ञा पालन करना है, तर्क-वितर्क करना नहीं।"

सेवलिचने आग होकर कहा,—

"तुम लुटेरे हो, तुमको ईश्वरका भय नहीं है, पीटर अभी अपरिपक्व बुद्धिके हैं, तुम उनके भोलेपनसे अनुचित लाभ उठाना

चाहते हो, और उनको लूटना चाहते हो। तुम अंगरखा लेकर क्या करोगे ? तुम्हारे अभागे कन्धोंतक भी तो न होगा।"

मैंने सेवलिचसे कहा,—

"ठहरो, तुम्हें अपनी बुद्धि खर्च करनेकी ज़रूरत नहीं, अधिकार-वधिकारकी जांच रहने दो, अंगरखा शीघ्र यहां ले आवो।"

सेवलिचने बड़बड़ाते हुए कहा,—

"अंगरखा अभी बिल्कुल नया है, किसी उपयुक्त व्यक्तिको देते होते तब भी एक बात थी मेरे उदार प्रभु! किन्तु, इस फटेहाल शराबीको देना....."

ख़ैर, सेवलिच शश-चर्म-निर्मित अंगरखा ले आया। देहातीने फौरन ही उसे नापना आरम्भ किया। और, वास्तवमें, वह अंगरखा जो स्वयं मुझे छोटा होने लगा था, उसे बहुत छोटा हुआ। किन्तु उसने उसे ज्यों-त्यों करके पहन ही लिया, यद्यपि इस चेष्टामें वह बाँहपर फट गया। सेवलिचने जब सीवन टूटनेकी आवाज़ सुनी तो उसने एक आह भरी। मार्गदर्शक अंगरखा पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह मुझे गाड़ी तक पहुंचाने आया और नम्रतापूर्वक प्रणाम करते हुए कहा—

"सरकार, मैं धन्यवाद देता हूं, ईश्वर आपको इस उदारताका प्रतिफल दे, मैं आपकी यह दयालुता कभी न भूलूंगा।"

मैं अपनी यात्रा पर फिर चल पड़ा। सेवलिच अभी शान्त न हुआ था, मन मारे बैठा था। मैंने भी उसे छेड़ना उचित न समझा, मैं अपने विचारोंमें लीन हो गया।

ओरनबर्ग पहुंचकर मैं तत्काल जनरलके पास पहुंचा। जनरलका क़द लम्बा था, पर, लम्बाईपर बृद्धावस्थाका प्रभाव पड़ चुका था। उनके लम्बे बाल लगभग श्वेत हो चुके थे। तथा उसकी पुरानी और घिसी हुई उरदी महारानी ऐनके समय की याद दिलाती थी, और उसका संभाषण जर्मन ढंगका था। मैंने उन्हें अपने पिताका पत्र दिया, पिताका नाम सुनकर, बड़ी उत्सुकता और आतुरता भरी दृष्टिसे जनरलने मुझे देखा, और कहा,—

"तुम ऐण्ड्री पीट्रोविचके पुत्र हो! ऐण्ड्री पीट्रोविच तुम्हारी सी वयसके थे, यह अभी कलकी सी बात है; और आज तुम्हारे जैसे सुन्दर जवानके पिता हैं, वाहरे, समय।"

उन्होंने पत्र खोला, और अर्द्धोच्चारित स्वरमें, अपने ढङ्गसे टीका-टिप्पणी करते हुये उसे पढ़ने लगे,—

"श्रद्धेय महाशय, आइवन कार्लोविच,

'मैं आशा करता हूं कि हिज़ एक्सेलेन्सी'—इस लम्बी चौड़ी प्रशस्तिकी क्या आवश्यकता थी? छिः उन्हें यह सब लिखते हुये संकोच भी नहीं हुआ? यह ठीक है कि, लोकव्यवहारके अनुसार प्रशस्ति लिखना पड़ती है, पर, कहां? एक पुराने मित्रके लिये?—'माननीय मुझे भूले न होंगे,'—हूं!—'और वे दिन याद होंगे जब लेट फील्डमार्शल मूनके साथ—के समरस्थलमें —कैरोलिन भी।'—ओहो, पुरानी बात उन्हें आज भी याद है? 'अच्छा, अब मैं अपने अभिप्रायकी ओर आता हूं, मैं अपनी

आशाओंके केन्द्र, अपने प्यारे पुत्र पीटरको आपके पास भेजता हूं'—हूं !—'Hold him with hedgehog mittens'—यह Hedgehog mittens क्या है ? जान पड़ता है कि यह कोई रूसी कहावत है।—मेरी ओर मुड़ कर उन्होंने कहा,—

"Hold him with hedgehog mittens—से क्या तात्पर्य्य है ?"

मैंने उत्तर दिया,—

"इसका तात्पर्य्य है कि, जहाँ तक हो सके अपराधों पर दृष्टि न डाली जाय, दयालुता पूर्वक सिखलाया जाय और जहाँ-तक सम्भव हो, स्वाधीनता दी जाय।"

"हाँ ! अब मैं समझा—'और उसे अधिक स्वाधीनता न दीजियेगा।'—नहीं, तब तो स्पष्ट है कि, Hedgehog mittens का यह तात्पर्य्य नहीं है।—'पत्रके साथ पासपोर्ट भी भेजता हूं।' तब वह कहां है ? ओ, यह है—'उसे सेमेनोवस्की रेजीमेण्टमें भरती करा दीजिये।'—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, मैं सब कुछ करनेको तैयार हूं।—'अन्तमें एक घनिष्ट मित्र और सहवासीके रूपमें मेरा प्रेम-मिलन स्वीकार कीजिये।'—अहहाह ! अब अपने मुख्य स्वरूपमें आये। आदि, इत्यादि।

पत्र समाप्त हुआ, पत्र और पासपोर्ट रखकर जनरलने मुझसे कहा,—

"मैं प्रत्येक बातकी उचित व्यवस्था करूंगा। तुम सेनामें अफसरके पदपर नियुक्त होगे। तुम कल ही बैलोगोर्स्क दुर्गकी

यात्रा करो, जिसमें तुम्हारा समय व्यर्थ न जाय। वहां तुम कप्तान माइरोनाफके अधीन रहोगे। वह एक सज्जन और चरित्रशील व्यक्ति हैं। तुम वहाँ वास्तविक सैनिक-सेवा सीखोगे और समझोगे कि, सैनिक शासन क्या वस्तु है? ओरनबर्ग तुम्हारे लिये उपयुक्त स्थान नहीं है, क्योंकि, यहां तुमको स्वयं कुछ करके सीखनेका अवसर न मिलेगा। मनोविनोदकी चाट नवयुवकके लिये बड़ी हानिकर वस्तु है। अच्छा आज भोजन हमारे साथ करना।"

मैंने अपने जी में सोचा,—

"यह तो बड़ा बुरा हुआ, मैं तो जन्मसे सारजण्ट पैदा हुआ था, पर, देखता हूं कि, उससे मुझे कोई लाभ न हुआ।——सेना! किरघीज कैसाक्स-स्टेप्सके पास वह भयङ्कर सुनसान दुर्ग!"

ऐण्ड्री कार्लोविच और उसके पुराने सहकारीके साथ मैंने खाना खाया। खानेके प्रबन्धमें यथेष्ट मितव्ययिता थी और मेरा विश्वास है कि यदा-कदा एक नये मेहमानकी ख़ातिरदारीसे बचनेका विचार भी मुझे इतना शीघ्र सेनामें भेज देनेका एक कारण था।

दूसरे दिन मैं जनरलसे विदा होकर अपने निर्दिष्ट स्थानकी ओर रवाना हुआ।

तीसरा परिच्छेद

दुर्ग।

बैलोगोर्स्क दुर्ग, ओरनबर्गसे लगभग सत्ताइस मील दूर था। प्रसिद्ध यूरालनदकी सहायक सरिता येककी तटस्थ ढालू भूमिमें होकर रास्ता था। सरिताका जल अभी जमा नहीं था, हिमवेष्टित तटोंके बीचमें तरङ्गमालाका शिथिल उत्थान-पतन विवर्णता और उदासीनताका चित्र खींच रहा था। इसके बाद ही किरगिस भू-पटल फैला हुआ था। मेरे विचार, शुष्क और नीरस थे। सैनिक जीवनमें मेरे लिए कोई प्रलोभन नहीं था। मैंने अपने प्रधान, कप्तान माइरोनाफकी कल्पना मूर्त्ति चित्रित करनेकी चेष्टा की; और मैंने उन्हें एक तीव्र स्वभावके वृद्ध व्यक्तिके रूपमें चित्रित किया, जो अपने कर्त्तव्यके अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता और जो एक छोटेसे अपराध पर भी क़ैद कर सकता था।

सूर्य्य डूब रहा था, अँधेरा हो चला था, मैंने गाड़ीवानसे पूछा,—

"दुर्ग अभी कितनी दूर है?"

उसने उत्तर दिया,—

"अब दूर नहीं है, शीघ्र ही सामने देख पड़ेगा।"

मैं बड़ी उकताहटके साथ सामने देखने लगा। मैंने सोचा था कि, अब शीघ्र ही ऊंचे-ऊंचे शिखर और विशाल प्राचीर दिखाई देंगे किन्तु, वहाँ यह सब कुछ नहीं था। सामने एक छोटा सा गांव था, जिसकी चारो ओर लकड़ीका घेरा बना था। एक ओर सूखी घासके बड़े बड़े तीन चार ढेर थे। उन ढेरोंके प्रायः आधे भाग पर बर्फकी सफेद चादर बिछी थी। दूसरी ओर एक पुरानी हवाकी चक्की थी जो बेकार खड़ी थी। मैंने गाड़ीवानसे आश्चर्य्यके साथ पूछा,—

"हां, तो दुर्ग कहां है?"

गांवकी ओर अंगुली उठाकर उसने कहा,—

"यही सामने तो है।"

उसका उत्तर पूरा होनेके साथ ही हम लोग उस काष्ठ-प्राचीरके तोरण द्वार पर पहुंचे। वहाँ एक तोप रखी थी। गलियां छोटे छोटे झोपड़े, टेढ़ी-मेढ़ी और सँकरी थीं। मैंने कमांडेण्टके स्थान पर जानेकी इच्छा प्रकट की और क्षण भरमें गाड़ी एक छोटेसे लकड़ीके घरके सामने जा लगी जो साधारण भूमिसे कुछ ऊंचे पर बना हुआ था। पास ही 'गिरजा' था वह भी लकड़ी ही का था।

मैं गाड़ीसे उतरा और बाहरी बैठकमें गया। वहां एक वृद्ध महाशय बैठे मिले। वे अपने हरे रंगके फटे कोटमें नीले रंगका

पैवन्द लगा रहे थे। मैंने उनसे कमानडेण्टको अपने आनेकी सूचना देनेको कहा,—

"जाओ बेटे, भीतर चले जाओ, वे वहीं हैं।"

मैं भीतर गया। कमरा स्वच्छ और पुराने ढङ्गसे सजा हुआ था। कमरेमें एक ओर खानेके बर्तन रखे थे और दीवाल पर एक डिप्लोमा टंगा हुआ था। डिप्लोमाका चौखटा चमकदार और सुन्दर था।

खिड़कीके पास एक वृद्धा बैठी एक एकाक्ष बूढ़े मनुष्यकी सहायतासे, जो अफसरोंकी-सी उरदी पहने हुए था, डोरा सुलझा रही थी। उसने मुझसे पूछा,—

"कहिये, आप कैसे आये?"

मैंने उत्तरमें कहा कि, मैं यहाँ सेनामें भरती होने आया हूं। यह कहकर मैं उस बृद्धाके सहायक उस एकाक्ष सिपाहीकी ओर मुड़ा; मैंने उसे ही कमांडेंट समझा। किन्तु वृद्धाने रोककर कहा,—

"आइवन कौजमिच घरमें नहीं हैं। वे फादर जिरेसिमसे मिलने गये हैं। पर, कोई बात नहीं, मैं उनकी पत्नी हूं।"

उसने एक दासीको पुकारा और उससे कहा कि, अर्दलीको बुलाओ। एकाक्ष वृद्धने बड़ी उत्सुकताके साथ मेरी ओर देखकर पूछा,—

"आप किस सेनामें भरती होने आये हैं?"

मैंने समुचित उत्तर देकर उसकी उत्सुकता निवारण की।

उसने फिर पूछा—"आपने गारद (Guards) को छोड़कर सेना क्यों पसन्द की ?"

मैंने कहा,—"अधिकारियोंकी इच्छा।"

"संभवतः गारदके अफसरोंके उपयुक्त व्यवहारकी कमीके कारण ही अधिकारियोंने ऐसा निश्चय किया होगा"—उस अजेय प्रश्नकर्त्ताने फिर कहा।

कप्तानकी पत्नीने वृद्धको रोककर कहा,—

"भाड़में जाय तुम्हारी व्यर्थकी बकवास। यह बिचारे यात्रासे थके-थकाये आ रहे हैं, यह इस समय तुम्हारी बकबक सुनें या पहले अपना सामान ठीकठिकाने रखें और कुछ आराम करें !" फिर, मुझे सम्बोधित करके कहा,—

"आज यहाँ तुम्हारा आना प्रथम नहीं है, और यह अन्तिम भी न होगा। यहाँका जीवन बड़ा कठोर है किन्तु थोड़े ही दिनोंमें तुम उसे पसन्द करने लगोगे। पांच वर्ष पूर्व शेब्रिन अलेक्ज़ी आइवनिच एक हत्याके सम्बन्धमें यहाँ भेजा गया था। एक लेफ्टिनेण्टके साथ उसका झगड़ा हो गया जिसमें शेब्रिनने लेफ्टिनेण्टके तलवार भोंक दी थी। लड़ाई क्यों हुई थी यह ईश्वर जाने। मनुष्यने अभी पाप पर विजय नहीं पायी है।"

इसी समय अर्दली आ गया। यह अर्दली कासक जातिका नवयुवक था।

"मैक्सिमिच," कप्तानकी पत्नीने उससे कहा,—"ये एक नये

अफसर नियुक्त होकर आये हैं, इनको इनके कार्टरमें ले जाओ और इनके रहनेका ठीक-ठीक प्रबन्ध कर दो।"

अर्दलीने कहा,—

"जो आज्ञा, किन्तु, क्या ये आइवन पोलजाफके साथ न रह सकेंगे?"

कप्तानकी पत्नीने कहा,—

"तुम कैसे मूर्ख हो, मैक्सीमिच! पोलजाफके कमरेमें एक तो योंही भीड़ रहती है फिर, दूसरे हम लोग उससे बड़े हैं, इनको—"हाँ, तुम्हारा नाम क्या है?"—"पीटर ऐण्ड्रीविच।"

"जाओ, पीटर ऐण्ड्रीविचको साइमन कौजाफके यहां ले जाओ। उल्लूने अपने घोड़ेको मेरी फुलवाड़ीमें घुस जाने दिया; हाँ, मैक्सीमिच और तो सब ठीक है?"

"भगवानकी दयासे सब ठीक है, हाँ, कारपोरल प्रोखोराफ और उस्टीनिया पेगौलाइनामें सबेरे परस्पर झगड़ा हो गया था। झगड़ा एक टीन गरम पानीके लिये हुआ था।"

"आइवन इग्नेटिच," कप्तानकी पत्नीने एकाक्ष वृद्धकी ओर देख कर कहा,—"प्रोखोराफ और उस्टीनिया इन दोनोंमें कौन निर्दोष है और कौन अपराधी है यह निर्णय करो, और फिर दोनोंको दण्ड देना। हाँ, मैक्सीमिच, जाओ भगवान तुम्हारा भला करें। पीटर ऐण्ड्रीविच, मैक्सीमिचके साथ जाकर अपना कार्टर देख लो, और वहीं अपना सामान ठीक करके रखो।"

मैं प्रणाम करके वहाँसे चलता हुआ। जमादार मुझे एक

झोपड़ीमें ले गया जो नदीके ढालू तट पर दुर्गकी सीमाके पास थी। झोपड़ीके आधे भागमें साइमन कौजाफके परिवारके लोग रहते थे; दूसरा आधा भाग मुझे दिया गया। इस आधे भागमें एक कमरा था जो बीचसे दो भागोंमें बाँट दिया गया था।

सेवलिचने सामान ठीक-ठाक करना आरम्भ किया और मैं संकरी खिड़कीसे बाहरका दृश्य देखने लगा। भू-पटल दूरतक फैला हुआ था। एक ओर कुछ झोपड़े थे और गलीमें दो तीन मुरग़े घूम रहे थे। एक बृद्धा द्वार पर खड़ी, हाथमें एक कूँड़ा लिये सुअरोंको-बुला रही थी। वे अपनी घुरघुराहटसे उसको उत्तर दे रहे थे। ऐसा था वह स्थान जहां मैं अपनी चढ़ती जवानीके दिन बितानेको विवश किया गया था। मेरा जी बड़ा खिन्न हुआ। मैं खिड़की छोड़कर, सेवलिचकी प्रार्थनाको अनसुनी करके बिना कुछ खाये-पिये सोनेके लिये लेट रहा। सेवलिच दुःखी भावसे बड़बड़ाता रहा,—

"या भगवान ये बिना कुछ खाये ही सो रहे, कहीं जी अनमना हो जाय तो मालकिन मुझे क्या कहेंगी!"

प्रातःकाल अभी मैं ठीक-ठीक कपड़े भी न पहन पाया था कि एक नवयुवक अफसर मेरे कमरेमें आया। इसका क़द कुछ नाटा और चेहरा भद्दा था, यद्यपि उससे असाधारण प्रसन्नता झलक रही थी।

"क्षमा कीजियेगा," फ्रांसीसी भाषामें उसने कहा,—"बिना तकल्लुफ़ अकस्मात भेंट करने आनेके लिए। कल मैंने सुना कि,

आप आये हैं। मैं एक नवआगन्तुक व्यक्तिसे मिलनेकी उत्सुकता अधिक समय तक न दबा सका और चला आया। मैंने ऐसा क्यों किया? यह आप यहां कुछ दिन रहने पर समझेंगे।"

मैंने अनुमान किया कि, कदाचित यह वही अफसर है, जो लेफ्टिनेण्ट पर आक्रमण करनेके कारण गारदसे निकाल दिया गया है। हम लोगोंमें शीघ्र ही परिचय हो गया। शेब्रिन मूर्ख नहीं था, उसकी बातचीत चातुर्यपूर्ण और आकर्षक थी। उसने बड़े सजीव ढंगसे कमाण्डेण्ट, उसके परिवार तथा उसकी मंडलीके सम्बन्धमें जिनके बीचमें अब मुझे अपना जीवन बिताना था, अनेक ज्ञातव्य बातें बताईं। उसकी बातें सुनकर मैं खूब प्रसन्न हो कर हँस रहा था। इसी समय वेसिलाइसा इगोरोवनाकी ओरसे मुझे भोजनके लिये आमंत्रित करनेको वही वृद्ध सैनिक जो मेरे आनेके प्रथम दिन कमाण्डेण्टके बरामदेमें बैठा उरदी मरम्मत कर रहा था, आया। शेब्रिनने भी मेरे साथ चलनेका विचार प्रगट किया।"

कमाण्डेण्टके घरके पास पहुंचने पर मैंने देखा कि, लगभग बीसके बृद्ध सैनिक कमाण्डण्टकी ओर मुख किये एक क़तारमें खड़े थे। कमाण्डेण्ट लम्बे क़दके एक वृद्ध व्यक्ति थे; हमें देखते ही वे हमारी ओर बढ़े और मुझसे कुछ प्रेमपूर्ण बातें करके फिर 'ड्रिल' कराने लगे।

ड्रिल देखनेके लिये हम रुकना चाहते थे पर, उन्होंने हमें वेसिलाइसा इगोरोवनाके पास जानेका अनुरोध किया और

शीघ्र ही स्वयं भी वहीं आनेका वचन देते हुए उन्होंने यह भी कहा कि इस 'ड्रिलमें' तुम्हारे देखने योग्य कोई विशेष बात नहीं है।

वेसिलाइसा इगोरोवनाने हार्दिक प्रसन्नता और सादगीसे हमारा स्वागत किया और मेरे साथ ऐसे ढङ्गसे व्यवहार किया मानों मुझसे सदाका परिचय हो। दस्तरख़ान लगवा कर उन्होंने कहा,—

"आइवन कूज़मिच, आज क्यों इतनी देर लगा रहे हैं? पलाशका, जा और मालिकसे खानेके लिये कह आ—हाँ, मेरी कहां है?"

उसी-समय कमरेमें एक अष्ट दशवर्षीया बालिकाने प्रवेश किया। उसका चेहरा गोल और गुलाबी, और बाल हलके भूरे रङ्गके थे, जो ख़ूब सफ़ाईके साथ संवारकर पीछे लटकाये हुए थे। वह प्रथम दृष्टिमें मेरे हृदय पर कोई सुन्दर प्रभाव न डाल सकी; मैंने उसे पक्षपातका ऐनक लगाकर देखा, क्योंकि शेब्रिनने मुझे आगे ही बता दिया था कि कप्तान-कन्या मेरी पूरी उल्लू है। वह एक ओर बैठकर कुछ सीने लगी। इसी समय गोबीका शोरबा लाकर मेजपर रखा गया। वेसिलाइसा इगोरावनाने पतिको न देखकर, यह कह कर पलाशकाको दूसरी बार भेजा,—

"अपने मालिकसे कहो कि, पाहुन राह देख रहे हैं। शोरबा ठंढा हो रहा है, ईश्वरकी कृपासे ड्रिल कहीं भाग न जायगी, उन्हें गला फाड़ कर चिल्लानेके लिये यथेष्ट समय मिलेगा!"

कप्तान आ गये, साथमें एकाक्ष इग्नेटिच भी था। कप्तानकी पत्नीने कहा,—

"इसका क्या अर्थ है? लोग यहाँ तुम्हारी राह देख रहे हैं, खाना ठण्ढा हो रहा है और तुम इतनी देरसे आ ही रहे हो!"

"वेसिलाइसा इगोरोवना, मैं आ तो गया, मैं ड्यूटी पर था, सिपाहियोंको ड्रिल सिखा रहा था।"

वेसिलाइसाने उत्तर दिया,—

"व्यर्थ! तुम्हारा उन्हें ड्रिल सिखान बिलकुल व्यर्थ है। वे सेनाके उपयुक्त नहीं और तुम खुद उसके संबन्धमें कुछ नहीं समझते। इससे तो यह अच्छा होगा कि, घरमें बैठकर ईश्वरकी उपासना करो। प्रिय अतिथिगण, कृपया टेबल पर बैठिए।"

हमलोग भोजन करने बैठ गये। वेसिलाइसा इगोरोवना एक मिनटके लिये भी चुप न हुई, कोई न कोई प्रसङ्ग बराबर छिड़ा हुआ था, मुझसे न जाने कितने प्रश्न किये—तुम्हारे मातापिता कौन हैं? जीवित हैं? कहाँ रहते हैं? आर्थिक अवस्था कैसी है? और मेरे इस उत्तर पर कि, मेरे पिता तीन सौ असामियोंके स्वामी हैं, उन्होंने आश्चर्य से कहा,—

"सचमुच! संसारमें कुछ लोगोंको धनी होनेका सौभाग्य प्राप्त है, किन्तु हमारे घर तो यही एक दासी पलाशका है, पर, ईश्वरकी कृपासे हमारा काम अच्छी तरह चल जाता है। हम लोगोंको केवल एक चिन्ता है, और वह मेरीके विवाहकी। मेरी एक पसन्द करने योग्य लड़की है। परन्तु दहेजके लिए उसके पास प्रायः कुछ नहीं

है। यदि उसे कोई वर मिल गया तो अच्छा ही है, नहीं तो उसे आजन्म कुंआरी ही रहना पड़ेगा।"

मैंने एक दृष्टि मेरी पर डाली लाज और सङ्कोचकी लालिमा उसके चेहरे पर छायी हुई थी और आंसु टपक रहे थे। मुझे उसके प्रति करुणा हो आई और मैंने बातचीतके प्रवाहको दूसरी ओर मोड़ दिया।

"मैंने सुना है," मैंने कहा, "कि बाशकिर लोग इस दुर्ग पर आक्रमण करने वाले हैं।"

आइवन कौजमिचने पूछा,—

"तुमने किससे सुना?"

मैंने उत्तर दिया,—

"ओरनबर्गमें लोग बातें कर रहे थे।"

आइवन कौजमिजने कहा,—

"सब गप है। एक युग बीत गया, हमने उनके सम्बन्धकी कोई चर्चा नहीं सुनी। बाशकिर डरपोक जाति है और किरगिसोंको सबक सिखाया जा चुका है। वे कोई आक्रमण करनेका साहस नहीं कर सकते, और यदि वे आक्रमण करेंगे भी तो कोई चिन्ताकी बात नहीं हैं। हमलोग इस बार उनको ऐसा सबक सिखायेंगे कि, वे दस वर्षतक फिर आक्रमणका साहस न करेंगे।"

मैंने वेसिलाइसा इगोरोवनाको सम्बोधित करके कहा,—

"ऐसे अरक्षित दुर्गमें रहते हुये आपको भय नहीं लगता।"

उन्होंने उत्तर दिया,—

अभ्याससे सब सहन हो जाता है; हमलोगोंको यहां आये बीस वर्ष हो गये। आरम्भमें इन काफ़िरोंको देखकर मुझे कितना भय लगता था यह इस समय तुम अनुमान भी नहीं कर सकते। उन दिनों मैं जब कभी इनकी रोएंदार टोपी देख पाती या इनकी चिल्लाहट सुन पाती तो मेरे प्राण उछल कर ओठों पर आ जाते थे, परन्तु अब यहां रहते रहते ऐसा अभ्यास हो गया है कि यदि ये इस दुर्गको आकर घेर भी लें तो मैं न घबराऊं।

शेब्रिनने कहा,—"वेसिलाइसा इगोरावना बड़ी निर्भीक महिला हैं, मेरे इस कथनका समर्थन खुद आइवान कूजमिच कर सकते हैं।"

आइवन कौजमिचने कहा,—हां, मैं मानता हूं, मेरी बीबी बुज़दिल नहीं है।

मैंने वेसिलाइसा इगोरावनाकी ओर देखकर कहा,—

"और, क्या मेरीमें भी वैसा ही साहस है जैसा कि आपमें?"

उत्तर मिला,—

"साहस और मेरीमें? नहीं महाशय, यह बड़ी भीरु है! बन्दूककी आवाज सुनकर बेतरह कांप उठती है। दो वर्ष हुये, मेरे नाम-दिनके उपलक्षमें आइवन कौजमिचने तोप छुड़वायी थी; उसके धड़ाकेसे यह इतना डर गई कि मरते मरते बची! तबसे कभी तोप नहीं छुड़ाई गई।

भोजन हो चुका; मैं शेब्रिनके क्वार्टरमें चला आया और सन्ध्या तक वहीं रहा।

चौथा परिच्छेद

सम्मान-रक्षार्थ संग्राम (Duel)

लोगोर्स्क दुर्गमें रहते हुये कई सप्ताह बीत गये। मेरा उचाट मन अब धीरे-धीरे लगने लगा। कप्तानके घरमें मैं अब पारिवारिक-व्यक्तिकी भाँति गिना जाने लगा। पति, पत्नी दोनों ही बड़े सज्जन थे। आइवन कौजमिच क्रमशः इस पद तक पहुंचे थे। उनका जीवन सरल और अकृत्रिम तथा व्यवहार अत्यन्त सत्य-परायण और सदाचारयुक्त था। पतिपत्नीमें अच्छी निभती थी। वेसिलाइस इगोरोवना घर गृहस्थीके कामोंसे छुट्टी पाकर दुर्गके शासनमें हाथ बंटाती थी। मेरी भी अब मुझसे संकोच नहीं करती थी। वह समझदार और सहृदय बालिका थी। एक अज्ञात ढङ्गसे इस परिवारसे मेरा अनुराग बढ़ गया, यहां तक कि उस एकाक्ष सैनिक इग्नेटिचके प्रति भी मेरा प्रेम हो गया। शेब्रिन कहता था कि वेसिलाइसासे इग्नेटिचकी अनुचित अनिष्टता थी, यद्यपि इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था।

मेरा पद बढ़ा दिया गया, मैं सैनिकसे अफ़सर बना दिया

गया। मेरा कर्तव्य-कार्य्य भारी न था। इस ईश्वर-रक्षित दुर्गमें परेड, ड्रिल आदि कुछ नहीं था। आइवन कौजमिच स्वयं कभी-कभी सैनिकोंको ड्रिल कराते थे, किन्तु, केवल मनबहलावके लिये। वे दायें-बायें घुमाने और इधर उधर थोड़ा बहुत चलानेसे कदाचित ही कभी आगे बढ़ते थे। शेब्रिनके पास कुछ फ्रेञ्च भाषाकी पुस्तकें थीं। मैंने उन पुस्तकोंको पढ़ना आरम्भ किया, मेरे हृदयमें साहित्य-परिशीलनकी आकांक्षा जागृत हो गई। सवेरे उठकर मैं कुछ देर पढ़ता, कुछ अनुवाद करता और फिर कविता लिखता। भोजन मैं प्रायः प्रति दिन कप्तानके घर पर ही करता और भोजन करके आराम भी वहीं करता था। सन्ध्या समय कभी-कभी फादर जिरेमिस अपनी पत्नी अकोलाइना पम्भाइलोवनाके साथ आ जाते। अकोलाइना हमारे पड़ोसमें सबसे अधिक गप्पी थी। शेब्रिनसे मैं प्रायः प्रति दिन मिलता था, पर, अब उसकी भाषण शैली दिन-दिन मुझे अप्रिय और कर्ण-कटु भासित होने लगी। कप्तानके परिवार पर उसके क्षुद्रता पूर्ण व्यंग्य, विशेष कर मेरी सम्बन्धी उसके अनुचित आक्षेप मुझे बहुत खटकने लगे।

बाशकिरोंने विद्रोह नहीं किया। हमारे दुर्गके चारों ओर शान्तिका साम्राज्य था। किन्तु, यह शान्ति अचानक गृह-युद्धके कारण भङ्ग हो गई।

मैंने जैसा पीछे कहा है, मेरा समय साहित्य परिशीलनमें अधिक जाता था। उस समयके अनुसार मेरे निबन्ध अच्छे ही

होते थे और कुछ वर्षोंके बाद अलेक्जेण्डर पीट्रोविच गौमरोकाफ तकने, जो अपने समयके एक प्रसिद्ध नाट्यकार थे, मेरे लेखोंकी बड़ी प्रशंसा की थी। एक दिन मैंने बड़ी उमङ्गके साथ एक छोटेसे सङ्गीतकी रचना की। प्रायः रचयिता यह जाननेके बहाने कि जिन भावोंको व्यक्त करनेकी चेष्टा की गई है वे भाव कहाँ तक व्यक्त हो सके हैं—अपनी रचना लोगोंको सुनाया करते हैं। मैंने भी अपनी रचना शेब्रिनको सुनाना चाही क्योंकि, दुर्गमें शेब्रिन ही एक साहित्य-मर्मज्ञ था। एक छोटी सी प्रस्तावना करके मने अपने जेबसे कागज निकाला और शेब्रिनको सङ्गीत सुनाना आरम्भ किया।

सुनानेके बाद मैंने शेब्रिनसे पूछा कि, कहो भाई रचना कैसी है? मैंने समझा था कि, शेब्रिन प्रशंसा किये बिना न रह सकेगा। किन्तु, मुझे गहरी निराशा हुई। यद्यपि शेब्रिन सामान्यतः विचारशील और सुशील मनुष्य था किन्तु, मेरे प्रश्नके उत्तरमें बड़ी दृढ़ताके साथ उसने कहा,—

"रचना बिलकुल रद्दी है।"

मैंने अपनी आन्तरिक अप्रसन्नताको छिपानेकी चेष्टा करते हुये पूछा,—

"क्यों?"

उसने मेरी रचना अपने हाथमें ले ली और बड़ी निश्शीलताके साथ प्रत्येक चरण और प्रत्येक शब्दकी धज्जियां उड़ाना आरम्भ किया। उसका ढंग ऐसा व्यंग्य-परिहास पूर्ण था, कि मैं अधिक

न सह सका। अतः मैंने उसके हाथसे कागज छीन लिया और कहा कि, मैं अब कभी तुमको अपनी कोई रचना न दिखाऊंगा। शेब्रिन मेरी इस धमकी पर खिलखिला कर हंस पड़ा।

"अच्छी बात है," शेब्रिनने कहा, "मैं देखूंगा कि, तुम अपने वचनका प्रतिपाल कहां तक कर सकते हो! एक कविको अपनी रचना सुनानेके लिये किसी सुननेवालेकी वैसी ही आवश्यकता रहती है जैसी कि आइवन कौजमिचको भोजनके पूर्व शराबके बोतल की। और हां, यह मेरी कौन है, जिसके लिये तुमने अपनी प्रेमोन्मत्तता और हार्दिक-वेदना प्रकट की है? कसान-कन्या मेरी आइवनोवना तो नहीं?"

मैंने तेवरी चढ़ाकर कहा,—

"तुम्हें इससे क्या? कोई हो। न मैं तुम्हारी सम्मति चाहता हूं और न अनुमान!"

शेब्रिनने मुझको खिझाते हुए उत्तर दिया,—

"वाह रे मेरे घमंडी कवि और दूरदर्शी प्रेमिक! किन्तु यदि तुम सफलता चाहते हो तो एक मित्रका उपदेश सुनो। कविता करनेमें समय न गंवावो, कवितासे काम न चलेगा!"

"तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

"सुनो, यदि तुम मेरीसे अन्धेरेमें मिलना चाहते हो तो कविता न बनाकर एक जोड़ी बालियां उसकी नज़र करो।"

मेरा रक्त खौल उठा, भड़कते हुये क्रोधको बड़ी कठिनतासे रोककर मैंने कहा,—

"तुम उसके लिये ऐसा क्यों कह रहे हो ?"

ईसानी मुस्कुराहटके साथ उसने उत्तर दिया,—

"इसलिये कि, उसके स्वभाव और उसके व्यवहार-वर्त्तावका मुझे अनुभव है।"

मैं क्रोधसे तड़पकर चिल्ला पड़ा,—

"तुम झूठे और शोहदे हो, झूठ बोलनेमें तुमको लज्जा नहीं आता ! निल्लेज्ज ! बदमाश !"

शेब्रिनका रङ्ग बदल गया, उसने कहा,—

"बस, मैं तुमको सावधान किये देता हूं, मैं तुमसे अपने इस अपमानका बदला लूंगा।"

मैंने अतिशय प्रसन्न होकर कहा,—

"शौकसे ! और जब इच्छा हो !"

मुझे उस समय इतना क्रोध था कि, मैं शेब्रिनके टुकड़े-टुकड़े कर डालनेको भी तैयार था। तत्काल मैं आइवन इग्नेटिचके पास आया। वह सुई-तागा लिये कप्तानकी पत्नीकी आज्ञासे कुकुर-छतोंको मालाके आकारमें इसलिये गूंथ रहा था कि, सुखाकर जाड़ेके लिये रख लिये जांय। मुझको देखते ही उसने कहा,—

"भैय्या, पीटर ऐण्ड्रियच ! कुशल तो है, कैसे चले ?"

शेब्रिनके झगड़ेको मैंने संक्षेपमें बतलाया, और कहा कि, इस द्वन्दमें मैं तुमको अपना साक्षी बनाना चाहता हूं।

आइवन इग्नेटिचने मेरी बातोंको बड़े ध्यानसे सुना, सुनकर उसने कहा,—

"क्या तुम्हारे निपटनेका यह अर्थ है कि, तुम शेब्रिनको मार डालना चाहते हो? और, सो भी मेरे सामने?"

"हां, वास्तवमें मेरा निश्चय ऐसा ही कुछ है।"

"ईश्वरके लिये सोचो पीटर ऐण्ड्रियच! यह तुमने क्या निश्चय किया है। माना कि, शेब्रिनसे तुम्हारा झगड़ा हुआ, परन्तु, क्या झगड़ेका परिणाम यह होना चाहिये कि एकके मत्थे जाय। उसने तुम्हारा अपमान किया और तुमने उसका। चांटेका बदला थप्पड़ होजाय तो पछतावा और रोष किस बातका! अब तुम दोनोंको अपने अपने काममें लगना चाहिये और मनका मैल साफकर फिर मेल कर लेना चाहिये।.....मैं तुमसे पूछता हूं कि, क्या अपने पड़ोसीकी हत्या करना उचित है? और फिर, यही कहां निश्चय है कि, द्वन्द युद्धमें तुम्हारी ही विजय होगी। एक दशा तो यह हो सकती है कि, तुम उस पर विजय पा जाओ और उसे मार डालो—ईश्वर उसकी रक्षा करे! किन्तु दूसरी दशा इसके प्रतिकूल भी तो हो सकती है; और तब?"

दूरदर्शी लेफ्टिनेण्ट आइवन इग्नेटिचने उचित ढङ्गसे समझाया किन्तु मेरे ऊपर उसकी बातोंका कुछ भी प्रभाव न पड़ा; मैं अपने निश्चय पर दृढ़ बना रहा। उसने फिर कहा,—

"तुम्हारी जैसी इच्छा हो करो, पर, मैं तुम्हारे बीचमें क्यों पड़ने लगा? भगवान! तुम्हारी माया! यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि, लोग आपसमें लड़ मरते हैं। मैं तुर्कों और खीर्डोंसे लड़कर

सब प्रकारका युद्ध देख चुका हूं, मुझे आपसकी लड़ाई नहीं देखनी है।"

जहांतक अच्छे ढंगसे हो सका मैंने उसको द्वन्द युद्धके साक्षीका कर्त्तव्य समझानेकी चेष्टा की पर, उसने मेरी एक न सुनी और कहा,—

"तुम अपनी इच्छाके लिये स्वाधीन हो, पर, यह घटना जब मुझे विदित हो चुकी है और मैं यह जान गया हूं कि, दुर्गमें शीघ्र ही अशान्ति मचने वाली है तो सेनाके नियमोंके अनुसार मेरा कर्त्तव्य है कि, मैंने जो कुछ जाना है उसकी ख़बर कप्तानको दे दूं और उससे अनुरोध करूं कि, वे उचित उपायका अवलम्बन करें।"

मैं बड़ा भयभीत हुआ, और आइवन इग्नेटिचसे विनय करने लगा कि, वह कप्तानसे इसकी चर्चा न करे। बड़ी कठिनाईसे आइवन इग्नेटिच राज़ी हुआ और कप्तानसे इस घटनाका ज़िक्र न करनेका वचन दिया।

सदाकी भांति मैंने सन्ध्याका समय कप्तानके परिवारमें बिताया। मैंने कृत्रिम उत्साह और उमंगसे इस ढङ्ग पर समय काटना चाहा कि, किसीको मेरे ऊपर सन्देह न हो और मुझसे कोई अनुपयुक्त प्रश्न न पूछा जाय; किन्तु मैं यह निस्संकोच स्वीकार करता हूं कि उस समय मेरे मन और भावोंमें वह शान्ति और विश्वास नहीं था जिसका मेरी सी दशामें पड़े हुए व्यक्ति घमंड किया करते हैं। उस समय मेरा व्यवहार अन्य समयोंकी अपेक्षा अधिक कोमल और भावपूर्ण था और मेरीको देखकर मुझे

असाधारण आनन्द प्राप्त हो रहा था। इस विचारने कि कदाचित् आजकी मुलाक़ात ही अन्तिम मुलाक़ात हो, उसके सौन्दर्यको मेरी नज़रोंमें और भी अधिक प्रभावोत्पादक बना दिया था। शेव्रिन भी मेरी ही भांति बनावटसे काम ले रहा था। मैंने उसको अलग ले जाकर आइवन इग्नेटिचसे मुझसे जो वार्त्तालाप हुआ था, बतलाया। उसने रूखे स्वरसे कहा,—

"तो हम लोगोंको मध्यस्थोंकी आवश्यकता ही क्या है? बिना उनकी सहायताके भी हम निपट सकते हैं।"

अन्तमें निश्चित हुआ कि, दुर्गके पास सूखी घासके जो बड़े-बड़े पहाड़ बने हैं उन्हींके पीछे कल सबेरे सात बजे जाकर हम-लोग निपट लें।

हमलोग ज़ाहिरा जिस मिलनसारीसे बातें कर रहे थे उसे देखकर आइवन इग्नेटिच अत्यधिक प्रसन्न हुआ और मुझे भय हुआ कि कहीं अपनी प्रसन्नताकी धुनमें वह हमारा भेद न खोल दे।

"तुमको यह पहले ही कर लेना चाहिए था," सन्तोष भरी दृष्टिसे मेरी ओर देखकर वह बोला,—"एक बुरा मेल अच्छे झगड़ेसे कहीं अधिक अच्छा है।"

कप्तानकी पत्नीने जो दूर बैठी ताश खेल रही थीं—पुकार कर कहा,—"आइवन इग्नेटिच! क्या बात है? तुमने अभी क्या कहा? हमने नहीं सुना।"

मेरे मुंह पर असन्तोषकी रेखायें फूटती देखकर आइवन इग्ने-

टिचको अपनी प्रतिज्ञा स्मरण हो आई, वह घबरा उठा और कुछ उत्तर न दे सका। शेव्रिनने उसकी सहायता की और शीघ्रताके साथ कहा,—

"आइवन इग्नेटिचको यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि, हम-लोगोंमें मेल हो गया।"

कप्तान-पत्नीने कहा,—

"तुम्हारा झगड़ा किससे हो गया था?"

"पीटर ऐण्ड्रयचसे कुछ कहा सुनी हो गई थी।"

"किस लिये?"

"एक छोटी सी बात पर, एक कविताको लेकर।"

"क्या खूब! एक कविताके पीछे तुम दोनों लड़ पड़े! बताओ सब घटना—क्या हुआ था?"

"घटना यह हुई कि, पीटर ऐण्ड्रयचने कुछ दिन हुये, एक गाना बनाया था, जिसे आज सवेरे ये मुझे सुनाने लगे, इधर मैं भी अपनी पसन्दका एक गाना गुनगुनाने लगा, जिसका मर्म यह था,—"कप्तानकी कन्या, आधी रातके बाद बाहर न निकला करो।" बस इसी पर तकरार हो गई। पीटर ऐण्ड्रयचको क्रोध आ गया, पर, अन्तमें उन्होंने इस बातको मान लिया कि, जो जिसके जी में आये, अपनी अपनी इच्छानुसार गाये। इस प्रकार झगड़ा समाप्त हो गया।"

शेव्रिनकी धृष्टता पर मुझे फिर क्रोध आ गया और मेरा रक्त खौल उठा; परन्तु, मेरे सिवाय उसके इस असद् इंगितको और

किसीने नहीं समझा, इसलिये किसीने इसपर अधिक ध्यान नहीं दिया। गीतसे बातचीत कवियों पर आ गई। कप्तानने कहा कि कवि लोग व्यर्थका बकवास करने वाले और पियक्कड़ होते हैं और मुझे कविताके फेरमें न पड़नेका परामर्श देते हुए कहा कि यह सैनिक नियमोंके विपरीत है और इससे कोई लाभ भी नहीं होता।

शेव्रिनकी उपस्थिति मेरे लिये असहनीय हो उठी। मैं कप्तान-से और उनके परिवारसे बिदा मांगकर अपने निवास स्थान पर चला आया। मैंने खूंटीसे अपनी तलवार उतार ली और उसकी धारकी परीक्षा की, फिर मैं सेवलिचसे यह कहकर कि, कल सवेरे ठीक सात बजे मुझे जगा देना, सोनेके लिये पलंग पर लेट रहा।

दूसरे दिन मैं ठीक समय पर, सूखी घासके टीलोंके पीछे जाकर शेव्रिनकी प्रतीक्षा करने लगा। कुछ ही देरमें शेव्रिन आता दिखलाई पड़ा। उसने आते ही कहा,—

"हम लोगोंको जल्दी करनी चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि कोई अचानक आपड़े और हमें लड़ता देखले।"

वास्केटको छोड़कर और कपड़े हमने उतार डाले और तलवार खींच ली। इसी समय आइवन इग्नेटिच पांच सिपाहियोंके साथ अकस्मात घासके टीलोंसे निकल कर मेरे सामने आ गया और हम दोनोंसे कप्तानके पास चलनेको कहा। मैं जी ही जी में झल्ला उठा पर, वश न था। सिपाहियोंने हम लोगोंको घेर लिया, हमलोग चुपचाप आइवन इग्नेटिचके पीछे हो लिए। आइवन इग्नेटिच अपनी कर्त्तव्य परायणता और सजगताका अनु

भव करता हुआ विजयोल्लासमें द्रुतगतिसे पैर बढ़ाता आगे आगे जा रहा था।

हमलोग कप्तानके घर पर पहुंच गए। आइवन इग्नेटिच किंवाड़ खोलकर, विजय सूचक स्वरमें पुकार उठा,—

"ये आ गए!"

वेसिलाइसा इगोरोवना हम लोगोंकी ओर आईं, और कहा,—

"मेरे प्यारे बच्चो! यह क्या? दुर्गमें हत्याकाण्ड मचानेकी क्या सूझी? आइवन कौजमिच इन दोनोंको इसी समय कैद कर दो! पीटर ऐण्ड्रियच और शेब्रिन, अपनी अपनी तलवार रख दो। पलाशका! दोनों तलवारोंको भंडारघरमें रख आ। पीटर ऐण्ड्रियच! हमें तुमसे यह आशा नहीं थी! तुमको अपनी इस कृति पर लज्जा नहीं आती? रहा शेब्रिन, सो, यह तो ऐसी कुकृतिका अभ्यासी है, नर-हत्याके लिये ही तो यह गारदसे निकाला गया था, इसको तो ईश्वर पर भी विश्वास नहीं है, क्या तुम भी उसी जैसे होना चाहते हो?"

आइवन कौजमिचने अपनी पत्नीकी बातोंको पुष्ट करते हुये कहा,—

"वेसीलाइसा ठीक कह रही हैं, द्वन्द युद्ध सैनिक नियमोंके बिलकुल विपरीत है।"

इस बीचमें पलाशकाने हमारी तलवारें भंडारघरमें पहुंचा दी थीं। मुझे हसी आ रही थी और शेब्रिन बड़ी गम्भीरतासे चुप खड़ा था,

"मैं आपके सम्मानका उचित ध्यान रखते हुये आपसे कहता हूं," उसने कप्तान-पत्नीको सम्बोधन कर कहा, "कि आप इस सम्बन्धमें कुछ न बोलिए, आइवन कौज़मिच पर छोड़ दीजिये, यह उनका काम है, आप जज न बनिये।"

कप्तानकी पत्नीने चिल्लाकर कहा,—

"क्या कहा शेब्रिन तुमने? पति और पत्नी क्या एक प्राण और एक शरीर नहीं होते? आइवन कौज़मिच क्या देख रहे हो, भेजो इनको कारागारमें, और वहां इनको केवल रोटी और जलपर तबतक रखो जबतक कि इनकी बुद्धि ठिकाने न आजाय। फादर जिरेमिससे कह दो कि वे इनके लिये प्रायश्चित्तकी व्यवस्था दें और ये परमात्मासे अपने अपराधोंकी क्षमा मागें और मनुष्योंके सामने पश्चात्ताप करें!"

आइवन कौज़मिच यह निश्चय न कर सके कि उन्हें क्या करना चाहिए। मेरीका रंग उतर गया था। धीरे-धीरे तूफान थँमा, कप्तानकी धर्मपत्नीका क्रोध शान्त हुआ, और उन्होंने हम दोनोंको गले मिलनेकी आज्ञा दी। पलाशकाने हमारी तलवारें हम लोगोंको लौटा दीं। हम दोनों पूरे मित्र बनकर कप्तानके घरसे विदा हुए। आइवन इग्नेटिच हम लोगोंके साथ आया। मैंने कुपित होकर उससे कहा—

"तुमको लज्जा नहीं आती? तुमने हमको वचन दिया था, और फिर भी कप्तानसे रिपोर्ट कर दी।

"ठीक है, हमने वचन दिया था। और, हमने उसका पालन

भी किया। आइवन कौजमिचसे हमने एक शब्द भी नहीं कहा। वेसिलाइसा इगोरोवनाने मुझसे सब कबुलवा लिया और उन्होंने बिना कप्तानसे कुछ कहे ही स्वयं यह प्रबन्ध किया। खैर, जो होना था, हो गया। यह विवाद इस प्रकार समाप्त हो गया यह अच्छा ही हुआ।"

यह कहकर आइवन इगनेटिच अपने घर चला गया, और शेव्रिन और मैं अकेला रह गया। मैंने शेव्रिनसे कहा,—

"हमलोगोंका समझौता इस प्रकार नहीं हो सकता।"

शेव्रिनने उत्तर दिया,—

"निश्चय नहीं, तुमने जो धृष्टता-पूर्ण व्यवहार मेरे साथ किया है उसका बदला तुम्हारा रक्त जबतक नहीं ले लेता, हमारे हृदयको शान्ति नहीं मिल सकती। पर, अब इस समय हमलोगोंपर कड़ी निगरानी रखी जायगी। इसलिये कुछ समयके लिये हमलोगोंको चुप हो जाना चाहिये।"

नित्यकी भांति मैं कप्तानके घर आया और मेरीके पास बैठ गया। आइवन कौजमिच घरमें नहीं थे। वेसिलाइसा इगोरोवना घरके प्रबन्धमें लगी हुई थीं। हम दोनोंमें धीरे-धीरे बातें होने लगीं। मेरीने नम्र और प्रेमपूर्ण, किन्तु व्यंग्य सूचक स्वरमें उस अशान्तिकी ओर संकेत किया जो शेव्रिन और मेरे झगड़ेके कारण होने वाली थी। उसने कहा,—

"मैंने तो जब सुना कि, तुम तलवार खींचकर लड़ने पर उद्यत हो चुके थे तो मेरे होश उड़ गये और मैं अनक़रीब अचेत हो

गई। भाई, आदमी भी कैसे अजीब होते हैं कि, एक शब्दके लिये जिसको वे दोही चार दिनमें बिलकुल भूल जा सकते हैं, मरने-मारने पर तयार हो जाते हैं! आनन्द, उमंग यहांतक कि जीवनका भी मोह त्याग देते हैं और जरा भी संकोच नहीं करते! किन्तु, मुझे विश्वास है कि, झगड़ा तुमने न आरम्भ किया होगा। निसन्देह, झगड़ेका आरम्भ शेब्रिनकी ओरसे हुआ होगा।"

"तुम यह कैसे सोच रही हो?"

"इसलिये कि, शेब्रिन व्यंग्य पूर्ण बातें करनेमें बड़ा अभ्यस्त है। मुझे शेब्रिन फूटी आंख भी नहीं भाता। मैं उससे घृणा करती हूं। किन्तु, प्रकटमें मैं उसे अप्रसन्न नहीं करना चाहती, क्योंकि वह मुझे बड़ा भयङ्कर और दुस्साहसी व्यक्ति जान पड़ता है।"

"किन्तु, मेरी! माना कि तुम उसे नहीं चाहती हो, किन्तु, वह तुमको चाहता है या नहीं, इस सम्बन्धमें तुम्हारी क्या धारणा है?"

मेरे इस प्रश्नपर उसके कपोलोंकी लालिमा गहरी हो गई, वह कुछ परेशान सी हो गई, बोली,—

"मेरी धारणा है कि, वह मुझे चाहता है।"

"यह कैसे जाना?"

"इसलिये कि, उसने मुझसे एकबार विवाहका प्रस्ताव किया था।"

"प्रस्ताव! प्रस्ताव किया था? कब?"

"गतवर्ष; तुम्हारे यहां आनेसे दो महीने पहिले।"

"तो क्या तुमने इनकार कर दिया ?"

"इनकार नहीं तो क्या ! यह ठीक है कि, शेब्रिन विद्वान, उत्तम कुल और धनी परिवारका है, पर क्या ऐसे स्वभावके मनुष्यके साथमें मेरा जीवन सुखसे बीत सकता ? नहीं, कभी नहीं।"

मेरीके शब्दोंने एक रहस्यका उद्घाटन कर दिया। अब मैं समझा कि, शेब्रिन क्यों इतनी निर्दयता और निःशीलताके साथ मेरिया आइवनोवनाकी निन्दा कर रहा था ? बहुत सम्भव है कि, उसने हम दोनोंके खिचांवको ताड़कर, हृदयमें अन्तर डालनेकी ठान ली हो। अब यह मालूम होनेपर कि मेरीके चरित्रके संबंधमें उसने जो शब्द कहे थे और जिसके लिए उससे मेरा झगड़ा हुआ था वह भद्दी और अश्लील दिल्लगी नहीं बल्कि सोची-समझी हुई निन्दा थी, मुझे उसके शब्द और भी अधिक घृणायोग्य प्रतीत हुए। शेब्रिनको उसकी इस उद्दण्डता और बर्बरताका फल चखानेके मेरे विचारमें और अधिक दृढ़ता आ गई। मैं अधीरताके साथ किसी उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षा करने लगा।

मुझे अधिक समय तक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। दूसरे ही दिन जब मैं अपने कमरेमें बैठा एक विषादपूर्ण संगीतकी रचना कर रहा था और अनुप्रास-अन्वेषणमें व्यस्त था, शेब्रिनने मेरी खिड़की खटखटाई। मैंने कलम रख दी, तलवार उठाली और उसके पास पहुंचा।

"हम लोग अब अपने जी की आग बुझानेमें क्यों देर कर

रहे हैं", शेव्रिनने कहा, "इस समय हमको कोई नहीं देख रहा है, आओ नदीकी ओर निकल चलें; वहां हमारे विचारोंमें कोई बाधा डालने न पहुंचेगा।"

हमलोग चुपचाप चल दिये और एक चक्करदार रास्तेसे उतरकर नदीके तटपर पहुंचे। मैंने अपनी तलवार खींची, शेव्रिनने भी अपनी तलवार निकाल ली। तलवार चलानेमें मेरी अपेक्षा शेव्रिन चतुर था किन्तु, मैं शरीरमें शेव्रिनसे हृष्टपुष्ट था और साहसमें भी उससे कहीं अधिक था क्योंकि, मासू बोप्रेने जो पहिले सैनिक सिपाही रह चुके थे, मुझे पटेबाजीके दो चार बढ़िया हाथ सिखलाये थे। शेव्रिनको विश्वास नहीं था कि मैं उसके लिये इतना भयङ्कर होऊंगा। बड़ी देरतक हमलोग एक दूसरेकी चेष्टा और सावधानी देखते रहे, कोई किसीको चोट न पहुंचा सका। अन्तमें शेव्रिन सुस्त पड़ा, मेरी उमंग बढ़ती गई, अब मेरे आक्रमणोंसे वह पीछे हटने लगा, यहांतक कि, वह नदीके जलके पास तक पहुंच गया। इसी समय किसीने मुझको जोरसे पुकारा, मैं दुचित्ता हो गया; मेरी आंखें उधर घूम गईं। मैंने देखा कि, सेवलिच बड़े वेगके साथ दौड़ता हुआ मेरी ओर आ रहा है।.....इसी समय मुझे जान पड़ा कि, मेरी छातीमें, दाहिने कंधेके नीचे तलवार पैठ गई, मैं धरती पर गिरकर अचेत हो गया।

पांचवां परिच्छेद

प्रेम

चेतना लौटनेपर कुछ देर तक तो मेरी समझमें न आया कि, मुझे क्या हो गया था। मैं एक अपरिचित कमरेमें एक खाट पर पड़ा था और अत्यन्त कमज़ोरी अनुभव कर रहा था। मोम-बत्ती लिये सेवलिच मेरे सामने खड़ा था, और कोई बड़ी सावधा-नीसे, मेरे छाती और कन्धेमें बन्धी हुई पट्टी खोल रहा था। धीरे धीरे मेरी स्मरण शक्तिमें एकाग्रता आई। अब मुझे याद पड़ा कि, शेब्रिनसे लड़ते हुये मैं घायल हुआ था। इसी समय द्वारके किंवाड़ खटके।

"अब कैसी अवस्था है?" किसीने खूब धीमे स्वरमें पूछा जिसे सुनकर मेरे शरीरमें एक प्रकारकी सनसनी दौड़ गई। एक आह भरकर सेवलिचने उत्तर दिया,—

"अभी तक वैसी ही दशा है, हाय! बेहोश हुए आज पाँचवां दिन बीत रहा है!"

मैंने चाहा कि, करवट लेलूं पर, निर्बलताके कारण मैं कर-वट न ले सका। मैंने साहस करके बोलनेका प्रयास किया और कहा,—

"मैं कहां हूं? यहां कौन है?"

मेरी आइवनोवना मेरे पलङ्गके निकट आ गई और मेरी ओर झुककर उसने पूछा,—

"अब तुम्हारा जी कैसा है ?"

मैंने क्षीण-स्वरमें उत्तर दिया,—

"ईश्वरको धन्यवाद है, कौन, मेरी आइवनोवना ? बताओ तो....."

आग कहनका सामर्थ्य मुझमें न रहा, मैं चुप हो गया। मुझे बोलते देखकर, सेवलिचके मुखपर प्रसन्नताकी लहर दौड़ गई। वह अपने आप बड़बड़ा उठा,—

"जय हो प्रभो ! तुम बड़े दयालु हो, तुम्हारी कृपासे हमारा पीटर फिर होशमें आ गया। आज पाँच दिन पीछे इन्हें चेत हुआ है। यह कोई साधारण बात नहीं है।"

मेरी आइवनोवनाने रोककर कहा,—

"सेवलिच, बातें न करो, ये अभी बहुत निर्बल हैं।"

मेरी आइवनोवना कमरेसे बाहर चली गई और बाहरसे किवाड़ खूब धीरेसे बन्द करती गई। मेरे विचार उत्तेजित हो उठे। मेरी स्मृति जाग उठी, मैं समझ गया कि मैं कप्तानके घर पर हूं और मेरी आइवनोवना मुझे देखने आई थी। मैंने सेवलिचसे कुछ प्रश्न करने चाहे, किन्तु उसने सिर हिलाकर चुप रहनेका संकेत किया और अपने कान मूंद लिये। उसका यह बर्त्ताव मुझे बुरा जान पड़ा, मैंने आंखें बन्द कर लीं, कुछ क्षणमें मुझे निद्रा आ गई।

जब मैं जगा तो जगते ही मैंने सेवलिचको पुकारा, किन्तु,

मैंने देखा कि, सेवलिच यहां नहीं है और मेरी आइवनोवना सामने खड़ी है। उसने अपने कोमल और मधुर स्वरमें उत्तर दिया। मुझे इतना हर्ष हुआ कि उसके वर्णन करनेके लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया, हथेली चूम ली, मेरे अश्रु विन्दु उसके हाथ पर टपक पड़े। मेरीने अपना हाथ ज्यों का त्यों रहने दिया.....अकस्मात् उसके ओठोंने मेरे कपोलोंका स्पर्श किया, मेरे सारे शरीरमें अधीर कर देने वाली विद्युत्-तरंग खेल गई।

"प्यारी मेरी आइवनोवना!" मैंने कहा, "तुम मेरी जीवन-संगिनी बनो और मेरा जीवन सुख और शान्तिमय बनाओ।"

मेरे हाथसे अपना हाथ अलग करते हुए, मेरीने कहा—

"ईश्वरके लिये शान्त हो, तुम अभी भी ख़तरेसे बाहर नहीं हुए हो, तुम्हारे घाव फिर खुल जा सकते हैं, ज़रा अपनेको संभालो, अपने लिये नहीं तो मेरे ही लिये।"

उल्लासकी तल्लीनतामें मुझे निमग्न करके मेरी आइवनोवना कमरेसे बाहर चली गई। मेरी आइवनोवना मेरी होगी, वह मुझे प्यार करती है—इस विचारसे मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा।

मैं धीरे धीरे स्वस्थ हो रहा था पर, इस घड़ीसे तो मानों बड़े वेगके साथ अच्छा होने लगा। दुर्गमें कोई डाक्टर नहीं था, इसलिये सेनाका नाई ही मेरी मरहम-पट्टी करता था। मेरी नवीन अवस्था तथा प्राकृतिक परिस्थितिसे शीघ्र स्वस्थ

होनेमें मुझे बड़ी सहायता मिली। कप्तानका घर भर मेरी देख-भाल करता था, मेरी आइवनोवना तो कदाचित् ही कभी मेरे पास न रहती थी। मैंने अपनी अधूरी प्रेमभिक्षाको दुहरानेके इस सुअवसरका बड़ी उत्सुकतासे उपयोग किया, और इस बार मेरीने मेरी बातें अधिक धीरतासे सुनीं। उसने बिना किसी बनावटके यह स्वीकार किया कि उसका हृदय भी मेरी ओर खिंच रहा है और यह भी बतलाया कि, उसके मातापिता उसके इस सौभाग्योदयसे प्रसन्न होंगे। "परन्तु," उसने मुझसे कहा, "तुम यह अच्छी तरह सोच लो, कि तुम्हारे माता पिताको तो इस सम्बन्धमें कोई आपत्ति न होगी?"

उसके इस प्रश्न पर मैं सोच-विचारमें पड़ गया। मुझे अपनी माताके प्रेम पर तो पूरा विश्वास था किन्तु, पिताके स्वभाव और विचार करनेके ढंगको याद कर मुझे जान पड़ा कि, वे इसे यौवनावेशकी मूर्खताके अतिरिक्त और कुछ न समझेंगे।

मैंने इस विचारको मेरी आइवनोवनासे स्पष्ट प्रकट कर दिया किन्तु, फिर भी मैंने निश्चय किया कि, अत्यन्त नम्र और विनीत शब्दोंमें पिताको एक पत्र लिखूं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करूं। मैंने पत्र लिखकर मेरी आइवनोवनाको भी दिखलाया। पत्र पढ़कर उसे सफलतामें ज़रा भी सन्देह न रहा और वह प्रेम-और यौवनके विश्वासके साथ अपने कोमल हृदयके कोमल भावोंमें विभोर हो गई।

अच्छा होनेके साथ ही शेब्रिनसे मेरा समझौता हो गया।

बात यह हुई कि एक दिन कप्तान आइवन कौज़मिचने इस द्वन्द-युद्धके लिये मुझे लज्जित करते हुए कहा,—

"पीटर एण्ड्रोविच, वास्तवमें मुझे चाहिये था कि, तुमको कारागारमें रखता, किन्तु, तुम्हें यथेष्ट दण्ड मिल चुका है इस-लिये मैंने वैसा नहीं किया। शेव्रिन क़ैद कर दिया गया है और उसकी तलवार ज़ब्त कर ली गई है। अब उसको अपनी करनीका संस्मरण और पश्चात्ताप करनेके लिए यथेष्ट समय मिलेगा।"

मेरा हृदय उस समय इतना प्रफुल्लित था कि शत्रुताके भावों के लिए उसमें स्थान ही नहीं था। मैंने शेव्रिनकी मुक्तिकी प्रार्थना की और कप्तानने अपनी स्त्रीसे सम्मति लेकर उसे मुक्त कर दिया।

शेव्रिन मेरे पास आया और जो घटना हुई थी उसके लिये बड़ा खेद प्रकट किया। उसने अपना अपराध स्वीकार किया और मुझसे प्रार्थना की कि, जो कुछ हुआ उसे भूल जाइये। मेरा स्वभाव द्वेषपूर्ण और ईर्षालु नहीं था, इसलिए मैंने प्रस-न्नतासे उसकी बात स्वीकार कर ली। मैं यह समझ चुका था कि मेरी संबन्धी उसके अपवादका कारण उसका पराजित अहं-कार और तिरस्कृत प्रेम था, इसलिए मैंने उसे उदारता पूर्वक क्षमा कर दिया।

मेरा घाव भर गया, मैं स्वस्थ और इस योग्य हो गया कि, कप्तानके घरसे अपने कार्टरमें चला जाऊं। मैंने पिताको जो पत्र भेजा था उसके उत्तरकी बड़ी अधीरताके साथ प्रतीक्षा

करने लगा। यद्यपि पिताका उत्तर पानेकी मुझे आशा न थी, रह रहकर मेरा हृदय मुझसे कह उठता था कि, उनके उत्तरसे तुम्हारी सारी इच्छाओंका गला घुट जायगा। अभीतक वेसिलाइसा इगोरोवना और कप्तानसे भी इस सम्बन्धमें मुझसे कोई चर्चा नहीं हुई थी किन्तु, मुझे विश्वास था कि, मेरे प्रणय-प्रस्ताव से उन्हें आश्चर्य न होगा। क्योंकि हमने अपने मनोभावोंको उनसे छिपानेकी चेष्टा नहीं की थी और मुझे विश्वास था कि इस संबन्धमें उनकी स्वीकृति प्राप्त करना मुश्किल न होगा।

निदान, एक दिन शेव्रिन एक पत्र लिये हुये मेरे पास आया। मैंने कांपती हुई अङ्गुलियोंसे पत्र लिया। पता मेरे पिताके हाथका लिखा हुआ था। यह एक असाधारण बात थी, क्योंकि, घर से जो पत्र आते थे वे सदा मेरी मां के लिखे हुये होते थे, पिता पत्रके अन्तमें दो चार शब्द अपने हाथसे लिख दिया करते थे। कई क्षण तक मुझे पत्र खोलनेका साहस न हुआ! मैं थरथराते हृदयसे बार-बार पता पढ़ रहा था,—

"प्रिय पुत्र, पीटर ऐण्ड्रोविच ग्रोनेफ,"
"ओरनबर्ग-गवर्नमेण्ट,"
"बैलोगोर्स्क-दुर्ग।"

पतेकी लिखावटसे कुछ क्षण तक मैंने यह जाननेकी चेष्टा की, कि पत्र लिखते समय पिताके मस्तिष्कमें किस प्रकारके विचार उठ रहे थे। अन्तमें मैंने पत्र खोल डाला। पहिली ही दृष्टिमें मैंने देखा कि भयङ्कर तूफानसे तबाह हो जानेवाले जहाज

के समान मेरी आशाका सुन्दर भवन तहस-नहस हो गया है। पत्रमें लिखा हुआ था,—

"मेरे पुत्र पीटर,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने माइरोनाफकी पुत्री मेरी आइवनोवनासे विवाह करनेकी आज्ञा तथा हमारा आशीर्वाद चाहा है। मैं तुमको न आज्ञा देता हूं और न आशीर्वाद। इतना ही नहीं, मैं तुम्हारी अफ़सरीकी परवा न करके तुम्हें तुम्हारी भूलोंका समुचित दण्ड देनेके लिए स्वयं आनेका विचार कर रहा हूं। तुम्हारे लिये यह कितने लज्जाकी बात है कि तुमने अपने दायित्वको ठुकराकर सेनापतिके पदको कलंकित किया है! तुमको तलवार दी गई थी मातृभूमिकी रक्षा करनेके लिये, न कि आपसमें ही लड़कर मूर्खता दिखानेके लिये। मैं इसी समय ऐण्ड्री कार्लोविचको लिख रहा हूं, कि वे तुमको बैलोगोर्स्क-दुर्गसे और आगे किसी दूरके ऐसे स्थानमें हटा दें जहाँ तुम अपने इस मूर्खताके रोगको दूर कर सको। तुम्हारी मां ने जबसे तुम्हारी यह करतूत सुनी है, दुख और चिन्तनाका इतना कटु अनुभव किया है, कि ज्वराक्रान्त होकर चारपाईसे लग गई हैं। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि वह तुम्हारी बुद्धि ठिकाने करे, यद्यपि मुझे उसकी दयालुता पर विश्वास करनेका साहस नहीं होता।

तुम्हारा पिता—ए० जी०

पत्रकी पंक्तियोंने मेरे हृदयमें नाना भांतिकी भावनाओंको

उकसा दिया। पिताके दृढ़ और कठोर वर्त्तावसे मुझे असीम व्यथा हुई। उनकी अन्यायपूर्ण असम्मतिमें मैंने मेरीका अपमान अनुभव किया और मैं लज्जासे गड़ गया। बैलोगोर्स्क-दुर्गसे किसी अन्य सैनिक स्टेशन पर अपने तबादलेकी बात स्मरण आने पर मेरा हृदय त्रास और भयसे भर गया। किन्तु, सबसे अधिक व्यथित और अधीर हुआ मैं अपनी माताकी बीमारीका हाल पाकर। मैं मन ही मन सेवलिचके ऊपर बड़ा कुपित हुआ। मैंने सोचा, कि निस्सन्देह इसीके द्वारा मेरे द्वन्द युद्धकी सूचना माता-पिता तक पहुंची है। अधीरताके वेगसे मैं अस्थिर हो उठा और अपने छोटेसे कमरेमें इधर-उधर टहलने लगा। कुछ देर पश्चात् प्रकृतिस्थ होने पर मैंने उत्तेजना तथा रोष भरी दृष्टिसे सेवलिचकी ओर ताककर कहा,—

"क्यों सेवलिच, मैं इस प्रकार घायल होकर महीने भर मृत्यु-शय्या पर लेटा रहा, इससे तुमको सन्तोष नहीं हुआ और तुम मेरी मांको मार डालने पर उद्यत हो गये!"

सेवलिचने ऐसी दृष्टिसे मेरी ओर देखा, मानों उसपर बिजली गिर पड़ी हो। उसने सिसकते हुए कहा,—

"ईश्वरके लिये पीटर, बतलाओ तो कि तुम यह क्या कह रहे हो? तुम्हारे घायल होनेसे मुझे सन्तोष हुआ—तुमने मुझे इतना क्षुद्र कैसे समझा? ईश्वर जानता है कि तुमको बचानेके लिये और एलेग्जी आइवनोविचकी तलवार अपनी छातीमें लेनेके लिये मैं किस वेगके साथ दौड़ा था! पर, बुढ़ापेने वैसा न करने

दिया। क्या करूं, दौड़ा तो बहुत, पर न पहुंचा। किन्तु, तुम्हारी मांके लिये मैंने क्या किया?"

मैंने कहा,—

"क्या किया? तुमने इस घटनाका सब हाल घर लिख भेजा है। क्या तुम गुप्तचर बनकर ही मेरे साथ आये हो?"

"मैंने लिख भेजा?" सेवलिचने आंखोंमें आँसू भरकर उत्तर दिया, "हा भगवान! मेरे मालिकने मुझे क्या लिखा है, लो यह देखो, और तब सोचो कि मैंने इस घटनाकी सूचना घर भेजी है या नहीं?"

यह कहकर सेवलिचने अपने पाकेटसे एक पत्र निकाला और मेरे हाथमें रख दिया। पत्र इस प्रकार था,—

"ऐ बुड्ढे कुत्ते, तुम्हारे ऊपर विश्वास करके हमने तुमको पीटरके साथ भेजा था और दृढ़ शब्दोंमें आदेश दिया था कि तुम सतर्कताके साथ उसकी देखभाल रखना और उसके आचरण-व्यवहारकी सूचना मुझे देते रहना। किन्तु तुमने तो हमारे आदेशका खूब पालन किया! क्या तुम्हारे लिये इससे अधिक और कोई लज्जाकी बात हो सकती है कि तुमने अपना कर्त्तव्य पालन नहीं किया और दूसरोंको मुझे उसकी बेवकूफियोंकी खबर देनी पड़ी। तुम्हारे इस प्रकार सत्यको छिपानेके लिए मैं तुमको सूअर चरानेके कामपर नियुक्त करूंगा। खैर, अब इस पत्रको पाकर, क्षणभरका भी विलम्ब न करके तत्काल लिखो कि पीटरके स्वास्थ्यकी अब क्या दशा है? साथ ही इस बातकी

भी ठीक ठीक सूचना दो कि उसके शरीरमें किस स्थान पर घाव लगा है और उसकी भलीभांति शुश्रूषा हुई या नहीं ?"

पत्रसे सेवलिचकी निर्दोषिता प्रमाणित हो गई। अब मुझे ज्ञान हुआ कि मैंने अकारण सेवलिच पर सन्देह किया और व्यंग्य-वचन कहकर उसका अपमान किया। मैंने उससे क्षमा-प्रार्थना की। किन्तु बुड्ढा सन्तुष्ट न हुआ। उसने कहा,—

"मेरे भाग्यमें यही बदा था! कैसा सुन्दर धन्यवाद मैंने अपने मालिकसे पाया है! मैं बुड्ढा कुत्ता हूं, मैं सुअरोंका रखवाला हूं और मैं तुम्हारे घायल होनेका कारण हूं। यह मासूकी शिक्षाका परिणाम है कि बिना विचार किये हुये, पूर्ण अविवेकके साथ, तुम इस प्रकार लोहेकी सलाखें हृदयमें छेदनेके लिये तत्पर हो जाते हो। तुम्हारे लिये मासूको रखकर धनका कैसा सद्व्यय किया गया!"

मैं सोचने लगा कि तब यह समाचार पिताको किसने दिया? क्या जनरलने पत्र लिखा? पर जनरलको क्या पड़ी थी कि वह पत्र लिखनेका कष्ट उठाता! यह भी सम्भव नहीं जान पड़ता कि आइवन कौजमिचने यह समाचार पिताको दिया हो। अनुमान ने शेव्रिनकी काल्पनिक मूर्त्ति मेरे सामने ला खड़ी की। शेव्रिन पर मेरा सन्देह हुआ। मैंने निश्चय किया कि निस्सन्देह यह शेव्रिन ही का काम है। मैंने सोचा कि इस दुर्गसे तबादला हो जाने पर जब कमानडेण्टके कुटुम्बसे मैं अलग होकर दूर चला जाऊंगा तब शेव्रिनको लाभ उठानेका अच्छा अवसर मिलेगा।

मैं मेरी आइवनोवनासे सब बातें बतलानेके लिये चला। वह अपने कमरेके दरवाजे पर ही मिल गई। उसने मुझे देखते ही कहा,—

"क्यों, क्या हुआ? यह तुम्हारा क्या हाल है? तुम्हारा मुंह पीला क्यों पड़ रहा है? कुशल तो है?"

मैंने पिताका पत्र उसके हाथमें देते हुए उत्तरमें कहा,—

"सारी आशाओंका अन्त हो गया!"

बातकी बातमें उसके चेहरे पर भी पीलापन दौड़ गया। पत्र पढ़कर उसने कांपते हुए हाथोंसे पत्र मुझको लौटा दिया और थरथराते हुये कण्ठ-स्वरमें कहा,—

"भाग्य हम दोनोंको एकत्र नहीं देखना चाहता..... तुम्हारे माता-पिता मुझे अपने कुटुम्बमें सम्मिलित करनेके लिये सम्मत न होंगे। ईश्वरकी इच्छा! हमारी भलाई किसमें है—यह हम लोगोंकी अपेक्षा ईश्वर अधिक जानता है। कोई चारा नहीं है पीटर ऐण्ड्रयच, भगवान तुम्हें प्रसन्न रखें।"

मैंने उसका हाथ अपने हाथमें लेते हुए कहा—

"यह नहीं होसकता मेरी, मैं अपनेको तुम्हारे ऊपर उत्सर्ग कर चुका हूं और तुम भी मुझसे प्रेम करती हो जो कुछ बीतेगी सब सहनेके लिये मैं तयार हूं। चलो हम तुम्हारे माता-पितासे पैरों पड़कर प्रार्थना करें, उन्होंने कोमल और निरभिमान हृदय पाया है। वे हम लोगोंको आशीर्वाद देंगे; हमारा विवाह हो जायगा.....और फिर, मुझे विश्वास है कि समय

पाकर मैं पिताको प्रसन्न कर लेनेमें कृतकार्य होऊंगा। मांने सदासे मेरा पक्ष लिया है। वे मुझे क्षमा करेंगी, वे कभी मेरा विरोध न करेंगी और.....।"

मेरी बात पूरी होनेके पहले ही मेरी आइवनोवना बोल उठी,—

"नहीं, पीटर ऐण्ड्रयच, तुम्हारे माता-पिताका आशीर्वाद पाये बिना मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकती। उनका आशीर्वाद प्राप्त किये बिना तुम्हारा जीवन सुखमय न होगा। आओ, ईश्वरकी इच्छा पर हम लोग अपनेको छोड़दें। यदि तुम किसी दूसरेको हृदय-दान करोगे और उसे अपनी प्रेमाधिकारिणी बनाओगे तो मुझे सन्तोष होगा। पीटर ऐण्ड्रयच, मैं तुम दोनोंके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करूंगी।"

उसके नेत्रोंसे आंसू टपक पड़े और वह मुझे अकेला छोड़कर अपने कमरेके भीतर चली गई। मेरी इच्छा हुई कि उसका पीछा करूं और कमरेमें उसके पास जाऊं। किन्तु मैंने देखा कि मेरी आत्म-स्थिरता सीमा अतिक्रम कर रही है अतएव मैं सीधा अपने क्वार्टरकी ओर चल पड़ा।

मैं अपने कमरेमें जाकर गहरे विचारोंमें निमग्न हो गया, किन्तु सेवलिचने बाधा डाली; उसने मेरे हाथमें एक लिखा हुआ कागज देकर कहा,—

"देखिये, क्या मैं सचमुच मालिक पर जासूसी करके बाप-बेटेमें मनमुटाव करानेकी चेष्टा कर रहा हूं?"

मैंने कागज उसके हाथसे ले लिया। यह उस पत्रका उत्तर था जो सेवलिचके नाम आया था। सेवलिचने लिखा था,

"माननीय दयामूर्त्ति लार्ड पेण्ड्री पीट्रोविच,

आपका रोषपूर्ण कृपापत्र मिला। मैं आपका विश्वस्त अनुचर हूं। मैंने सदा हार्दिक उमंग और उत्साहके साथ आपकी आज्ञाका पालन किया है। आपकी सेवामें ही मेरे बाल सुफेद हुये हैं। हां, मैंने पीटर ऐण्ड्रियचके आहत होनेकी सूचना आपको नहीं दी, किन्तु यह केवल इस कारणसे कि मैं आपके हृदयको अकारण विन्तित और दुःखित नहीं करना चाहता था। यह सुनकर कि मालकिन अवडोशिया वेसीलीवना भयभीत होकर इतनी अधिक अस्वस्थ हो गईं—अत्यन्त दुख हुआ। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं, कि वह उनको शीघ्र ही स्वस्थ कर दे। पीटर ऐण्ड्रियच दाहने कन्धेके नीचे, छातीमें, पसलीके पास आहत हुये थे। घाव लगभग तीन इञ्च गहरा था। हमलोग उनको नदीके किनारेसे, जहांपर द्वन्द-युद्ध हुआ था, कमानडेण्ट-के घर ले आये। स्टेपन पेरमोनाफने सब प्रकारकी औषधिकी व्यवस्था की। ईश्वरको धन्यवाद है कि अब पीटर पेण्ड्रियच बिल्कुल अच्छे हैं। उनके स्वास्थ्यमें अब रत्ती भर भी कोई ऐसी त्रुटि नहीं है कि जिसकी मैं आपको सूचना दूं। वे अब पूर्ण स्वस्थ हैं। उनके अफसर—मैंने सुना है—उनसे प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। वेसिलाइसा इगोरोवनाने तो पीटरकी ऐसी देखभाल और सेवा की जैसे कोई अपने पुत्रकी करे। बिचारे

पीटरने बहुत क्लेश पाया है, अब आप झिड़कियां बताकर और बुरा-भला कहकर उसका जी दुःखी न करें। अन्तमें फिर निवेदन करता हूं कि मैं सदाके समान विनीत और नम्र भावसे आपकी आज्ञाओंको शिरोधार्य्य करनेके लिये उद्यत हूं।

"आपका विश्वस्त अनुचर"

"आरकीप सेवलिच"

सेवलिचका पत्र पढ़कर मैं हंसने लगा। मेरी अवस्था ऐसी नहीं थी कि मैं अपने पिताके पत्रका उत्तर स्वयं देता। माँको आश्वासन देने और उनका भय दूर करनेके लिये मुझे सेवलिचका पत्र यथेष्ट जान पड़ा।

इस समयसे मेरी परिस्थितिमें परिवर्त्तन आरम्भ हुआ। मेरी आइवनोवनाने मुझसे मिलना-जुलना छोड़ दिया। अब वह मुझसे कदाचित ही कभी बात करती। मुझे कमांनडैण्टके घर आना-जाना असह्य हो उठा। धीरे धीरे मैं अपने कमरेमें अकेला रहनेका अभ्यस्त हो गया। मेरे एकान्त निवासको देखकर वेसिलाइसा इगोरोवनाने पहले मुझे छेड़ा किन्तु मेरा आग्रह देखकर अन्तमें उसने मुझे मेरी इच्छा पर छोड़ दिया। आइवन कौजमिचसे मैं सेना सम्बन्धी कार्यके अतिरिक्त और कभी न मिलता। शेव्रिनसे कदाचित ही कभी मेरी भेंट होती थी, सो भी मेरी इच्छाके विरुद्ध। क्योंकि अब मुझे उसकी प्रच्छन्न शत्रुताका दृढ़ विश्वास हो गया था और मैं उसे सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगा था। मेरा जीवन मुझे भार जान पड़ने लगा। मैं एक ऐसी गम्भीर खिन्नतामें तल्लीन

रहने लगा कि जिसके परिणाम स्वरूप एकान्त-प्रियता और अन्यमनस्कता दिन दिन दूनी होती गई। किन्तु इस एकान्त-प्रियतामें शान्तिका पता न था। किसी अव्यक्त-वेदनासे हृदय सदा अशान्त और अस्थिर रहता था। मुझ अध्ययन और साहित्य-अवलोकनमें जो आनन्द मिला करता था उसे भी मैं खो बैठा। मेरी उदासीनता बढ़ गई। मुझे भय लगा कि कहीं मेरा मस्तिष्क न बिगड़ जाय। किन्तु अकस्मात् एक घटनाने मेरे जीवनकी दशा परिवर्त्तित कर दी—मेरे आत्मामें शक्तिका और मेरी इन्द्रियोंमें गतिका सञ्चार हुआ। मेरे भविष्य जीवनमें इस घटनाका अद्भुत प्रभाव पड़ा।

छठवां परिच्छेद

पावगाशफ

इसके पूर्व कि मैं उन अद्भुत घटनाओंका वर्णन करूं जिनका मैं चश्मदीद गवाह हूं, यह आवश्यक जान पड़ता है कि दो-चार शब्द ओरनबर्गकी गवर्नमेण्टके सम्बन्धमें कह दूं, जिससे पाठकोंको ज्ञात हो जाय कि यह गवर्नमेण्ट सन् १७७३ में किस अवस्थामें थी।

ओरनबर्गकी गवर्नमेण्ट विस्तृत और सम्पत्ति-शालिनी थी। यहांके निवासी अर्ध-जङ्गली थे और अभी थोड़े ही दिन हुए थे, इन लोगोंने रूसके जारकी अधीनता स्वीकार की थी। सभ्य-जीवन से इनको घृणा थी और राजकीय नियम-नीतिसे विद्रोह। इनकी क्षुद्रता, निष्ठुरता और लगातार क्रान्तियोंके कारण गवर्नमेण्टको अविराम दमन पर उद्यत रहना पड़ता था। इन्हें बसमें रखनेके लिए सुविधाजनक स्थानोंमें किले बनवाए गए थे जिनमें अधिक अंशमें केवल कासक जातीय सिपाही रखे गये थे। ये कासक जिन्हें ओरनबर्गकी शान्ति और सुरक्षाका भार सौंपा गया था एक समय स्वयं गवर्नमेण्टके लिये चिन्ता और भयका कारण बन चुके थे। एक वर्ष पूर्व सन् १७७२ में इनके प्रधान नगरमें विद्रोहकी आग भड़क उठी थी। सेनाको अधीन रखनेके उद्देश्यसे जेनरल द्रौबनबर्गने कुछ सनिक नियम जारी किये थे, जिससे चिढ़कर कासकोंने बड़ी निष्ठुरतासे द्रौबनबर्गको मार डाला और अपने लिये एक नये नेताका चुनाव किया था। अन्तमें बड़ी कांठनाईसे कठोर दमनके द्वारा गोली-बारूदकी सहायतासे यह क्रान्ति दाब दी गई।

मैं जब बैलोगोर्स्कके दुर्गमें पहुंचा था उसके कुछ ही पहिले यह घटना घटित हुई थी। आजकल सब प्रकार शान्ति थी। पर नहीं, शान्ति थी—न कहकर, शान्ति दिखलाई पड़ती थी कहना अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि अधिकारी वर्गकी धारणा थी कि क्रान्तिकारी केवल दिखानेके लिये चुप हैं और अनुकूल अवसरकी

खोजमें हैं। अवसर मिलते ही वे फिर विद्रोहकी अग भड़का देंगे।

अब मैं फिर अपना वृत्तान्त कहता हूं।

सन् १७७३ का अक्टूबर महीना लग चुका था। मैं अपने कमरेमें अकेला बैठा हुआ था। सन्ध्या हुये कुछ देर हो चुकी थी। पतझड़के दिन थे। पवन सिसकियां भारता हुआ चल रहा था। मैं ये सिसकियां सुन रहा था और बीच-बीचमें खिड़कीसे चन्द्रमाको देख रहा था, जो रह-रहकर जलद-पटलसे मुंह निकाल कर हंस रहा था। इसी समय मुझे समाचार मिला कि कमानडेण्ट मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं तत्काल उनसे मिलनेके लिये चल पड़ा। मैंने वहां पहुंचकर कमानडेण्टके अतिरिक्त शेब्रिन, आइवन इग्नेटिच और एक कासक जातिके अरदली (सिपाही) को उपस्थित पाया। वेसिलाइसा इगोरोवना और मेरी आइवनोवना—इन दो मेंसे वहां कोई भी न था। कमरेका द्वार भीतरसे बन्द कर लिया गया। हमलोग क्रमसे बैठ गये। अरदली बन्द द्वारके पास खड़ा हो गया। कमानडेण्टने अपने पाकेटसे एक कागज निकाला और हमलोगोंको सम्बोधित कर कहा,—

"महाशयो, एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समाचार है, सुनो, जेनरलने लिखा है।"

यह कहकर उन्होंने अपना चश्मा निकाला और पत्र पढ़कर सुनाया। पत्रमें लिखा था,—

"बैलो गोर्स्क-दुर्गके कमानडेण्ट
कप्तान माइरोनाफ
के नाम।
(कान्फीडेन्शल)

"इस आज्ञा-पत्रके द्वारा तुमको सूचना दी जाती है कि प्रसिद्ध विद्रोही और अराजक डान-कासक इमेलियन पावगा-शफ एक महान भयङ्कर तथा नितान्त अक्षम्य अपराध कर रहा है। वह अपनेको पीटर तृतीय प्रसिद्ध कर रहा है और जन-समूहमें क्रान्तिका बीज बोकर सैनिक संगठन कर रहा है। वह इस समय येक नदी की ओर है। अनेक दुर्ग उसने नष्ट कर डाले हैं तथा चारों ओर लूट-मार और हाय-हत्या मचा रखी है। इस लिये, इस आज्ञापत्रके पहुंचते ही उसको पराजित करनेके लिये उचित उपायका अवलम्बन करो और यदि सम्भव हो तो उस धूर्त, राजविद्रोहीको ठिकाने लगा दो। अपने दुर्गको उसके आक्रमणसे सुरक्षित रखनेके लिये सब प्रकारसे सजग और सतर्क रहो।"

कमानडेण्टने नेत्रों परसे चश्मा उतार कर, पत्र लपेटते हुये कहा,—

"उचित उपायका अवलम्बन करो"—यह कहना जितना सरल है, करना उतना सरल नहीं। पावगाशफने बड़ी भारी शक्ति संग्रह कर ली है। हमलोगोंकी संख्या सब मिलाकर केवल १३० है! कासकोंकी हम गिनती नहीं करते। हमें उनका

बहुत कम भरोसा है। मैग्जिमिच, मेरी इस बात पर तुम बुरा न मानना।"

कासक अरदली मैग्जिमिचने मुस्करा दिया, कमानडेण्टने फिर कहा,—

"किन्तु महाशयो, किया क्या जायगा। जो हो, जो कुछ बीते, उसे सहनेके लिये और जो कुछ कर सकें वह करनेके लिये हम लोगोंको उद्यत हो जाना चाहिये। रातमें अच्छी संख्यामें सिपाहियोंके गश्त करनेका प्रबन्ध करना चाहिये। यदि आक्रमण हो तो दुर्ग-द्वारकी पूरी रक्षा करनी चाहिये। दुर्गद्वार बन्द रहे किन्तु भीतर पास ही सब सिपाही एकत्र रहें। तोपकी जांच करलेनी चाहिये कि वह साफ और ठीक है या नहीं। मैग्जिमिच, तुम कासकों पर नजर रखो। इन सब बातोंके अतिरिक्त एक बड़ी बात जो मुझे कहनी है वह यह है कि इस समय यहां जो बातें हुई हैं वे पूर्ण रूपसे गुप्त रखी जांय। जबतक समय न आ जाय, दुर्गके अन्य किसी व्यक्ति पर ये बातें प्रकट न की जांय।"

उपर्युक्त आज्ञा देकर आइवन कौजमिचने हम लोगोंको विदा किया। मैं भी इन्हीं बातोंपर विचार करता हुआ शेब्रिन के साथ चल पड़ा। मैंने शेब्रिनसे पूछा,—

"बताओ, तुम्हारी समझमें इसका परिणाम क्या होगा?"

उसने उत्तर दिया,—

"ईश्वर जाने। भविष्य ईश्वरके हाथमें है, जो कुछ घटेगा

सामने आयेगा। इस समय चिन्ता और भयकी कोई बात मुझे नहीं दिखाई पड़ती किन्तु अगर.....।"

तत्पश्चात् वह विचारमग्न हो गया और बीच-बीचमें अन्य-मनस्क होकर फ्रञ्च ढङ्गसे सिसकारी लेने लगा।

यद्यपि हम लोगोंने इस ख़बरको गुप्त रखनेकी यथेष्ट चेष्टा की थी किन्तु फिर भी पावगाशफकी खबर बड़ी शीघ्रताके साथ दुर्ग भरमें फैल गई! आइवन कौजमिचके हृदयमें अपनी धर्म-पत्नी-वेसिलाइसा-इगोरोवनाके लिये बड़ा सम्मानित और पवित्र भाव था किन्तु, तो भी इस ख़बरको उन्हें जनाना उन्होंने उचित नहीं समझा था और इसलिये जेनरल का पत्र पानेपर उन्होंने बड़ी चतुरतासे उन्हें यह कह कर कि फादर जिरे-मिसको ओरनबर्गसे एक असाधारण समाचार मिला है जिसे वे गुप्त रखना चाहते हैं, उस समय बाहर भेज दिया था। इगोरोवना पोपकी स्त्रीके यहां जानेके समय अपने साथ आइवन-कौजमिचके परामर्शके अनुसार, मेरीको भी लेती गई थी।

इन दोनोंके चले जानेपर आइवन-कौजमिचने पलाशकाको भंडार घरमें बन्द कर दिया था और बाहरसे ताला लगा दिया था। इस प्रकार जब वे घरमें अकेले रह गये तब उन्होंने हम लोगोंको बुलवाया और अत्यन्त गुप्त रूपसे मीटिंग की थी।

वेसिलाइसा-इगोरोवना पोपकी पत्नीसे मिली किन्तु उसे कोई नवीन समाचार न मिला। अन्तमें वह असफल मनोरथ होकर घर लौट आई। घर आनेपर उसे ज्ञात हुआ कि उसकी

अनुपस्थितिमें यहां कोई मिटिंग की गई है और उस समय पलाशका तालेके भीतर बन्द रखी गई थी। उसे अपने पतिके ऊपर सन्देह हुआ। उसे अब ज्ञान हुआ कि मैं धोखा देकर यहाँसे हटा दी गई थी। इसलिये उसने अपने पतिसे प्रश्न पर प्रश्न करना आरम्भ किया। आइवन-कौज़मिच इसके लिये पहिले हीसे प्रस्तुत हो चुके थे इसलिये वे प्रत्येक प्रश्नका नपा-तुला उत्तर देने लगे।

"हमें पता लगा था कि स्त्रियाँ टालसे घास ले लेकर तन्दूर सुलगाती हैं। यह घास इसलिये नहीं इकट्ठी की गई है इसलिये हमने दृढ़ आज्ञा दी है कि आगेसे ऐसा न हो। स्त्रियोंको समझा दिया जाय कि वे टालकी घास न छुयें। तन्दूर सुलगानेके लिये झाड़-झंखाड़ और जंगली लकड़ियोंसे काम लें।"

वेसिलाइसा-इगोरोवनाने कहा,—

"तब पलाशका तालेमें क्यों बन्द की गई थी? यदि केवल यही बात थी तो वह विचारी बालिका इतनी देरतक भंडार घरमें अकेली बैठी रहनेके लिये क्यों विवश की गई थी?"

आइवन-कौजमिच इस प्रश्नके लिये तयार न थे, उनके लिये यह अचिन्तित प्रश्न था। इसलिये वे घबरा उठे और घबराहटमें उन्होंने कुछ असम्बद्ध बातें कह डालीं। वेसिलाइसा-इगोरोवना समझ गई कि निःसन्देह हमारे साथ छल-प्रपञ्चका व्यवहार किया गया है। ठीक उत्तर मिलनेकी आशा न थी इसलिये उसने इस संबन्धमें और प्रश्न करना अनावश्यक समझा। किन्तु रातमें उसे नींद न पड़ी। उसकी समझमें न आया कि

ऐसी कौन सी बात है जिसे उसका पति इस प्रकार उससे छिपा रहा है।

दूसरे दिन ईश्वर-प्रार्थनासे लौटनेपर उसने देखा कि आइवन-इग्नेटिच बड़े परिश्रमसे तोपकी सफाई कर रहा है। उसके पास बालू, कंकड़ और पत्थर तथा हड्डियोंके छोटे-छोटे टुकड़ोंके ढेर लगे हैं। उसने सोचा कि यह तयारी हो क्यों रही है? क्या किरगसोंका आक्रमण होनेवाला है? किन्तु यदि यही बात है तो इसे आइवन-कौजमिचने मुझसे क्यों छिपाया? यह तो कोई ऐसी बात न थी जो मुझसे छिपायी जाती!

उसने सोचा कि इस रहस्यका पता लगाना चाहिये। उसने आइवन-इग्नेटिचको संकेतसे अपने पास बुलाया।

प्रश्न करनेके पहिले, न्यायाधीश जिस प्रकार अपराधीसे असंलग्न प्रश्न करके उसको भुलावा देनेकी चेष्टा करता है ठीक उसी प्रकार वेसिलाइसा-इगोरोव्नाने आइवन-इग्नेटिचसे पहले गृहस्थी संबन्धी इधर-उधरकी बातें कीं और फिर कुछ क्षण तक चुप रहनेके पश्चात् एक गहरी साँस ली और कहा,—

"दयामय भगवान! तुम्हारी क्या इच्छा है? इस सबका अन्त क्या होगा?"

आइवन-इग्नेटिचने उत्तर दिया,—

"ईश्वर दयामय है माँ, सब अच्छा ही होगा। हमारे पास सिपाहियोंकी यथेष्ट संख्या है; बारूदकी भी कमी नहीं है। मैंने तोप साफ कर ली है। पावगाशफ भी समझेगा कि किसीसे

पाला पड़ा था। यदि ईश्वर प्रतिकूल न हुआ तो हमलोग अपनी रक्षा करनेके लिये बहुत काफी हैं।"

कामानडेंटकी पत्नीने पूछा,—

"और यह पावगाशफ है कौन?"

अब आइवन-इग्नेटिचको ज्ञान हुआ कि मैंने बड़ा अनर्थ किया। यह बात तो किसीसे न कहनेके लिये ताकीद की गई थी। किन्तु छूटा हुआ तीर कैसे लौटाया जा सकता है? आइवन-इग्नेटिचने जीभ दांतों तले दबाई! बात छिपानेके लिये अब कोई मार्ग न था। वेसिलाइसा-इगोरोवनाने सब बातें ठीक-ठीक बतानेके लिये उसको विवश किया और प्रतिज्ञा की कि वह इसका जिक्र किसी दूसरेसे न करेगी। परिणाम यह हुआ कि उसे गुप्त बैठककी सब बातें कहनी पड़ीं।

वेसिलाइसा-इगोरोवनाने अपने बचनका पालन किया और इस संबंधमें किसीसे कोई चर्चा न की। किन्तु पोपकी पत्नीसे एक बार दयालुता-वश उसे चर्चा करनी पड़ी। पोपकी गायें मैदानमें घास चरा करती थीं और वहीं दिनरात रहती थीं। वेसिलाइसा-इगोरोवनाने सोचा कि ऐसा न हो कि लुटेरे अकस्मात आ जायं और गायोंको बाँध ले जायं तो व्यर्थमें हानि उठानी पड़े। इसलिए उन्हें सावधान कर देना आवश्यक समझा।

जो हो, दुर्गमें अब जहाँ देखो वहीं, पावगाशफकी चर्चा होने लगी। पावगाशफके सम्बन्धमें भिन्न-भिन्न प्रकारकी रिपोर्टें आने लगीं। कमानडेंटने अपने अरदलीको आसपासके गावों और

दुर्गोंमें पावगाशफ़ संबन्धी ख़बरें जाननेके लिए भेजा। दो दिनके बाद अरदलीने लौटकर ख़बर दी कि बाशकर लोग कहते हैं कि क़िलेसे ६० वर्स्ट (एक रूसी नाप) के फ़ासले पर बाग़ियोंकी बहुत बड़ी सेना एकत्र है और बड़े वेगके साथ इधरकी ओर बढ़ रही है। इससे अधिक वह और कुछ न बतला सका क्योंकि और आगे बढ़कर ख़बर लेनेकी उसकी हिम्मत न पड़ी।

इस समाचारसे कासकोंमें विचित्र जागृति फैल गई। वे गलियों और सड़कोंमें जहां अवसर पाते, छोटे छोटे झुण्डोंमें एकत्र हो जाते, चुपके चुपके आपसमें परामर्श करते और जब किसी सिपाही या सैनिकको देखते तो तत्काल बिखर जाते। उनकी निगरानीके लिए जासूस नियुक्त थे। यूले नामके एक कलमक जातीय व्यक्तिने कप्तानको ख़बर दी कि अर्दलीकी संग्रह की हुई खबर ग़लत है; अपने अन्य साथियोंसे उसने कहा है कि वह बलवाइयोंसे भेंट और परामर्श कर आया है। कमानडेंटने तत्काल अरदलीको हिरासतमें ले लिया और उसकी जगह पर यूलेको नियुक्त किया। इस प्रकार प्रकट रूपसे असन्तुष्ट होनेका कारण कासकोंके हाथ लगा।

किन्तु हिरासतमें लेनेके कुछ समय पश्चात् अवकाश पाकर वह अरदली हिरासतसे निकल भागा।

इसके अतिरिक्त एक और नई घटना हुई, जिसने कमानडेंट को और अधिक चिन्तित कर दिया। एक बाशकर राजविद्रोह सम्बन्धी कुछ पत्र लिये पकड़ा गया। इसपर विचार करनेके

लिये कमानडेंटने एक बार फिर अपने घरमें प्रधान अफसरोंकी मीटिंग करनी चाही। निदान आवश्यकता हुई कि वेसिला-इसा-इगोरोवना आदि किसी अच्छे ढंगसे फिर कुछ समयके लिये घरसे हटा दी जायं। किन्तु बेचारे सीधे-सादे कप्तानको पूर्व ढंगसे कोई और अच्छा ढंग न सूझा। उसने वेसिलाइसा इगोरोवनासे कहा,—

"हमको विश्वस्त सूत्रसे पता लगा है कि फादर जिरेमिसने एक समाचार इस प्रकार का....."

वेसिलाइसा-इगोरोवनाने बात काटकर कहा,—

"बस रहने दो आइवन-कौजमिच, मैं सब समझ गई। तुमको आज फिर समर-सम्बन्धी मीटिंग करनी है और उसमें इमेलिअन पावगाशफके विषयमें विचार करना है, इसीलिये तुम मुझे कौशलसे हटाना चाहते हो। किन्तु, इस बार मैं तुम्हारे झाँसेमें नहीं आनेकी!"

"अच्छी बात है वेसिलाइसा-इगोरोवना, यदि तुम सब जान चुकी हो तो तुम्हारे जानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। तुम रहो, तुम्हारे सामने ही हम सब बातें करेंगे।"

"अच्छी बात है आइवन कौजमिच, तुम्हें इतना चालाक नहीं होना चाहिए, अफ़सरोंको बुला भेजो।"

हमलोग एकत्र हुये। आइवन-कौजमिचने इस बार अपनी पत्नीकी उपस्थितिमें ही डाकू पावगाशफकी घोषणा पढ़ सुनाई। उसने लिखा था कि वह बहुत शीघ्र दुर्गकी ओर आ रहा है।

और समस्त कासकों और सैनिकोंको अपना साथ देनेके लिए आमंत्रित किया था और बड़े अफसरोंको चेतावनी दी थी कि यदि उनको अपने प्राणोंका कुछ भी मोह हो तो वे उनका विरोध न करें।

घोषणापत्र किसी अर्धशिक्षित कासकका लिखा हुआ था, पर था जोरदार शब्दोंमें और साधारण लोगोंके मस्तिष्कको प्रभावित करनेके लिये पर्याप्त था।

कमानडेन्टकी पत्नी उच्चस्वरमें पुकार उठी,—

"कितना पाजी है यह पावगाशफ? हमलोग इसका स्वागत करेंगे और अपने झण्डेको इसके चरणोंमें समर्पित करेंगे? हमलोग यहां चालीस वर्षसे हैं। इतने दीर्घकालमें हमलोगोंने न जाने क्या क्या देखा है! अरे कुत्ते, क्या ऐसे कमाण्डेण्ट भी हो सकते हैं जो तेरे जैसे एक लुटेरेको आत्म-समर्पण कर दें?"

"होना तो नहीं चाहिए, परन्तु पता लगा है कि उस शैतानने कई दुर्गों पर अधिकार कर लिया है।"

शेव्रिनने गम्भीरता-पूर्वक कहा,—

"जान पड़ता है वह बड़ा शक्तिशाली है।"

कमाण्डेण्टने उत्तर दिया,—

"उसकी शक्तिका पता अभी लगा जाता है। वेसिलाइसा इगोरावना, कोठेकी कुञ्जी दो। जाओ आइवन-इग्नेटिच, उस बाशकरको ले आओ और यूलेसे कह दो कि कोड़ा ले आवे।"

कमाण्डेण्टकी पत्नी यह कहते हुए अपने आसनसे उठ खड़ी हुई कि,—

"मिनट भर ठहर जाओ आइवन कौजमिच, मुझे मेरीको किसी ऐसी जगह हटा ले जाने दो जहां से विलपना-तड़पना न सुन पड़े नहीं तो वह सहम जायगी। और सच बात तो यह है कि इस प्रकारकी हाय-हत्या देखना मुझे स्वयं प्रिय नहीं है। मेरा हृदय अभीसे धड़क उठा है। इसलिये उपस्थित सज्जनो, मुझे क्षमा करना, मैं जाता हूं।"

पुराने दिनोंमें अपराध स्वीकार करानेके लिये संदिग्ध व्यक्ति को भयंकरसे भयंकर यातनायें दी जाती थीं। यह प्रथा इतनी प्रबल और विस्तृत हो गई थी कि सन् १७६८ में राजाज्ञाके द्वारा इस प्रथाके उठा दिये जानेपर भी बहुत दिनोंतक इसका अस्तित्व शेष रहा। उन दिनों यह समझा जाता था कि अपराधीको दण्ड देनेके लिए उससे उसका अपराध स्वीकार करा लेना अनिवार्य है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि यह धारणा कितनी कारण हीन और न्याय-दृष्टिसे कितनी अनुचित थी। यदि अपराधीकी अस्वीकृति उसकी निरपराधिताका प्रमाण नहीं समझी जाती तो कष्ट देकर प्राप्त की हुई उसकी स्वीकृति भी उसके अपराधी होनेके प्रमाण स्वरूप नहीं मानी जानी चाहिए। किन्तु उन दिनों तो न्यायाधीश या अपराधी किसीको भी इसकी आवश्यकता पर सन्देह नहीं था। और वृद्ध और पुराने ढंगके न्यायाधीश तो अब भी कभी-कभी इस पशुता पूर्ण और क्रूर प्रथाके उठ जानेपर खेद

करते और हाथ मलते पाये जाते हैं। फलतः कमानडेन्टकी आज्ञा पर हम लोगोंमेंसे किसीको भी आश्चर्य्य या दुःख न हुआ। आइवन-इग्नेटिच बाशकरको लानेके लिये चला गया और कुछ मिनटोंके बाद उसे ले आया।

बासकरके पैरोंमें बेड़ियां पड़ी हुई थीं; अतएव बड़ी कठिनाईसे उसने कमरेकी देहली लाँघी और अपना बड़ा टोप उतार कर दरवाजेके पास खड़ा हो गया। मैंने उसकी ओर देखा, देखते ही मेरा शरीर काँप उठा। अपने जीवनमें मैं कभी उसे न भूलूंगा। उसकी वयस लगभग ७० के थी, और नाक और कान दोनोंमें एक भी न था। उसका सिर मुंडा हुआ था, और दाढ़ीके नाम ठोढ़ीपर चन्द सफेद बाल मात्र थे। शरीर ठिंगना था, और कमर कुछ झुक गई थी। आंखें छोटी-छोटी थीं किन्तु, अंगारेके समान दमक रही थीं।

उसके कटे हुए नाक-कानको देखते ही कमाण्डेण्ट पहचान गया कि वह उन वाग़ियोंके दलका है जिन्हें सन १७४१ में इस प्रकारका दण्ड दिया गया था और कहा—

आह, हाह, तुम फिर हमारे फन्देमें फंस गए। तुम तो पुराने पापी हो, तुम्हारी सफ़ा-चट्ट खोपड़ी ही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आगे बढ़ो और बताओ तुम्हें यहां किसने भेजा है।

वृद्ध बाशकर कमानडेण्टकी ओर मूर्खोंकी तरह घूरता हुआ चुप खड़ा रहा, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। कमानडेण्टने फिर कहा,—

"क्यों, उत्तर क्यों नहीं देता? क्या तू रूसी भाषा नहीं समझता? यूले, इससे अपनी भाषामें पूछो कि इसे यहाँ किसने भेजा है?"

यूलेने कमानडेण्टके प्रश्नको अपनी तातारी भाषामें दुहराया; किन्तु बाशकर ठीक पहिलेके समान उसकी ओर भी देखता रहा और एक शब्द भी न बोला। कमानडेण्टने चिल्लाकर कहा,—

"बोलता क्यों नहीं? तुझे बतलाना ही होगा। सिपाहियो इसके कपड़े उतार लो और यूले कोड़ेसे इसकी पीठ सहला दो।"

दो सिपाही उसकी ओर बढ़े और उसके कपड़े उतारने लगे। अभागा वृद्ध घबरा उठा और जैसे कोई छोटा जानवर बच्चोंके हाथमें फंसने पर विवश होकर व्याकुलता भरी दृष्टिसे चारों ओर देखता है, ठीक उसी प्रकारकी दृष्टिसे अपने चारो ओर देखने लगा। सिपाहिहियोंने उसके हाथोंको पकड़कर कन्धोंकी ओर झुकाया और कपड़े उतार लिये। यूलेका कोड़ा लपका और उस बुड्ढेके सिरमें लिपटकर छूट गया। वह एक धीमे स्वरमें कराह उठा, और मुंह बा दिया। हम लोगोंने देखा कि उसके मुंहमें जीभ नहीं है। जीभकी जड़में एक अत्यन्त क्षुद्र मांस खण्ड मात्र है।

जब मैं अपनी आँखों देखी इस घटनाका स्मरण करता हूं और सम्राट एलेक्जेण्डरके वर्त्तमान दयालु शासनसे उस समयकी तुलना करता हूं तो सभ्यता और दयालु भावनाओंके द्रुत प्रवाह पर मैं आश्चर्य्यान्वित हो उठता हूं। प्यारे नवयुवको,

मेरी ये पंक्तियां यदि तुम्हारे हाथमें पड़ें तो मेरे इस अनुरोधको स्मरण रखना कि वे परिवर्तन जो नियम-नीतिके सुधारों द्वारा होते हैं वे उन परिवर्तनोंकी अपेक्षा कहीं अधिक उत्तम और चिरस्थायी होते हैं जो बल प्रयोग द्वारा होते हैं।

हमलोगोंके रोंगटे खड़े हो गये।

"अच्छा" कमानडण्टने कहा,—"यह स्पष्ट है कि इससे किसी बातका पता नहीं लग सकता। यूले ले जाओ इसे, उसी कोठेमें बन्द कर दो। हाँ महाशयो, तो और दो चार आवश्यक बातें हो जांय।"

हमलोग अपनी स्थिति पर विचार कर ही रहे थे कि वेसिला-इसा-इगोरोवनाने अकस्मात् कमरेमें प्रवेश किया, वह घबड़ाई हुई थी और हांप रही थी।

आश्चर्य्यमें आकर कमानडेण्टने पूछा,—"क्यों, क्या हुआ?"

वेसिलाइसा-इगोरोवनाने कहा,—

"क्या बताऊं! दुर्भाग्यकी सूचना देने आई हूं। निजनार्सन दुर्ग आज प्रातःकाल दुष्टोंने विजय कर लिया। फादर जिरेसिमका नौकर अभी अभी वहांसे लौटा आ रहा है। उसने आंखों देखा है कि किस प्रकार बेईमानोंने वहां अपना अधिकार जमाया! कमानडेण्ट तथा अन्य सब अफसर सूलीपर चढ़ा दिये गये और सिपाही जितने थे, सब कैद कर लिये गये। थोड़ी ही देरमें वे शैतान यहां पहुंचना चाहते हैं!"

इस आकस्मिक समाचारने मेरे ऊपर बड़ा गहरा प्रभाव

डाला। निज़नोसर्न-दुर्गके कमानडेण्ट एक मिलनसार और नव युवक व्यक्ति थे। मैं उनसे परिचित था। दो महीने पहिले ओरनबर्गसे लौटते हुए वे हमारे दुर्गमें आये थे, और कुछ देर आइवन-कौज़मिचके घरपर ठहरे थे। उनकी नवयुवती पत्नी भी उनके साथ थी। निज़नोसर्न-दुर्ग यहांसे लगभग पच्चीस वर्स्ट दूर था। हमलोगोंको विश्वास हो गया कि पावगाशफ अब इतना निकट है कि वह किसी भी समय इस दुर्गपर आक्रमण कर सकता है। मुझे मेरी-आइवनोवनाका स्मरण हो आया, और मैं आत्मविस्मृत सा हो गया।

मैंने कनानडेण्टसे कहा,—

"सुनिये आइवन-कौज़मिच, यह तो हमलोगोंका कर्त्तव्य है कि अन्तिम श्वास तक दुगकी रक्षा करते रहें। इस सम्बन्धमें कोई प्रश्न करना व्यर्थ है। किन्तु इस समय हमको महिलाओंकी रक्षाके लिये विचार करना चाहिये। यदि रास्ता खुला हो तो उनको ओरनबर्गकी ओर या किसी अन्य ऐसे दूरस्थ और सुरक्षित दुर्गमें शीघ्र भेजना चाहिये जहां डाकुओंके पहुंचनेकी सम्भावना न हो।"

आइवन-कौज़मिचने अपनी पत्नीकी ओर मुड़कर कहा,—

"क्यों, ठीक तो होगा वेसिलाइसा-इगोरोवना, जबतक हमलोग इन दुरात्माओंसे दुर्गके भाग्यका निर्णय करें तबतकके लिये तुम सबको कहीं अन्यत्र भेज देना अच्छा होगा।"

कमानडेण्टकी पत्नीने उत्तरमें कहा,—

"ये व्यर्थकी बातें हैं, मैं इन बातोंको नहीं सुननेकी। कौनसा ऐसा दुर्ग है जो गोलियोंसे सुरक्षित है? और यदि कोई है तो फिर बैलोगोर्स्क ही क्यों नहीं सुरक्षित है? हमलोग यहां बाईस-वर्षसे रह रहे हैं, हमने बाशकरों और किरगसोंका सामना किया है। इस नीच पावगाशफसे भी हम अपनी रक्षा कर सकेंगे।"

आइवन कौज़मिचने कहा,—

"अच्छी बात है वेसिलाइसा-इगोरोवना, यदि तुमको यहां रहना इतना प्रिय है और अपने दुर्गपर तुमको इतना भरोसा है, तो यहीं रहो। किन्तु मेरीके लिये कुछ उपाय करना चाहिये। यदि हमलोग आक्रमणकारियोंका सफल सामना कर सके या सहायता प्राप्त कर सकनेके समय तक अपनी रक्षा कर सके तब तो कोई बात ही नहीं है; किन्तु यदि दुर्ग विद्रोहियोंके अधिकारमें चला गया, तब?"

"क्यों तब—" इतना कहते कहते वेसिलाइसा-इगोरोवनाकी ज़बान लड़खड़ा गई, वह चुप हो रही और उसकी सरल मुखा-कृतिमें विकलताकी रेखायें फूट निकलीं।

कमानडेण्टने अपनी पत्नीके मन पर जीवनमें प्रथम वार अपने शब्दोंका प्रभाव पड़ता देख कर कहा,—

"वेसिलाइसा-इगोरोवना सुनो, हम जहांतक विचार करते है, यही अच्छा पाते हैं कि मेरीको यहांसे हटा दिया जाय। उसको हमलोग ओरनबर्गमें पोपकी धर्म-पत्नीके पास भेज दें। ओरनबर्ग एक सुरक्षित स्थान है, सेना भी पर्य्याप्त है और तोपोंकी

संख्या भी वहाँ अच्छी है ; फिर वहांका दुर्ग-प्राचीर प्रस्तर-निर्मित है। हम तो तुमको भी सम्मति देंगे कि तुम भी मेरीके साथ जाओ। क्योंकि यद्यपि तुम वृद्ध हो, किन्तु ईश्वर न करे, यदि कहीं लुटेरोंने आक्रमणमें सफलता पा ली और दुर्ग अपने अधिकारमें करलिया तो सोचो, तुमपर क्या बीतेगी !"

कमानडेण्टकी पत्नीने कहा,—

"अच्छी बात है, मेरीके भेजनेका प्रबन्ध कर दो। किन्तु मेरे लिये तुम अधिक चिन्ता न करो और न मुझे यहांसे जानेका आदेश दो। मैं यहीं रहूंगी। मुझे अब इस बुढ़ापेमें अपने साथसे अलग न करो। मुझे अब कितने दिन जीना है ? मैं उस अनजान प्रदेशमें अकेले मरना नहीं चाहती। हमलोग जीवनमें साथ रहे हैं, अब मरेंगे भी साथ ही।"

कमानडेण्टने कहा,—

"अच्छा, यही सही। किन्तु मेरीको भेजनेमें अब हमलोगोंको विलम्ब न करना चाहिये। जाओ और यात्राके लिये उसकी तयारी करा दो। कल तड़के उसे अपनी यात्रा पर चल पड़ना होगा। मार्गमें उसकी रक्षाके लिए हम कुछ सिपाही भी भेज देंगे, यद्यपि दुर्गमें इतने सिपाही नहीं हैं कि उनमेंसे एक भी छोड़ा जा सके। मेरी इस समय है कहाँ ?"

कमानडेण्टकी पत्नीने कहा,—

"अकोलाइना-पम्फाइलोवनाके पास। निजनोसर्न दुर्गको दुर्दशा सुनकर उसे मूर्च्छा आ गई। मुझे भय है कि वह

बीमार न हो जाय! प्रभो, हमलोग यह क्या देखनेके लिये अब-तक जीवित रहे!"

वेसिलाइसा-इगोरोवना पुत्रीको यात्राके लिये तयार करनेके लिये चली गई। कमानडेण्टके साथ हमलोग फिर परामर्श करने लगे। परन्तु इस परामर्श-समितिमें मैं फिर अधिक देरतक न बैठ सका। मेरे मनपर अन्यमनस्कताने अधिकार कर लिया, परामर्शकी बातें भी मुझे न सुन पड़ने लगीं। मैं शीघ्र ही वहांसे चला आया।

व्यालूके समय मैंने मेरी-अइवनोवनाको देखा कि रोते-रोते उसकी आंखें लाल हो गई हैं और मुखकी रंगत पीली पड़ गई है। हमलोगोंने चुपचाप खाना खाया। मैं नित्यकी अपेक्षा आज जल्दी मेज छोड़कर उठ खड़ा हुआ और कमानडेण्टके परिवारसे बिदा मांगकर अपने रहनेके क्वार्टरमें चला आया। आते समय मैं जानबूझकर अपनी तलवार भूल आया था, इसलिये कुछ देर बाद मैं अपनी तलवार लानेके लिये लौटा। मैंने अनुमान किया कि बहुत सम्भव है कि इस समय मेरी अकेली मिल जाय। मेरा अनुमान सत्य निकला। वह मुझे कमरेके दरवाजे पर मिली और उसने मेरी तलवार मुझे दी।

उसके आरक्त-नयन छलछला रहे थे। उसने कहा,—

अलविदा पीटर ऐण्ड्रियच, पिता मुझे ओरनबर्ग भेज रहे हैं। भगवान तुम्हें सुख और शान्तिसे रखें। यदि ईश्वरकी इच्छा होगी तो हमलोग फिर मिलेंगे। और यदि नहीं....."

उसकी हिचकियां बंध गई, आंसू गिरने लगे और वह आगे न बोल सकी। मैंने उसे गलेसे लगा लिया। मैंने कहा,—

"मेरे जीवनकी आधार और मेरी कामनाओंकी केन्द्र! अलविदा, मुझपर कुछ भी बीते, विश्वास रखना कि मेरी अन्तिम विचार-तरंग, मेरा अन्तिम हृदयोच्छ्वास और मेरी अन्तिम ईश-प्रार्थना तुम्हारे लिये—केवल तुम्हारे लिये होगी।"

मेरी अब भी मेरी छाती पर सर रखे रो रही थी। मैंने उसका चुम्बन किया और शीघ्रताके साथ कमरेसे बाहर चला आया।

सातवां परिच्छेद

आक्रमण

अपने कमरेमें पहुंचकर मैं कपड़े पहिने हुए ही लेट रहा; रातभर नींद नहीं पड़ी। मेरा विचार था कि तड़के दुर्ग-द्वार पर पहुंचकर मेरीसे अन्तिम बार अलविदा कह लूं। मैंने अपनेमें बड़ा परिवर्त्तन अनुभव किया। मेरे अन्तस्तलका उद्वेग उतना कष्टकर नहीं था जितना मेरी हताशा। वियोगकी वेदनाके साथ आसन्न-विपत्तिकी असहिष्णु प्रतीक्षा, एक अनिश्चित, किन्तु मधुर, आशा तथा महती आकांक्षाके भाव भी मिले हुए थे।

रात कब बीत गई इसकी मुझे ख़बर ही न हुई। मैं अपने

कमरेसे निकलने ही वाला था कि नायकने आकर मुझे सूचना दी, कि हमारे दुर्गके समस्त कासक रातमें किला छोड़कर चले गए हैं और अपने साथ यूलेको भी बल पूर्वक पकड़ ले गये हैं तथा दुर्गके इर्द-गिर्द अपरिचित सवार घूमते दिखाई दे रहे हैं।

मेरी-आइवनोवना अब अपनी रक्षाके लिये दुर्ग न त्याग सकेगी इस विचारने मेरे हृदयको भय-कातर कर दिया। मैंने शीघ्रताके साथ नायकको कुछ आज्ञायें दीं। और तत्काल दुर्गतिसे कमानडेण्टके भवनकी ओर चल पड़ा।

सवेरा हो चला था। मैं लम्बे पाँवों बढ़ा चला जा रहा था कि मैंने सुना कि किसीने मेरा नाम लेकर मुझे पुकारा। मैं रुक गया।

आइवन-इगनेटिचने मेरे पास पहुंचकर मुझसे कहा,—

"आप कहाँ जा रहे हैं? आइवन-कौजमिच दुर्ग प्राचीर पर हैं, उन्होंने मुझे आपको बुलानेके लिए भेजा है। पावगाशफ आ धमका है।"

मेरी आइवनोवना तो दुर्गसे सकुशल निकल गई न?" कम्पित हृदयसे मैंने प्रश्न किया,—

आइवन-इगनेटिचने कहा,—

"नहीं, वह नहीं जा सकी; ओरन बर्गकी सड़क नष्ट कर दी गई है दुर्ग चारों-ओरसे घिरा हुआ है। लक्षण अच्छे नहीं दिखाई देते पीटर ऐण्ड्रयच।"

आइवन-इगनेटिच और मैं दुर्ग-द्वार निकटस्थ मोरचेकी ओर

चल पड़े। दुर्गके निवासी सब वहाँ एकत्र थे। सेनाके सिपाही अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित होकर सैनिक नियमानुसार पंक्तियोंमें खड़े थे। तोप एक दिन पहले ही इस स्थान पर लाई जा चुकी थी। कमानडेण्ट अपने छोटेसे सैनिक दलके सामने टहल रहे थे। आसन्न विपत्तिने बूढ़े योद्धामें असाधारण तेजस्विता भर दी थी। दुर्गसे थोड़ी ही दूर पर सामने मैदानमें कुछ घोड़सवार देख पड़ते थे जो गिनतीमें लगभग बीसके होंगे। इनमें कुछ कासक थे और कुछ बाशकर।

कमानडेण्टने सिपाहियोंको सम्बोधित करके कहा,—

"मेरे प्यारे बच्चो, आज हमलोगोंको दृढ़ताके साथ जमकर अपनी साम्राज्ञीकी बात रखनी चाहिए, हमें संसारको दिखा देना चाहिए कि हमलोग वीर जातिमें जन्मे हैं और अपने वचनके सच्चे हैं।"

उत्तरमें सिपाहियोंने ज़ोरसे जय-घोष किया। शेव्रिन मेरे पास खड़ा था और बड़े ध्यानसे शत्रुकी ओर देख रहा था। आक्रमण-कारी घोड़सवार दुर्गकी गति देख कर एकत्र होकर परस्पर कुछ परामर्श करने लगे। कमानडेण्टने आइवन-इग्नेटिचको तोपका मुंह उनकी ओर कर देनेकी आज्ञा दी। फिर उन्होंने स्वयं अपने हाथसे तोपमें बत्ती दी। गोला सन्-सन् करता हुआ शत्रुओंके सिरपरसे निकल गया, किसीको चोट नहीं लगी। शत्रु तत्काल तितिर-बितिर होते देख पड़े। सवार तत्काल घोड़े दौड़ाकर अदृश्य हो गए। मैदान सूना हो गया।

इसी समय कप्तान-पत्नी वेसिलाइसा-इगोरोवना भी इस मोर्चाबन्दीके स्थानपर आ पहुंचीं। कप्तान-कन्या मेरी उसके साथ थी। वेसिलाइसा-इगोरोवनाने कहा,—

"युद्धकी क्या गति है? शत्रु कहाँ है?"

आइवन-कौजमिचने उत्तर दिया,—

"दूर नहीं है, ईश्वर करे सब कुशलसे बीते।.....हाँ, मेरी यहाँ तुम्हें भय तो नहीं लगता?"

मेरी-आइवनोवनाने कहा,—

"नहीं, पापा, मुझे अकेली घरमें रहने पर अधिक भय लगता है।"

फिर उसने मेरी ओर देखा और मुसकुरानेकी चेष्टा की। मेरा हाथ स्वयमेव तलवारकी मूठपर जा पड़ा। मुझे स्मरण हो आया कि गत रातमें मैंने मेरीके ही हाथसे इसे पाया था—मानों मेरी प्रियतमाने अपनी रक्षा करनेके लिए ही दिया था। मेरा कलेजा धड़क उठा। मैंने अपनेको उसका रक्षक समझा। मैं यह प्रमाणित करनेके लिए लालायित हो उठा कि मैं उसके विश्वासके उपयुक्त हूं और व्यग्रताके साथ आनेवाले क्षणोंकी प्रतीक्षा करने लगा।

अकस्मात दुर्गसे आध मील दूरस्थ एक टीलेके पीछेसे कुछ नए सवार निकल पड़े और देखते-देखते मैदान सशस्त्र मनुष्योंसे भर गया। इनमें सफेद घोड़ेपर सवार और लाल उरदीमें एक व्यक्ति देख पड़ा जो हाथमें नंगी तलवार लिये

था। यही प्रसिद्ध विद्रोही पावगाशफ था। उसने अपना घोड़ा रोक दिया, लोग उसके आस-पास एकत्र हो गये। ऐसा जान पड़ा कि उसने कोई आज्ञा दी, जिसे पूरा करनेके लिए चार सवार झुण्डसे अलग हो कर पूर्ण वेगके साथ दुर्गकी ओर दौड़े। हमलोगोंने पहिचाना कि इनमें हमारे वे लोग भी हैं, जो राज-विद्रोही हो कर शत्रुसे जा मिले हैं। इनमेंसे एक एक हाथमें एक कागज अपने सरसे ऊपर उठाये हुए और दूसरा अपने भालेमें यूलेका सिर छेदे हुए था जिसे उसने दुर्गके भीतर फेंक दिया। सिर दुर्गकी काष्ठ-प्राचीरको पार करके कमानडेंटके चरणोंके पास आ गिरा।

विद्रोहियों ने चिल्लाकर कहा,—

"गोली न चलाना! बाहर निकल कर जारकी अधीनता स्वीकार करो। जार यहां उपस्थित हैं।"

आइवन कौजमिचने कड़क कर वज्र-निनाद-स्वरसे कहा,—

"तुम अपनी रक्षा करो, और साथ ही अपने सिपाहियोंको गोली चलानेकी आज्ञा दो!"

हमारे सिपाहियोंने एक बाढ़ दागी। जो कासक पत्र लेकर आया था वह डगमगाया और घोड़ेसे नीचे गिर गया और, शेष भाग खड़े हुए। मैंने घूमकर मेरी-आइवनोवनाकी ओर देखा। यूलेका रक्त भरा सिर देखकर भयातुर और बाढ़के शब्दसे हतबुद्धि होकर वह एक तरह संज्ञाहीन हो गई थी। कमानडेण्टने नायकको अश्व-च्युत कासकके हाथसे कागज ले

आनेकी आज्ञा दी। नायक दुर्गसे निकल कर बाहर गया और मृत कासकके घोड़ेकी लगाम पकड़े हुए लौट आया और पत्र कमानडेण्टके हाथमें दे दिया। आइवन कौजमिचने स्वयं उसे पढ़ा और फिर टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया। इसी समय हम लोगोंने देखा कि शत्रु आक्रमण करनेके लिये तयार होकर आ गये। गोलियां चलने लगीं और तोरोंकी वर्षा होने लगी।

"वेसिलाइसा—इगोरोवना," कमानडेण्टने कहा,—"यहां स्त्रियोंका काम नहीं है। जाओ, और मेरीको भी ले जाओ। देखो न? मारे भयके वह जीते ही मृतवत् हो रही है।"

वेसिलाइसा-इगोरोवना गोली चल जानेके कारण विचलित हो उठी थी। अब उसने दुर्गके बाहर एक दृष्टि फेंकी और वहांकी हलचल देखकर अपने पतिसे कहा,—

"आइवन-कौजमिच, जीवन और मृत्यु ईश्वरके हाथ है। मेरीको आशीर्वाद दे दो। मेरी आओ, अपने पिताके पास आओ।"

विवर्ण, त्रस्त और कम्पित मेरी आइवन-कौजमिचके पास आई, उसने पिताके सामने घुटने टेक दिये और झुककर प्रणाम किया। वृद्ध कमानडेण्टने अपने हाथोंसे उसके ऊपर तीन बार क्रास-चिन्ह बनाया, फिर उसे उठा लिया, और उसका चुम्बन करके गद्गद् कण्ठसे कहा,—

"सदा सुखी रहो मेरी। ईश्वरकी आराधना करना, वह तुम्हें कभी न भूलेगा। यदि कोई सौम्य और सज्जन व्यक्ति मिल जाय तो उसे अपने प्रेमका अधिकारी और अपने जीवनका संगी

बना लेना और जिस प्रकार तुम्हारी मां और मैं प्रेमपूर्वक रहा हूं, तुम भी उसी प्रकार सुख और शान्तिसे रहना। बस, अब विदा हो। वेसिलाइसा-इगोरोवना, इसे शीघ्र ले जाओ।"

मेरी पिताके गलेमें बाहें डालकर जोरसे सिसक उठी।

कमानडेण्टकी पत्नीने विलखते हुए कहा,—

"आओ, हम लोग भी गले मिललें। अलविदा प्यारे आइवन-कौजमिच, क्षमा करना, यदि मैंने तुम्हें कभी किसी तरहका कष्ट दिया हो।"

कमानडेण्टने अपने सुख-दुखकी संगिनी पत्नीको गले लगाते हुए कहा,—

"हां, विदा, वेसिलाइसा-इगोरोवना विदा! बस, शीघ्र घर जाओ।"

कमानडेण्टकी पत्नी, पुत्रीके साथ अपने निवास-भवनकी ओर चल पड़ी। मेरी आंखोंने मेरिया-आइवनोवनाका अनुसरण किया। उसने घूमकर मेरी ओर देखा और सिर झुकाकर मुझे प्रणाम किया।

कमानडेण्ट हमलोगोंके पास लौट आये और उन्होंने अपना पूरा ध्यान शत्रुकी ओर लगा दिया। हमलोगोंने देखा कि विद्रोही पहले अपने नेताके आसपास एकत्र हुए और फिर अकस्मात् घोड़ोंसे नीचे उतर पड़े।

कमानडेण्टने गम्भीर स्वरमें कहा,—

अब सावधान हो जाओ। आक्रमण आरम्भ ही होनेवाला है।"

आकाश भीति-व्यञ्जक चिल्लाहटसे कम्पित हो उठा। विद्रोही दलने एक साथ दुर्ग पर धावा बोल दिया। हमारी तोप छर्रोंसे भरी तयार थी।

कमानडेण्टने उन्हें पास आजानेका अवसर दिया और उनके पास आ जाने पर अकस्मात् तोप दाग दी। शत्रु-दलमें छर्रे सावनकी झड़ीके समान बरस गये। शत्रु पीछे हटे और जिसे जिधर सूझा—भागकर तितिर-बितिर हो गये। केवल उनका नेता अपने स्थान पर डटा रहा और बड़े वेगसे अपनी तलवार हिला हिलाकर अपने अनुयायियोंको लौटकर फिर आक्रमण करनेको प्रोत्साहित किया। परिणाम यह हुआ कि पल भर पूर्व जो गर्जन-तर्जन शान्त हो गया सा जान पड़ा था—अधिक प्रबल रूपमें सुनाई देने लगा।

कमानडेण्टने कहा,—

"मित्रो, दुर्ग-द्वार खोल दो और नगारे पर चोट दे दो। चलो, अब हम लोग बाहर निकलें। आओ, बढ़ो। मेरे पीछे आओ।"

पलक मारनेमें तो विलम्ब लगता है, इससे भी कहीं शीघ्र कमानडेण्ट, आइवन-इग्नेटिच और मैं दुर्गसे बाहर निकल आये। किन्तु कायर दुर्ग-सैन्य टससे मस न हुई! आइवन-कौजमिचने चिल्लाकर कहा,—

"मेरे बच्चो! क्यों, रुके क्यों हो? मरना तो निश्चित है, तब आओ, अपना कर्त्तव्य पूरा करते हुए ही क्यों न मरें?"

इसी समय शत्रुओंने दुर्ग-द्वारमें प्रवेश करनेके लिये धावा

बोल दिया। नगारा बजना बन्द हो गया। दुर्गसैन्यने शस्त्र फ क दिये। मैं धरती पर गिरा, किन्तु झटपट उठकर शत्रुके साथ-साथ मैंने भी दुर्गमें प्रवेश किया। कमानडेण्ट पर आक्रमण हुआ। वे आहत हुये, उनके सरसे रक्त-स्राव होने लगा। बहु-संख्यक लुटेरे उनको चारों ओरसे घेरकर, कुर्निशयां देनेके लिये विवश करने लगे। मैंने चाहा कि उनको सहायता दूं। भीड़ चीरकर मैंने उनके पास पहुंचनेकी चेष्टा की। किन्तु कई एक बलशाली कासकोंने मुझे बलपूर्वक रोक लिया। और अपने पटकोंसे कसकर मुझे सम्बोधित करके कर्कश-स्वरमें कहा,—

"ठहरो, अभी तुमको इसका मजा चखाया जायगा, तुम राज-विद्रही हो, तुमने स्वयं जारके साथ उद्दण्डता और अविनय की है।"

हमलोगोंको घसीटते हुए सैनिक गलियोंमें पहुंचे। वहांके निवासी अपने-अपने घरोंसे रोटी और नमक लेकर बाहर निकल आये। स्वागत-सूचक घण्टे बज उठे। अकस्मात् भीड़मेंसे किसीने पुकारा,—

"जार दुर्ग-प्रांगणमें बन्दियोंकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। बन्दियों-को ले चलो। जार वहीं इनसे राजभक्तिकी शपथ लेंगे।"

भीड़ बाजारकी ओर मुड़ गई, जिन लोगोंके हाथमें हम बन्दी थे वे भी हमलोंको घसीटते हुए उधर ही चल पड़े।

पावगाशफ कमानडेण्टके भवनके पास आराम कुरसी पर बैठा हुआ था। वह लेसदार कासक कैपटन पहिने हुए थे।

शीस पर समूरकी ऊंची टोपी थी जिसमें सुनहली झालर लटक रही थी। उसको देखकर मुझे ऐसा जान पड़ा कि मानों इसे कहीं देखा है। उसके आसपास प्रधान कासक सरदार खड़े थे। फादर ग्रेसिम हाथमें क्रास लिये उदास खड़े थे। उनका शरीर कांप रहा था। वे मौन थे, पर मानों मौन-भाषामें ही सम्मुख उपस्थित क़ैदियों पर दया करनेकी प्रार्थना कर रहे थे। सूलीके खम्भे शीघ्रतासे खड़े किए जा रहे थे। हमलोग घसिटते हुए पास पहुंचे। भीड़ पीछे दूर हटा दी गई और हम लोग पाव-गाशफके सामने उपस्थित किये गये। घण्टोंका बजना बन्द हो गया और चारों ओर गम्भीर शान्ति छा गई।

उस जाली जारने प्रश्न किया,—

"कमानडेण्ट कौन है?"

वह कासक अरदली जो हमलोगोंसे विद्रोही होकर शत्रुओंसे जा मिला था, शीघ्रताके साथ भीड़ चीड़कर आगे आया। उसने आइवन-कौज़मिचकी ओर अंगुली उठाई।

पावगाशफने कुछ क्षण तक आइवन-कौजमिचकी ओर धमकी और ताड़ना भरी दृष्टिसे देखकर कहा,—

"तुमको मेरा—अपने सम्राटका विरोध करनेका कैसे साहस पड़ा?"

रक्त-स्रावके कारण कमानडेण्टका शरीर अत्यन्त निर्बल हो रहा था। फिर भी उन्होंने अपनी रही-सही शक्तिको सञ्चित किया और गम्भीर दृढ़-स्वरमें उत्तर दिया,—

"तुम हमारे सम्राट नहीं हो। तुम एक प्रतारक डाकू हो।"

पावगाशफके मुखपर भीषण क्रूरताका भाव झलक पड़ा। उसने अपना सफेद रूमाल हिलाया। तत्काल कई एक कासकोंने वृद्ध कप्तानको पकड़ लिया और घसीटते हुये सूलीके खम्भोंके पास ले आये। जिस अंग-भंग बाशकरको कल हमलोगोंने पकड़ा था और जिससे कुछ पता लगानेकी चेष्टा की थी किन्तु अन्तमें यह देखकर कि उसके जीभ ही नहीं है—विफल मनोरथ हुये थे—वही बाशकर आज सूलीको संभालता हुआ देख पड़ा। हाथमें वह रस्सी लिये हुए था। मिनटोंकी देरमें विचारे आइवन-कौजमिचका निर्जीव शरीर अधरमें झूल उठा। अब आइवन-इग्नेटिच पावगाशफके सामने लाया गया। पावगाशफने कहा,—

"सम्राट पीटर फेडरोविककी अधीनता स्वीकार करो और राजभक्तिकी शपथ लो।"

आइवन-इग्नेटिचने भी कप्तानके शब्दोंको दुहरा दिया,—

"तुम हमारे सम्राट नहीं हो, तुम केवल डाकू प्रतारक और प्रवञ्चक हो।"

पावगाशफने फिर अपना रूमाल हिलाया। लेफ्टिनेण्ट आइवन-इग्नेटिच भी कप्तानके बगलमें झूलता दिखाई दिया।

अब मेरी बारी आई। मैंने उपेक्षा और निर्भीकताके साथ पावगाशफकी ओर देखा और अपने साथियोंके उत्तरको दुहरानेके लिए प्रस्तुत हो गया। इसी समय मैंने शेब्रिनको शत्रु-दलमें देखा। उसके बाल कटे हुये थे और वह कासक

काफ़ून पहिने हुये था। उसने पावगाशफके निकट जाकर उसके कानमें चुपचाप कुछ कहा। पावगाशफ बिना मेरी ओर देखे हुए पुकार उठा,—

"ले जाओ, इसे भी सूली पर चढ़ा दो।"

रस्सी मेरे गलेमें डाल दी गई। मैंने मनही मन ईश-प्रर्थना प्रारम्भ की। मैंने खुले हृदयसे अपने अपराधोंका पश्चात्ताप किया और अपने स्नेहियों, सगे-साथियोंको सुखी और शान्त रखनेके लिये दयालु ईश्वरसे दया-भिक्षा मांगी। मैं अब ठीक सूलीकी टिकठीके नीचे था।

सम्भवतः वास्तवमें इस इच्छासे कि मेरा साहस न टूटे जल्लादोंने कहा,—

"डरो नहीं, डरो नहीं।"

अचानक मैंने सुना,—

"जल्लादो, ठहरो।"

जल्लाद रुक गये। मैंने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई, देखा कि, सेवलिच पावगाशफके पैरोंपर घुटने टेके हुये है। सेवलिचने पावगाशफसे कहा,—

"दयामूर्त्ति, इस युवककी मृत्युसे आपको क्या लाभ होगा? इसकी नव-वयस्कता पर तरस खाइये और इसे छोड़ दीजिये। इसके बदलेमें आप जितनी सम्पति चाहेंगे आपको मिलेगी। यदि लोगोंको डरानेके लिये कुछ उदाहरण ही उनके सामने

रखने हों तो इस युवकको जाने दीजिये और आदेश कीजिये, यह बुड्ढा सूलीपर लटकनेके लिये उद्यत है।"

पावगाशफने संकेत किया। तत्काल मेरे गलेसे रस्सी हटा दी गई; जो लोग मुझे पकड़कर लाये थे वे पुकार उठे,—

"हमारे दयालु महाराजने तुमको क्षमा कर दिया।"

मेरे हृदयकी अत्यन्त विचित्र अवस्था हो गई। मैं नहीं कह सकता कि मैं अपनेको मुक्त देखकर प्रसन्न हुआ अथवा खिन्न। मेरी भावनायें अस्त-व्यस्त हो उठीं। मैं फिर पावगाशफके सामने लाया गया। पावगाशफके सामने घुटना टेकनेके लिये लोगोंने मुझे विवश किया। पावगाशफने अपनी दृढ़, हृष्ट-पुष्ट और लम्बी भुजा मेरी ओर फैला दी। चारो ओरसे लोग एक साथ पुकार उठे,—

"चूमलो, महाराजका हाथ चूम लो।"

किन्तु मैंने इस प्रस्तावको अत्यन्त घृणाकी दृष्टिसे देखा। इसकी अपेक्षा मैं भयंकरसे भयंकर क्रूरतापूर्ण दण्ड सहना उत्तम समझता था।

सेवलिच मेरे पीछे खड़ा था, उसने मेरी कुहनीमें धीरेसे धक्का दिया और चुपकसे कहा,—

"प्यारे पीटर ऐण्ड्रियच, हठ न करो। तुम्हारा जाता ही क्या है? चूम लो।"

किन्तु मैं अचल रहा। पावगाशफने मुसकराते हुए यह कहकर हाथ खींच लिया,—

"जानपड़ता है, मुक्त होनेकी प्रसन्नताके मारे इस समय ए॰ अपने आपेकी सुध नहीं है।"

मैं मुक्त कर दिया गया, और वहीं खड़ा होकर भय और त्रास-का अभिनय देखने लगा।

नगर-निवासी अधीनता और आज्ञाकारिताकी शपथ लेने लगे। वे एक एक करके आने लगे और क्रासका चुम्बन करके पावगाशफके सामने सिर झुकाने लगे। अन्तमें दुर्ग-सैन्यकी बारी आई। सैनिक नाईने कतरनी लेकर सिपाहियोंके बाल कतर डाले। सिपाहियोंने सिर झुकाया और फिर पावगाशफका हाथ चूमा। पावगाशफने उनको क्षमा-प्रदानकी घोषणा की और अपने अनुगामियोंमें सम्मिलित कर लिया।

लगभग तीन घण्टे तक यह लीला होती रही। इसके समाप्त होनेपर पावगाशफ अपने प्रमुखोंके साथ उठ खड़ा हुआ। एक सफेद घोड़ा सामने लाया गया। दो कासकोंने हाथका सहारा देकर उसको घोड़े पर चढ़ा दिया। उसने फादर जिरेसिमको सूचना दी कि हम आपके साथ भोजन करेंगे। इसी समय किसी स्त्रीका चीखना सुन पड़ा। कुछ दुष्ट वेसिलाइसा-इगोरोवनाको सीढ़ि-योंकी ओर घसीट रहे थे। उसके बाल बिखरे हुये थे और कपड़े अनेक स्थान पर फट गये थे। उसका सब सामान लूट लिया गया था। कुछ लुटेरे उसका पलंग लिये जा रहे थे और कुछ उसकी पेटियां। कुछ लोगोंने उसके कपड़े हथियाये थे और कुछने उसके बर्त्तन। सारांश, लूटमें जिसके हाथ जो कुछ पड़

गया था वही वह लेभागा था। एक लुटेरेने तो उसका बहु-मूल्य गाउन स्वयं पहिन लिया था!

विचारी वृद्धा चिल्ला उठी,—

"आह, मुझे छोड़ दो, दया करो मुझपर। मुझे आइवन-कौजमिचके पास ले चलो।"

अचानक उसकी दृष्टि तिकठीकी ओर जा पड़ी। उसने चीखकर कहा,—

"दुष्टो, बेईमानो! तुमने यह क्या किया!—आह मेरे प्यारे आइवन-कौजमिच, मेरे जीवनकी ज्योति! शौर्य्यकी मूर्त्ति। प्रशियन संगीनें और तुर्कोंके गोले तुमको नहीं लगे। वीर युद्धमें तुम्हारी मृत्यु नहीं हुई; हाय नीच लुटेरेके हाथों तुम्हें मरना पड़ा!

पावगाशफने कहा,—

"इस कुतियाकी ज़बान बन्द करो।"

एक युवा कासकने तलवारसे उसकी खोपड़ीपर ठोकर दी। वह सीढ़ियोंसे नीचे गिरी और उसका प्राण पखेरू उड़ गया। पावगाशफने अपना घोड़ा बढ़ाया, भीड़ उसके पीछे चल पड़ी।

आठवां परिच्छेद ।

—:o:—

अनिमंत्रित अतिथि ।

दुर्ग-प्रांगण जन-शून्य हो गया। मैं अकेला हतबुद्धि होकर उसी स्थान पर खड़ा रह गया। इस समय मेरी अवस्था बड़ी विचित्र थी। हृदय क्षुब्ध था और मन ज्ञान-शून्य था।

मेरीके भाग्यकी अनिश्चितता मुझे अन्य विचारोंकी अपेक्षा अधिक कष्ट दे रही थी।

वह कहां होगी? उस पर क्या बीती? क्या उसने किसी सुरक्षित स्थानमें छिप कर बचनेका प्रयत्न किया होगा? इस प्रकारकी उधेड़-बुनमें लीन मैं कप्तानके भवनकी ओर चला। भवन जन-शून्य था। कुर्सियां, मेजें और पेटियां तोड़ डाली गई थीं, चानीके बर्तन टुकड़े टुकड़े कर डाले गये थे। प्रत्येक सामान तहस-नहस कर डाला गया था। एक छोटासा जीना मेरीके कमरेको गया था। जीवनमें आज मैंने पहली बार इस जीने पर पर रखा। पलङ्ग टूटा पड़ा था, अलमारियां खुली और खाली पड़ी थीं। एक छोटासा लैम्प अब भी जल रहा था। पास ही दीवाल पर दर्पण टँगा था। इस दिव्य स्थानकी निवासिनी देवी कहां गई? एक भयङ्कर धारणाने मेरे हृदयमें जागृत होकर मुझे

अधीर कर दिया। मैंने सोचा कि निश्चय वह डाकुओंके हाथमें पड़ गई ... ... मुझे जान पड़ा कि मेरा दिल बैठ गया ... ... मैं मेरियाको पुकार कर धाड़ मार कर रो पड़ा।..... इसी समय मुझे किसीके आनेकी क्षीण आहट सुनाई दी। मैंने देखा कि उदास और विमर्ष पलाशका धीरे धीरे आ रही है। पास आकर उसने कहा—

"हाय, पीटर ऐण्ड्रयच, यह क्या हुआ?"

मैंने व्यग्रताके साथ पूछा,—

"और, मेरी आइवनोवना? मेरी आइवनोवनाकी क्या दशा है?

पलाशकाने कहा,—

"मेरी जीती है। वह अकोलाइना-पम्फाइलोवनाके घरमें छिपी है।"

मैंने भयभीत होकर कहा,—

पादरीकी स्त्रीके यहां? हा, प्रभो! पावगाशफ भी वहीं गया है!"

मैं तीरकी तरह कमरेसे बाहर निकला और पलभरमें गलीमें आ खड़ा हुआ। फिर बिना इधर-उधर दृष्टि डाले हुए सीधा पादरीके घरकी ओर चला। वहां पहुंच कर बाहरसे मैंने हास-परिहास, गाने-तराने, राग-रङ्ग और हँसीके ठहाके सुने।..... मित्रों सहित पावगाशफका आतिथ्य हो रहा था। पलाशका मेरे पीछे-पीछे आई थी। मैंने उसको पादरीकी पत्नीको चुपचाप बुला लानेके लिये कहा। कुछ क्षण पश्चात अकोलाइना-पम्फाइ-

लोवना दरवाजे पर आई ; उसके हाथमें एक खाली बोतल थी। मैंने अकथनीय आकुलताके साथ पूछा,—

"ईश्वरके लिये, शीघ्र बताओ मेरी कहां है ?"

पादरीकी पत्नीने कहा,—

"मेरी, मेरे शयनकक्षमें लेटी हुई है। भयङ्कर दुर्भाग्य उदय हुआ था पीटर ऐण्ड्रियच, किन्तु ईश्वरको धन्यवाद है कि कुशल रही और विपद टल गई। बड़े कमरेमें उसका आतिथ्य हो रहा है। पास ही मेरा कमरा है, दीवाल बीचमें है, दरवाजे पर परदा पड़ा हुआ है। जिस समय यह दुष्ट भोजनके लिये बैठा, ठीक उसी समय मेरी कराह उठी, मेरे प्राण सूख गये। कराहना उसने सुन लिया। उसने पूछा,—

"वृद्धा, तुम्हारे कमरेमें कौन कराह रहा है ?"

मैंने झुक कर उसका सम्मान किया और उत्तर दिया,—

"मेरी भतीजी है ज़ार, कोई पन्द्रह दिनसे बीमार है।"

"क्या तुम्हारी भतीजी जवान है ?"

"हां, ज़ार।"

"तब उसे मुझे दिखाओ।"

मेरा हृदय बैठ गया। पर उपाय क्या था! मैंने विनीत-स्वर-से कहा,—

"बहुत अच्छा ज़ार, किन्तु बेटीको चेत नहीं है; चेत भी होता तो उसमें इतना सामर्थ्य नहीं कि वह खाटसे उठकर श्रीमानके सामने उपस्थित हो।"

"अच्छा, हम स्वयं जाकर उसको देखेंगे।"

वह उठा और कमरेके द्वार पर आया। परदा उठा कर उसने अपनी बाज़की-सी आँखोंसे भीतर झांककर देखा। ईश्वरने हमलोगोंकी सहायता की। मेरी अचेत थी। अतएव वह उसे पहचान न सकी। वह फिर आगे न बढ़ा, झांककर कमरेके दरवाजेसे ही लौट पड़ा। तुम विश्वास करना, उस समय मैं और फ़ादर जिरेमिस-मृत्युको आलिङ्गन करनेके लिये प्रस्तुत हो चुके थे। हाय, मुझे अपने जीवनमें क्या-क्या देखना बदा था! आइवन-कौजमिच! वेसिलाइसा-इगोरोवना! और आइवन-इग्नेटिच! ये सब क्यों मार डाले गये? तुम इन जल्लादोंके हाथसे कैसे बच सके? और हां, सुनो तो, शेब्रिनके सम्बन्धमें तुम्हारा क्या विचार है? उसने अपने बाल कटवा डाले हैं और इस समय शत्रुओंके साथ बैठ कर आनन्दसे खा-पी रहा है। वह बड़ा धूर्त है! मैंने जब कहा कि मेरी भतीजी बीमार है, तो तुम सच मानना, उसने मेरी ओर चुभती हुई दृष्टिसे देखा। किन्तु बड़ी बात हुई, उसने भेद नहीं खोला। इसके लिये मैं उसको धन्यवाद देती हूं।"

इसी समय मुझे मेहमानोंकी मतवाली चिल्लाहट सुनाई पड़ी। वे शराब मांग रहे थे और फ़ादर जिरेसिम अपनी पत्नीको पुकार रहे थे। पादरीकी धर्मपत्नीने कहा,—

"बस पीटर ऐण्ड्रियच, लौट जाओ। इस समय मैं तुमसे बात करनेके लिये नहीं ठहर सकती। वे शराबके लिये मेरी राह देख रहे हैं। मुझे डर लगता है कि कहीं तुम उन चाण्डालोंके

हाथ न पड़ जाओ। अलविदा पीटर-ऐण्ड्रयच, जो बदा है होगा। ईश्वर पर भरोसा करना चाहिये।"

पादरीकी पत्नी आतुरताके साथ घरके भीतर चली गई। मेरे मनको कुछ ढाढ़स बँधा ; मैं अपने क्वार्टरकी ओर लौटा। दुर्ग-प्रांगणमें पहुंच कर मैंने देखा कि कई एक बाशकर तिकठोंके पास एकत्र हैं, और जो लोग सूली पर चढ़ाये गये थे उनके पैरोंसे जूते उतार रहे हैं।

मेरा क्रोध भड़क उठा, किन्तु यह सोच कर कि इन लोगोंसे कुछ कहना व्यर्थ होगा—बड़ी कठिनाईसे मैंने अपने क्रोधको रोका। लुटेरे दुर्गके प्रत्येक भागमें पहुंचे और अफसरोंके घरोंको जीभर कर लूटा और बरबाद किया। जहां देखो वहीं मतवाले बलवाई हा-हो कर रहे थे। मैं घर पहुंचा, सेवलिच चिन्तित और म्लान भावसे मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे देखते ही उसने कहा,—

"धन्यवाद भगवानको। मैं सोच रहा था कि कहीं वे चाण्डाल तुम्हें फिर तो नहीं पकड़ ले गये? हाय पीटर ऐण्ड्रयच, लुटेरे सर्वस्व लूट ले गए—कपड़े, बर्त्तन, कुरसी, पलङ्ग कुछ भी नहीं बचा पर, खैर, इसकी क्या परवाह है। तुम्हारी जान बच गई, यही बहुत कुछ है। ईश्वरको धन्यवाद है। पर, हां, भैया पीटर, क्या तुमने इन दुष्टोंके मुखियाको पहिचाना?"

मैंने उत्तर दिया,—

"नहीं, मैंने तो नहीं पहिचाना! क्यों? कौन है?"

सेवलिचने कहा,—

"क्या तुम उस धूर्त शराबीको भूल गये जिसने तुमसे सराय में अङ्गरखा ठग लिया था ? वह शशचर्म-निर्मित-नया अंगरखा ! याद आया ? "

"मुझे आश्चर्य हुआ। सचमुच मैंने उस मार्ग दर्शक और पावगाशफके रंग-रूपमें विचित्र समानता पाई। मुझे निश्चय हो गया कि यह पावगाशफ ही मेरा मार्ग-दर्शक था। मैं सूलीसे क्यों छोड़ दिया गया इसका ठीक कारण अब मेरी समझमें आया। घटनानुक्रम पर मैं विस्मयाभिभूत हो गया। एक अंग-रक्षेने मुझे जल्लादोंकी फांसीसे बचाया और एक शराबी जिसका जीवन आवारह पनमें बीता है—आज दुर्गों पर आक्रमण कर रहा है और साम्राज्यको हिला रहा है !

ममत्वपूर्ण स्वरसे सेवलिचने कहा,—

"भूख लगी होगी पीटर, कुछ खाओगे नहीं ! घरमें तो कुछ है नहीं। पर मैं जाता हूं, कुछ खोजकर लाता हूं और तुम्हारे खानेका प्रबन्ध करता हूं।"

सेवलिच चला गया, मैं अकेला रह गया और विचार-लहरीमें फिर डूब गया। अब मुझे क्या करना चाहिये ? दुर्ग पर शत्रुका अधिकार है। इस दशामें यहां रहना या शत्रुका साथ देना एक अफसरके लिये कलङ्ककी बात है। कर्त्तव्य कहता था कि मुझे अन्य किसी ऐसे स्थान पर चला जाना चाहिये जहाँ मैं इस संगीन अवस्थामें अपनी पितृ-भूमिकी सेवा करके अपने जन्मको

सार्थक कर सकू.....किन्तु प्रेम दृढ़तापूर्वक अनुरोध कर रहा था मेरी के पास रहने और उसकी रक्षा करनेके लिये।

एक कासकने मेरे सोच-विचारमें बाधा डाली। उसने आकर मुझे सूचना दी,—

"महान ज़ारने आपको अपने सामने उपस्थित होनेकी आज्ञा दी है।"

जानेके लिये तयार होते हुए मैंने पूछा,—

"कहां पर?"

कासकने कहा,—

"कमानडेण्टके भवन में। भोजन करनेके बाद उन्होंने स्नान किया और अब आराम कर रहे हैं। यह स्पष्ट है कि वह एक विशिष्ट व्यक्ति हैं। उनके सभी काम शाहाना हैं। स्नान करते समय लोगोंने देखा कि उनकी छाती पर ज़ारके चिन्ह अंकित हैं,—एक ओर कोई पांच कापक (सिक्का) के बराबर दो सिर वाला ईगल और दाहिनी ओर स्वयं उनका चित्र था....."

मैंने उसकी बातोंका विरोध करना अनावश्यक समझा और कमानडेण्टके भवनकी ओर यह अटकल लगाता हुआ चला कि वहां मुझ पर क्या बीतेगी।

जब मैं कप्तानके घर पहुंचा, उस समय अंधेरा हो रहा था। सूलीकी तिकठी फिर मुझे देख पड़ी, लाशें अभी भी उसमें झूल रही थीं और वह अन्धकारके कारण काली और भयङ्कर जान पड़ती थी। बिचारी कमानडेण्टकी पत्नीका शव अब भी

वहीं सीढ़ियोंके पास पड़ा हुआ था और दो कासक शव-रक्षा पर नियुक्त थे। जो कासक मुझे बुलाने गया था, उसने भीतर जाकर पावगाशफको मेरे आनेकी खबर दी और शीघ्र ही बाहर आकर मुझे अपने साथ उस कमरेमें ले गया जिसमें पूर्व दिन संध्या समयमें मेरी आइवनोवनासे मैंने करुणा पूर्ण बिदा ग्रहण की थी।

मैंने देखा, मेज पर कपड़ा बिछा है, उसके ऊपर कुछ बोतलें और कुछ प्याले रखे हैं। पावगाशफके साथ लगभग दस कासक सरदार बैठे हैं। प्रत्येकके सिर पर रंगीन टोपी है और शरीर पर कमीज। सुरा-सेवनके कारण सब उत्तेजित थे और उनके मुंह तमतमाये हुये और आंखें लाल हो रही थीं। इनमें शेब्रिन और उसका विद्रोही साथी वह अरदली कासक नहीं थे।

पावगाशफने मुझे देखते ही कहा,—

"अह, हा! महाशय, इस पार्टीमें हम आपका स्वागत करते हैं।"

कासक सरदार थोड़ा-थोड़ा खिसक गये। मैं मेजके एक किनारे पर बैठ गया। पार्श्व-स्थित नवयुवक रूपवान कासकने प्याला भरकर मेरे सामने रखा। किन्तु मैंने प्याला स्पर्श नहीं किया। मैं अन्वेषक दृष्टिसे सबको ध्यान-पूर्वक देखने लगा। पावगाशफ सम्मानित स्थान पर आसीन था। उसकी कुहनियाँ मेज पर थीं और हथेलियाँ काली डाढ़ीमें छिपी हुई थीं। इस समय उसकी आकृतिमें भयङ्करताका स्थान सरलताने ले लिया था। पावगाशफ बीच बीचमें अपने पार्श्व-आसीन व्यक्तिसे जिसको

वयस पचासके लगभग होगी, बातचीत करता जाता था। सब लोग एक दूसरेके प्रति मित्रताका व्यवहार करते थे और अपने नेताके प्रति कोई विशिष्ट सम्मान नहीं प्रदर्शित कर रहे थे। प्रातःकालके आक्रमण और प्राप्त विजयका विषय छिड़ा था और भविष्य आक्रमणके सम्बन्धमें परामर्श हो रहा था। प्रत्येक अपनी-अपनी वीरताका गान गाकर आक्रमणमें जिस प्रकार भाग लिया था, विस्तार सहित वर्णन कर रहा था। तर्क-वितर्क और वाद-विवादमें अवसरके अनुसार प्रत्येक निर्भीकताके साथ पावगाशफके प्रस्तावोंका विरोध या समर्थन कर रहा था। अन्तमें सबने निश्चय किया कि ओरनबर्ग पर आक्रमण करनेके लिये कल यात्रा कर देनी चाहिये।

पावगाशफने कहा,—

"मित्रो, यहाँसे उठनेके पहिले मेरा वह प्यारा संगीत हो जाना चाहिये। शोमकाफ, आरम्भ करो।"

मेरे पास बैठे हुये नव-वयस्क कासकने कर्कश स्वरमें गाना आरम्भ किया। शेष सबने कोरसके रूपमें भाग लिया।

"ऐ ओकके हरे वृक्षो! न हिलो, मेरे ध्यानमें विघ्न न डालो। कल मुझे कोर्टके सामने, कठोर न्यायाधीशके सामने, स्वयं जारके सामने जाना होगा। जार मुझसे पूछेगा,—

"ऐ युवक, ऐ किसानके लड़के, मुझसे बता, तूने किसके साथ मिलकर चोरी की, तूने किसके साथ मिलकर यह लूटमार की? क्या तेरे बहुतसे साथी थे?"

"मैं बतलाऊंगा, सत्य विश्वास करनेवाले ऐ ज़ार! तुम्हारे सामने मैं सत्य-सत्य ही स्वीकार करूंगा। मेरे साथी गिनतीमें चार थे, मेरा पहिला साथी था अन्धेरी रात, मेरा दूसरा साथी था फौलादी चाकू, मेरा तीसरा साथी था मेरा अच्छा घोड़ा और मेरा चौथा साथी था मेरा दृढ़ धनुष। ताव खाये हुये तीखे तीर मेरे दूत थे। मेरे शब्दों पर विश्वास करो ज़ार।"

"तब मेरी आशा, सत्य-विश्वास परायण ज़ार बोला, शाबश! अच्छा किया मेरे वीर किसान पुत्र, तुमने समझा है, कि कैसे लूट-मार की जाती है और कैसे उत्तर दिया जाता है इसलिये मैं तुमको एक इमारत भेंट करूंगा—मैदानके बीचमें सीधे और ऊंचे दो खम्भे होंगे और उनके ऊपर एक तिरछा लट्ठा रखा होगा।"

इस 'सूलीके संतीत' का मुझपर जो प्रभाव पड़ा मैं वर्णन करने में असमर्थ हूं। गानेवालोंकी भयंकर आकृतियाँ, उनका मधुर स्वर और उनका अपनी भाव भंगी द्वारा गानेके अस्पष्ट शब्दोंको उदासी और खिन्नाताका भाव प्रदान करना देखकर मेरा हृदय काल्पनिक भयसे भर उठा।

एक एक ग्लास शराब और पीनेके बाद सबलोग खड़े हो गये और पावगाशफसे विदा ग्रहण कर चले गये।

मैं भी उनके साथ जाने लगा, किन्तु पावगाशफने मुझसे कहा,—

"बैठिये, मैं आपसे कुछ बातें करूंगा।"

मैं बैठ गया। अब कमरेमें केवल दो ही व्यक्ति थे, एक मैं और दूसरा पावगाशफ। दोनों आमने सामने बठे थे।

कुछ क्षण तक हमलोग चुप रहे। पावगाशफ स्थिर दृष्टिसे मेरी ओर देख रहा था। और बीच बीचमें हंसी और चालाकीसे परिपूर्ण एक विचित्र अन्वेषक भावसे बाईं पलक मारता जाता था। अन्तमें वह खिलखिलाकर हंसने लगा। हंसी और मनो विनोदके इस विचित्र ढंगका परिणाम यह हुआ कि उसकी ओर देखकर, मैं भी हंसने लगा। मैं नहीं कह सकता कि मैं क्यों हंसने लगा। उसने कहा,—

"अच्छा, महाशय, इस समय अब आपको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि जिस समय हमारे अनुगतोंने आपके गलेमें सूलीपर खींचनेके लिये रस्सी डाला थी उस समय आप अत्यन्त भीत और त्रस्त हो गये थे। हमारी धारणा है कि यह वृहत और विस्तृत आकाश आपको उस समय भेड़की खालसे अधिक बड़ा न देख पड़ा होगा जिस समय कि.....यदि आपका नौकर न आ गया होता तो निस्सन्देह आप सूलीपर चढ़ा दिये गये होते। सामने आते ही उस बुड्ढेको हमने तत्काल पहिचान लिया। अच्छा बतलाइये, क्या आपने कभी सोचा था कि उस अंधड़में आपको सरायका रास्ता बता देनेवाला व्यक्ति स्वयं महान ज़ार था?"

उसके मुखपर रहस्य-पूर्ण महानताकी झलक आ गई। उसने फिर कहा,—

"आपने हमारा विरोध करके एक गुरुतर अपराध किया था किन्तु, मैंने आपके सद्गुणों पर दृष्टि डालकर आपका अपराध क्षमा कर दिया। क्षमा करनेका एक और भी कारण है; जब मैं शत्रुओंके भयसे छिपनेके लिये विवश हो रहा था तब आपने मेरी सहायता की थी। किन्तु अब वे दिन पलट गये हैं। अब हम सम्राट हैं। हम आपका उच्चसे उच्च सम्मान करनेके लिये प्रस्तुत हैं। क्या हार्दिक चाव और आवेशके साथ मेरी सेवा करनेके लिये आप प्रतिज्ञा करेंगे।"

उस धूर्तकी धृष्टता और उसका प्रश्न मुझे कुछ ऐसा विचित्र प्रतीत हुआ कि मैं अपनी मुसकुराहट न रोक सका। मुझे मुसकुराते देखकर उसकी आकृति बदल गई, दृष्टि गंभीर हो गई, भवें तन गईं और माथे पर बल पड़ गये। उसने कहा,—

"आप मुसकुराये क्यों? कदाचित आपको यह विश्वास नहीं हो रहा कि मैं ही महान जार हूं? कहिये, यही बात है न? स्पष्ट उत्तर दीजिये।"

चिन्ताने मुझे अस्थिर कर दिया। एक दस्युको सम्राट स्वीकार करना मेरे लिए असम्भव था। ऐसा करना मुझे अक्षम्य कायरता प्रतीत हुई। उसके मुंहपर उसको दस्यु कहनेमें भी मैंने अपनी मृत्यु निश्चित समझी। इस समय आवेशका वह उत्तेजना पूर्ण भाव हृदयमें नहीं था जिसके कारण जनसमूहके सामने सूलीके नीचे खड़े होकर उसको दस्यु कहनेके लिये मैं प्रस्तुत था। पावगाशफ खिन्नतापूर्ण मौन भावसे मेरे उत्तरकी

प्रतीक्षा कर रहा था। अन्तमें मैं प्रकृतिस्थ हुआ, कर्त्तव्य-भावनाने मेरी मानसिक दुर्बलता पर विजय प्राप्त की। मैंने आत्म-सन्तोषके साथ पावगाशफको उत्तर दिया,—

"सुनिये, मैं अपना विचार आपके सामने स्पष्ट रख रहा हूं। आप ही न्याय कीजिए कि मैं आपको सम्राटके रूपमें किस प्रकार स्वीकार कर सकता हूं? मेरी धारणा क्या है? आप ऐसे बुद्धिमान व्यक्तिसे कहनेकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती।"

पावगाशफने गम्भीर स्वरमें कहा,—

"तब आपकी समझमें मैं कौन हूं?"

मैंने अपनेको सँभालकर उत्तर दिया,—

"ईश्वर जाने, आप जो हों, पर इसमें सन्देह नहीं कि आप बड़े जोखोंका खेल खेल रहे हैं।"

पावगाशफने एक तीव्र दृष्टि मेरे ऊपर डाली और कहा,—

"तब आपको विश्वास नहीं है कि मैं सम्राट पीटर हूं? अच्छा, यही सही। किन्तु क्या सफलता वीरताका पुरस्कार नहीं है? क्या इस विशाल रूस प्रदेशके राज्य-सिंहासन पर आसीन होकर किसी समय अ्रिशका-ओट्रेपियकने यहांका शासन नहीं किया? आप मुझे कुछ भी समझें किन्तु मुझसे असहयोग न करें। ज़ार कोई भी हो उससे आपका क्या आता जाता है। पोपकी गद्दीपर जो बैठे वही पोप है। सचाई और फरमाबरदारीसे मेरी सेवा कीजिए। मैं आपको फील्डमार्शल और प्रिंस बना दूंगा। बतलाइये, आप क्या कहते हैं?"

मैंने दृढ़ताके साथ उत्तर दिया,—

"नहीं, मैं जन्मसे एक सभ्य व्यक्ति हूं। मैंने सम्राज्ञीकी अधीनताकी शपथ ली है। मैं आपकी सेवा नहीं कर सकता। यदि आप मेरे वास्तवमें शुभचिन्तक हैं तो मुझ ओरनबर्ग लौट जाने दीजिए।"

उसने कहा,—

"यदि हम आपको लौट जाने दें तो क्या आप कमसे कम यह वचन देंगे कि अपनी शक्तियोंको हमारे विरोधमें न व्यय करेंगे?"

मैंने उत्तरमें कहा,—

"मैं यह प्रतिज्ञा कैसे कर सकता हूं! आप स्वयं समझ सकते हैं कि यह मेरी इच्छापर निर्भर नहीं है। यदि मुझे आदेश मिले कि मैं आपका सामना करनेके लिये जाऊं तो मुझे अवश्य जाना पड़ेगा। कोई उपाय नहीं है। इसमें मेरा कोई वश नहीं है। आप स्वयं एक प्रधान हैं। आप अपने अनुगामियोंसे आज्ञाकारिता चाहते हैं। यह कैसे सम्भव है कि जब साम्राज्यको मेरी सेवाओंकी आवश्यकता हो तब मैं सेवासे मुंह मोड़ लूं। मेरा जीवन आपके हाथमें है। यदि आप मुझको छोड़ दीजिएगा, मैं आपको धन्यवाद दूंगा; और, यदि मार डालिएगा तो ईश्वर आपका न्याय करेगा। जो हो। मैंने आपसे सब सच कह दिया।"

मेरी स्पष्ट-वादिताने पावगाशफ पर प्रभाव डाला। उसने

मेरे कन्धेपर धीरे-धीरे थपकियाँ देते हुये कहा,—

अच्छा, तब यही सही। मेरा नियम है पूर्ण दण्ड या पूर्ण क्षमा, दोमेंसे केवल एक होना चाहिये। जहां आपकी इच्छा हो जइये, और जो कुछ आपकी इच्छा हो कीजिये। कल प्रातःकाल यहांसे विदा होते समय मुझसे मिल लीजियेगा। जाइये, अब इस समय सोइये, मुझे स्वयं नींद आ रही है।"

मैं पावगाशफको कमरेमें अकेला छोड़कर गलीमें आ गया। रात सुनसान और ठण्ढी थी। चन्द्रमा निकल आया था; और दुर्ग-प्रांगण तथा सूलीके काष्ठ खंडोंपर प्रकाश डाल रहा था। सब ओर शान्ति थी। चारो ओर घरोंमें अन्धकार था केवल शराबखानेमें एक क्षीण प्रकाश हो रहा था। वहां विलासिताके अनन्य भक्त अब भी सुरासेवन कर रहे थे। उनका शोर गुल कभी कभी रात्रिकी नीरवता भंग कर देता था। मेरी दृष्टि पोपके घरपर पड़ी। मैंने देखा कि खिड़कियां और दरवाजे सब बन्द थे। घरमें पूर्ण सन्नाटा जान पड़ा।

अपने क्वार्टरमें पहुंचकर मैंने सेवलिचको बैठा हुआ पाया। मेरे लौटनेमें विलम्ब होनेके कारण वह बड़ा उदास और अधीर हो रहा था। मेरे मुक्त होनेका समाचार सुनकर उसे अकथनीय आनन्द हुआ। उसने कहा,—

"सर्वशक्तिमान भगवानको धन्यवाद है! कल तड़के ही हमलोग दुर्ग त्याग देंगे और जहां ईश्वर ले जायगा, चले जांयगे। मैंने तुम्हारे लिये कुछ खानेको बना रखा है, खालो

भैया पीटर, और फिर शान्तिसे सो रहो। मानों तुम क्राइस्टकी गोदमें हो।"

मैंने उसकी सलाह मान ली; तुरन्त भरपेट खाना खाया। शरीर और मस्तिष्क दोनों ही श्रान्त और क्लान्त हो रहे थे। अतएव खाली भूमिपर ही लेट रहा और लेटते ही सो गया।

नवां परिच्छेद

विदा

दूसरे दिन प्रातःकाल धौंसेकी ध्वनि सुन कर मैं जग पड़ा और सभा स्थानकी ओर गया। पावगाशफके अनुगामी सूलीके आस पास पंक्तियोंमें खड़े थे। कासक घोड़ों पर सवार थे और पैदल सिपाही अपने अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित थे। झण्डे लहरा रहे थे। कई एक तोपें जिनमें एक हमारे दुर्गकी भी थी तोप गाडियोंमें रख दी गई थीं। दुर्गके सम्पूर्ण निवासी वहां एकत्र थे और पावगाशफकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कमानडेण्टके भवनके सामने एक कासक किरगस जातिका एक सुन्दर सफेद घोड़ा तैयार किये खड़ा था। मैंने कमानडेण्टकी पत्नीके शवको देखनेके लिये आँखें दौड़ाईं। मैंने देखा कि शव एक ओर हटा

दिया गया था और उस पर एक चटाई डाल दी गई थी। अन्ततः पावगाशफ घरसे बाहर निकला। जन समूहने अपनी अपनी टोपी उतार ली। उसके अनुगामियोंने झुककर उसको अभिवादन किया। एक सरदारने तांबेके सिक्कोंसे भरी हुई एक थैली उसके हाथमें रख दी। उसने मुट्ठियां भर भर कर इधर-उधर सिक्के बिखेरना आरम्भ किया। सिक्के लूटनेके लिये परस्पर धक्कम धक्का और छीना-झपटी होने लगी। पावगाशफके प्रधान अनुगामी उसके पास एकत्र हो गये। उनमें शेव्रिन भी था। मेरी और उसकी आंखें चार हुईं। उसने तिरस्कारभरी दृष्टिसे मेरी ओर घूर कर अत्यन्त घृणा और उपेक्षाका भाव प्रकट करते हुए, आंखें फेर लीं। पावगाशफने मुझे भीड़में खड़े देखा और सिर हिला कर अपने पास बुलाया। मैं भीड़से निकल कर उसके पास आया।

"सुनो" उसने कहा,—"ओरनबर्ग शीघ्र जाओ और वहांके गवर्नर और जनरलोंसे मेरी ओरसे कह दो कि वे मेरी प्रतीक्षा करें, मैं वहां सप्ताहके भीतर-भीतर पहुंचूगा। उनको यह भी समझा देना कि सन्तान की पिता के प्रति जो भक्ति और श्रद्धा होती है उसी भक्ति और श्रद्धा के साथ मेरा स्वागत करने के लिये प्रस्तुत रहें नहीं तो भयकर दण्ड के भागी होंगे। आपकी यात्रा शुभ हो।"

फिर जनसमूहको सम्बोधित करके और शेव्रिनकी ओर अंगुली उठाकर उसने कहा,—

"प्यारे बच्चो, यह तुम्हारे नये कमानडेण्ट हैं। सब प्रकारसे इनकी आज्ञापालन करो। इस दुर्ग और तुम लोगोंका सारा उत्तर-दायित्व इन्हीं पर रहेगा।"

इन शब्दोंको मैंने त्रस्त भावसे सुना। शेव्रिन अब इस दुर्गका गवर्नर हुआ है। :मेरी-आइवनोवना: अब इसके शासनाधिकारमें होगी! आह! प्रभो, उसका क्या परिणाम होगा?

पावगाशफ घोड़ेके पास आया और तीव्रताके साथ उन कासकोंकी बिना प्रतीक्षा किये हुये घोड़े पर सवार हो गया जो उसको चढ़नेमें सहायता देनेके लिये आ रहे थे।

इसी समय सेवलिच भीड़को चीर कर बाहर निकलता देख पड़ा। उसने आगे बढ़कर पावगाशफको एक लम्बा कागजका टुकड़ा दिया। मैं कुछ अनुमान न कर सका कि वह यह क्या कर रहा है।

पावगाशफने पूछा,—

"यह क्या है?"

सेवलिचने कहा,—

"इसे पढ़िये, आप स्वयं समझ लेंगे कि क्या है?"

पावगाशफने कागज ले लिया और बड़ी देर तक अभिमान-पूर्ण दृष्टिसे कागजकी ओर देखता रहा। अन्तमें उसने कहा,—

"इतना अस्पष्ट क्यों लिखते हो। हम इसका एक अक्षर भी नहीं पढ़ सकते। हमारा चीफ सेक्रेटरी कहाँ है।"

एक नवयुवक तत्काल झपट कर पावगाशफके पास आया। पावगाशफने उसको कागज देते हुए कहा,—

"इसे जोरसे पढ़ो।"

मेरे हृदयमें यह जाननेके लिये उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई कि सेवलिचने क्या लिखकर पावगाशफको दिया है। चीफ सेक्रेटरीने उच्च-स्वरमें पढ़ना आरम्भ किया,—

"दो गाउन, एक सूती और एक रेशमी, मूल्य छ रबल।"

पावगाशफने आँखें तरेर कर कहा,—

"इसका क्या अर्थ है?"

सेवलिचने शान्ति पूर्वक कहा,—

"और आगे पढ़नेकी आज्ञा दीजिये।"

चीफ सेक्रेटरीने फिर पढ़ना आरम्भ किया,—

"एक कोट हरे रङ्गका मूल्य सात रबल।

"एक जोड़ा सफेद जांघिया पांच रबल।

"दो कमीज हालैण्ड लिनेनकी दस रबल....."

"एक पेटी और चायके सामान ढाई रबल....."

पावगाशफने चिल्लाकर कहा,—

"यह सब क्या वाहियात लिख रखा है, इन कोट, कमीज, जांघियोंसे मुझसे क्या सरोकार है?"

सेवलिचने गला झाड़कर उत्तर दिया,—

"श्रीमान, यह हमारे मालिकके असबाबकी तालिका है जो इन बदमाशोंने लूट लिया है....."

पावगाशफने सेवलिचको धमकी देते हुए तीखे स्वरसे कहा,—

"किन बदमाशोंने ?"

सेवलिचने कहा,—

"क्षमा कीजिये सरकार, मुझसे भूल हुई। ये बदमाश नहीं है आपके साथी हैं, जिन्होंने हमारा रत्ती-रत्ती घर ढूंढ़कर सब सामान लूट लिया। आप रोष न करें, एक बार सब सुन तो लें कि कौन-कौन सा कितना सामान है। आगे पढ़नेकी आज्ञा दीजिये।"

पावगाशफने कहा,—

"पढ़ो, और आगे पढ़ो।"

सेक्रेटरी फिर पढ़ने लगा,—

"एक पलङ्गका चादर छींटका, चार रबल।

"एक लोमड़ी-चर्म्म अंगरखा, चालीस रबल।

"एक शशक-चर्म्म गाउन, जो आपको पहिरनेके लिये सरायमें दिया गया था।"

पावगाशफकी आंखें अंगारेके समान लाल हो गईं, उसने चिल्लाकर कहा,—"इसका क्या अभिप्राय है।"

मैं यह स्वीकार करता हूं कि मुझे अपने नौकर-विचारे सेवलिच-के लिये बड़ी चिन्ता हुई। वह उपर्युक्त बातकी और व्याख्या करने जा रहा था किन्तु पावगाशफने कड़क कर उसे रोक दिया। और सेक्रेटरीके हाथसे कागज छीन कर, सेवलिचके मुंह पर फेंक कर कहा,—

मूर्ख तुझे यह साहस कैसे पड़ा ? यह तेरा दुर्भाग्य है। सुन बुड्ढे, तुझे सदैव हमारे और हमारे अनुगामियोंके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिए कि तू और तेरा मालिक—दोनों हमारे अन्य विरोधियोंके साथ सूली पर नहीं लटका दिए गए..... शशक-चर्म-गाउन ! क्या तू नहीं जानता कि यदि मैं आज्ञा दे दूं तो अभी जीते जी तेरी खाल निकाल ली जाय और उसका गाउन बनाया जाय ?"

सेवलिचने कहा,—

"जो इच्छा सरकारकी, किन्तु मैं स्वाधीन नहीं हूं, सामानके लिये अपने मालिकके सामने उत्तरदायी हूं।"

उस समय पावगाशफका चित्त अत्यन्त प्रसन्न था। इसलिए बिना और कुछ कहे-सुने उसने घोड़ेकी बाग मोड़ दी। शेव्रिन तथा उसके अन्य प्रधान अनुगामी पीछे-पीछे चले। सैनिक-दल दुर्गके बाहर करीनेसे निकला। भीड़ पावगाशफके साथ ही आगे बढ़ी। दुर्ग-प्रांगणमें अब केवल मैं और सेवलिच रह गए। सेवलिचके हाथमें मेरे सामानकी तालिका थी। वह बड़े ध्यानसे उसीको देखता हुआ गहरे पश्चात्तापमें खड़ा था।

मेरे साथ पावगाशफका अच्छा सलूक देख कर सेवलिचने अवसरसे लाभ उठाना चाहा था पर बेचारेको सफलता न हुई। मैं उसकी मूर्खता पर उसे झिड़कना चाहता था किन्तु मुझे बेतरह हंसी आ गई।

सेवलिचने कहा,—

"हंसो, खूब हंसो। किन्तु जब ये सब कपड़े बनवाने बैठोगे तब मैं देखूंगा कि इसी प्रकार हंसते हो या नहीं!"

मैं आतुरताके साथ मेरी आइवनोवनाको देखनेके लिये पादरीके घरकी ओर चला। वहां पहुंचने पर पादरीकी पत्नीने यह अशुभ समाचार सुनाया कि रातसे मेरी-आइवनोवनाको बड़े वेगका ज्वर है। वह अचेत लेटी है। पादरीकी पत्नीके साथ मैं उस कमरेमें गया जिसमें मेरी-आइवनोवना थी। मैं धीरेसे उसके पलङ्गके पास पहुंचा। उसकी आकृतिका परिवर्त्तन देखकर मैं शंकित हो उठा। उसने मुझे नहीं पहिचाना। मैं बड़ी देर तक खड़ा रहा। फादर ग्रेसिम भी आ गये। मुझे अधीर देखकर दोनों जनोंने मुझे समझा-बुझा कर धीरज बधानेकी चेष्टा की। चिन्ताने मुझे घेर लिया। मातृ-पितृ-हीना, सर्वस्व विहीना मेरी-आइवनोवनाकी शोचनीय दशा, दुर्गमें नियम-नीति-रहित निरङ्कुश विद्रोहियोंका अधिकार, अपनी सामर्थ्य-हीनता और विवशता आदि बातोंको सोचकर मैं व्याकुल हो उठा। सबसे अधिक चिन्ता मुझे शेब्रिनके कारण हुई। उस धूर्त्तने शेब्रिनको इस दुर्गका गवर्नर बनाया है, शेब्रिन मेरीसे घृणा करता है वह शैतान सब तरहकी बदमाशी कर सकता है। मुझे क्या करना चाहिये? मेरी-आइवनोवनाकी सहायता कैसे करूं? इन दुष्टोंके हाथसे उसे कैसे छुड़ाऊँ? केवल एक उपाय है। मैंने ओरनबर्ग जाकर और वहांसे सेना लेकर जितनी जल्दी सम्भव हो, दुर्गको विद्रोहियोंके हाथसे निकाल लेनेका निश्चय किया। मैंने पादरी और

उनकी पत्नीको अपनी निश्चित भावी पत्नी—मेरी-आइवनोवनाकी देखभाल करनेका अनुरोध किया और फिर उनसे बिदा ली। उस असहाय बालिकाका हाथ मैंने चूमा; मेरे आंसू टपक पड़े।

पादरीकी पत्नीने दरवाजे तक मेरे साथ आकर कहा,—

"यात्रा शुभ हो और कामनाएं पूर्ण हों पीटर ऐण्ड्रियच, कदाचित फिर किसी अनुकूल समयमें हमलोग मिल सकें। हमको भूल न जाना, वहां पहुंच कर पत्र लिखना। बेचारी मेरी-आइवनोवनाके अब कोई नहीं है, तुम्हीं उसे ढारस देनेवाले हो और तुम्हीं उसके रक्षक हो।"

दुर्ग-प्रांगणमें पहुंच कर मैं पल भरके लिये रुक गया। मैंने सूलीके खम्भोंको झुककर प्रणाम किया और दुर्गसे बाहर निकल कर ओरनबर्गकी राह ली। सेवलिच साथ था।

बिचारोंकी उधेड़-बुनमें पड़ा हुआ मैं धीरे-धीरे चल रहा था। अकस्मात पीछेकी ओरसे मुझे घोड़ेकी टाप सुनाई दी। मैंने घूमकर देखा एक कासक सवार एक बाशकर जातिके घोड़ेकी बाग पकड़े हुए सरपट मेरी ओर आ रहा था। उसने मुझे रुकनेके लिये संकेत किया; मैं रुक गया। जब वह कुछ और आगे बढ़ा, मैंने पहिचाना कि वह हमलोगोंका वही पुराना अरदली है। पास आकर वह अपने घोड़ेसे उतर पड़ा। दूसरे घोड़ेकी बाग मेरे हाथमें देकर उसने कहा,—

"महाशय, हमारे सरकारने आपके लिये यह घोड़ा और यह एक अंगरखा भेजा है।" उसने घोड़े पर रखे हुए भेड़-चर्म्म-अंग-

रखेकी ओर अंगुली उठाई, फिर कुछ हिचकिचाकर उसने कहा,—

"सरकारने आपके लिये आधा-रबल भी भेजा था। किन्तु—किन्तु मुझसे वह सड़क पर कहीं गिर गया। आप दया करें और मुझे क्षमा करें।"

सेवलिच उसकी तिरछी दृष्टिसे देखकर बड़बड़ा उठा,—

"सड़कमें गिर गया या जेबमें? सड़कमें गिर गया तो जेबमें यह क्या खनखना रहा है पाजी कहींके?"

अरदलीने तत्काल उत्तर दिया,—

"जेबमें क्या खनखना रहा है? कार्टरकी तालियां पड़ी हैं, बुड्ढे, ईश्वरको डर।"

मैंने विवादका अन्त करते हुये कहा,—

"हां, ठीक है, अच्छा, अब तुम जाओ। अपने सरकारसे हमारा धन्यवाद कहना। रास्तेमें सड़कपर खोया हुआ अर्ध-रबल ढूंढ़ लेना, शराब पीनेके काम आयेगा।"

उसने अपने घोड़ेको मोड़ते हुये कहा,—

"बहुत अच्छा सरकार, मैं सदा ईश्वरसे आपकी मंगल-कामना करूंगा।"

इन शब्दोंके साथ अरदली लौट पड़ा, उसने घोड़ेको दौड़ा दिया, एक हाथ उसका जेबमें था। देखते-देखते वह आंखसे ओझल हो गया।

मैं अँगरखा पहिन कर घोड़े पर सवार हो गया और अपने

पीछे सेवलिचको बिठा कर घोड़ा हांक दिया। सेवलिचने कहा,—

"देखो पीटर ऐण्ड्रियच, उस धूर्त्तको सामानकी तालिका देना व्यर्थ नहीं हुआ। वह स्वयं लज्जित हुआ है। तभी तो यह घोड़ा और अंगरखा भेजा है। यद्यपि यह रद्दी भेड़-चर्मका अंगरखा और यह सुस्त घोड़ा हमारे लूटे गए सामानका आधा भी नहीं है फिर भी भागे भूतकी लंगोटी ही बहुत है। इनसे हमारा कुछ न कुछ उपकार होगा ही।

दसवां परिच्छेद।

घेरा

ओरनबर्ग पहुंच कर हमने कैदियोंका एक बृहत् समूह काम करते देखा। इन कैदियोंके सिर मुंडे हुए और चेहरे बिगड़े हुए थे। जल्लादोंकी संडसियोंने इनके चेहरोंको बिगाड़ा था। इनके कामकी देखभाल सैनिकदल कर रहा था। कुछ कैदी प्राचीर सुधारनेमें लगे थे और कुछ खाईं भरनेमें, कुछ खुरपोंसे मिट्टी खोद रहे थे और कुछ एक पहियेकी गाड़ीमें मिट्टी भर भर कर जहां आवश्यकता थी, वहां पहुंचा रहे थे। राज प्राचीरके टूटे स्थानोंकी मरम्मत कर रहे थे। सन्तरीने दुर्ग-द्वार पर हमलोगोंको रोका और पासपोर्ट मांगा। यह सुनकर कि मैं बैलोगोर्स्क-दुर्ग

से आ रहा हूं, सारजण्टने तत्काल मुझको जनरलके भवनमें पहुंचा दिया।

जनरल वाटिकामें था। जिस समय हम लोग पहुंचे वह सेबके वृक्षोंको देख रहा था; जिनके पत्ते वसन्त-समीरमें गिर गये थे। जनरल एक बुड्ढे मालीकी सहायतासे उन पौधोंको पुआलसे ढक रहा था। उसकी आकृतिसे शान्ति, स्वास्थ्य और भलमनसाहत व्यक्त होती थी। मुझे देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ। बेलोगोर्स्क-दुर्गकी हृदय-हिलानेवाली भयंकर घटनाका मैं प्रत्यक्ष-दर्शी साक्षी था, अतएव जनरलने मुझसे प्रश्न पर प्रश्न करना प्रारम्भ किया। मैंने जो कुछ वहां बीता था, विस्तार-पूर्वक कह सुनाया। वृद्ध जनरल मेरी बातें सुनता जाता था और पौधोंसे सूखे पत्ते अलग करता जाता था। मेरे दुर्गकी दुख भरी कहानी आद्योपान्त सुनकर उसने कहा,—

"आह! बेचारा माइरोनाफ! मुझे उसकी मृत्यु पर हार्दिक खेद है; वह एक योग्य अफसर था और मैडम माइरोनाफ बड़ी ही भली स्त्री थी। वह कितना सुन्दर अचार बनाती थी? और हां, कप्तानकी कन्या—मेरीका क्या हुआ?"

मैंने उत्तरमें कहा,—

"वह दुर्गमें ही पोपके घर पर है।"

जनरलने कहा,—

"यह बुरा है—बहुत बुरा है! लुटेरोंका कोई विश्वास नहीं, उस बेचारी बालिका पर न जाने क्या विपद आवे?"

मैंने उत्तर दिया,—

"बैलोगोर्स्क दुर्ग दूर नहीं है, और निस्सन्देह श्रीमान एक दल सैनिक भेज कर दुर्गके उद्धारमें विलम्ब न करेंगे।"

जनरलने संशयात्मक भावसे सिर हिलाया और कहा,—

"हम इसपर विचार करेंगे। इस पर विचार करनेके लिए यथेष्ट समय है। आज सन्ध्या समय कृपया मेरे घर पर चायका निमंत्रण स्वीकार कीजिए; मेरे यहां समर-समितिकी बैठक होगी। इस धूर्त्त पावगाशफ तथा उसकी सेनाके सम्बन्धमें आप हमें विश्वास योग्य खबर दे सकेंगे। अच्छा, इस समय आप जाय और कुछ देर आराम करें।"

मेरे ठहरनेके लिये जो क्वार्टर निश्चय हुआ था, मैं वहां गया; सेवलिच वहां पहिले ही पहुंच चुका था। वहां पहुंच कर मैं अधीरता पूर्वक निश्चित समय की प्रतीक्षा करने लगा। पाठक सरलता पूर्वक यह कल्पना कर लेंगे कि जनरलके भवनमें जो समर समितिकी बैठक होनेवाली थी उसमें उपस्थित होनेसे मैं नहीं चूका; क्योंकि उसमें एक ऐसे प्रश्नके छिड़नेकी सम्भावना थी जिसका प्रभाव मेरे भाग्य पर बहुत अधिक पड़ता। मैंने निश्चित समय पर जनरलके भवनके लिए प्रस्थान किया।

मैंने वहां नगरके एक सिविल अफसर, कर-विभागके डाइरेक्टरको बैठे पाया। वह वृद्ध था पर था हृष्ट-पुष्ट। उसके मुखकी लालिमा शारीरिक बलकी द्योतक थी। वह रेशमी कोट पहिने हुए था। उसने मुझसे आइवन-कोज़मिचकी बातचीत छेड़ी

और कहा कि वह उनके दोस्त थे। मैं वैलोगर्स्क दुर्ग और कप्तान-का हाल बतलाने लगा। बीच बीचमें अतिरिक्त प्रश्नों और नैतिक मन्तव्य प्रकाशन द्वारा वह मेरे वर्णनमें विघ्न उपस्थित करता था। उसके इन प्रश्नों और मन्तव्योंसे यद्यपि सैनिक रीति-नीतिसे उसकी अनभिज्ञता प्रकट होती थी तथापि यह भी स्पष्ट हो जाता था कि वह एक चिन्ता-शील और समझदार मनुष्य है। इसी समय अन्य निमंत्रित लोग भी आ गये। और यथा आसन आसीन हो गये। चाय आई सबके सामने प्याले रख दिये गये। तत्पश्चात जनरलने कहा,—

"सज्जनो! आज हम लोगोंको निश्चय कर लेना चाहिए कि वाग़ियोंके विरुद्ध हमें कैसे काम करना चाहिए; आक्रमणात्मक विधिसे या रक्षात्मक विधिसे। दोनों ही तरीकोंकी अपनी ख़ास सुविधाएं और असुविधाएं हैं। आक्रमण करनेमें शत्रुके शीघ्र विनाश होनेकी अधिक सम्भावना होती है और रक्षात्मक विधिसे कार्य्य करनेमें जोखिमकी सम्भावना कम होती है.....इसलिए हमें इस संबन्धमें नियमित क्रमसे मत लेना चाहिए अर्थात् पदमें सबसे छोटेका मत पहले लेना चाहिए।"

जनरलने मुझको सम्बोधित करके कहा,—

"अच्छा, आप अपने विचार प्रकट करें।"

मैं खड़ा हुआ। पावगाशक और उसके अनुगामियोंके सम्बन्धमें थोड़े शब्द कहकर मैंने अपनी दृढ़ सम्मति प्रकट की

कि धूर्त्त पावगाशफकी सैनिक-व्यवस्था ऐसी नहीं है कि वह कवायद परेड सीखी हुई सेनाका सामना कर सके।

सिविल अफसर मेरी सम्मति सुन कर बड़े असन्तुष्ट हुये। उन्होंने मेरी सम्मतिमें केवल यौवन-सुलभ आतुरता और निर्भीकताका अनुभव किया। वे उपेक्षा व्यञ्जक भावसे बड़बड़ा उठे और फिर आपसमें काना-फूसी करने लगे। जनरलने मेरी ओर देखा और मुसकरा कर कहा,—

"समर-समितिमें आरम्भमें आक्रमणात्मक विधिका अनुसरण करनेके पक्षमें ही राय मिला करती है। अच्छा अब हमको देखना चाहिये कि और लोगोंकी सम्मति किस पक्षमें है।"

जनरलने कालेजके कौंसिलरको सम्बोधित करके कहा,—

"आप अपनी सम्मति प्रकट कीजिये।"

रेशमी कोट पहिने हुए एक ठिंगने वृद्ध मनुष्यने अपने चायके तीसरे प्यालेको जिसमें उसने इस बार थोड़ी सी रम (मदिरा) भी मिला ली थी, शीघ्रताके साथ पीकर कहा,—

"मेरी समझमें श्रीमान, हम लोग न आक्रमणात्मक विधिसे काम लें और न रक्षात्मक विधिसे।"

जनरलने विस्मयान्वित होकर कहा,—

"कौंसलर महाशय, यह कैसे? वर्त्तमान सैनिक नीतिमें दो ही प्रणालियां हैं—आक्रमणात्मक या रक्षात्मक....."

"मेरा अभिप्राय कूटनीतिसे काम लेनेका है।"

"ओह! अब मैं समझा, आपका विचार निसन्देह विवेकयुक्त

है। सैनिक नीतिमें इससे भी काम लेनेका आदेश है। हम लोग आपके उत्तम विचारसे लाभ उठानेकी चेष्टा करेंगे। गुप्त कोष है ही.....हम घोषणा करेंगे कि जो उस धूर्त्तका सिर लायेगा उसे साठ, सत्तर या पूरे सौ रबल पुरस्कारमें मिलेंगे....."

कर-विभागके डाइरेक्टरने बात काट कर कहा,—

"और तब ऐसा करने पर यदि लुटेरे अपने नेताको हाथ पैर बांध कर हमारे हवाले न कर दें तो हम बाज़ी बदते हैं।"

जनरलने कहा,—

"हम इस विषय पर फिर बिचार करेंगे। किन्तु, हर हालतमें हमलोगोंको सैनिक तैयारी तो करनी ही होगी। महाशयो, आप लोग क्रमशः अपनी-अपनी सम्मति दीजिए।"

सबने मेरी सम्मतिका विरोध किया। सिविल अफसरोंने एक मत हो कर दुर्गस्थित सेनापर अविश्वास, आक्रमण करने पर सफलतामें अनिश्चय और सावधान तथा सतर्क रहनेकी आवश्यकता प्रकट की। सबने कहा कि खुले मैदानमें निकल कर शस्त्रों द्वारा भाग्य-परीक्षा करनेकी अपेक्षा प्रस्तर-प्राचीरकी ओटमें, तोपके आश्रयमें रहना अधिक हितकर होगा। जब सबलोग अपनी सम्मतियाँ दे चुके तब जनरलने अपने पाइपको झिटककर राख झाड़ी और कहा,—

"महाशयो, अब मैं अपना विचार भी आपलोगोंके सामने प्रकट कर देना उचित समझता हूं। मैं पूर्ण रूपसे आक्रमणात्मक प्रणालीका पक्षपाती हूं। क्योंकि इसके सम्बन्धमें समर-नीतिमें

जो नियम-उपनियम बतलाये गये हैं वे इतने गम्भीर और इतने युक्ति-युक्त हैं कि रक्षात्मक प्रणालीकी अपेक्षा आक्रमणात्मक प्रणाली सब प्रकारसे श्रेयस्कर जंचती है।"

जनरल इतना कहकर रुका और अपनी पाइप फिरसे भरना शुरू किया। मेरी आत्मश्लाघा हरी हो गयी। मैंने सिविल-अफसरों पर जो असन्तुष्ट और अधीर होकर परस्पर आपसमें कानाफूसी कर रहे थे, एक गर्व-भरी चितवन फेंकी। जनरलने तमाखूके धूम्र-समूहको एक घटाके रुपमें मुंहसे निकालकर, गहिरी साँस ली और कहा,—

"किन्तु, महाशय गण, प्रस्तावित प्रश्न साम्राज्यके गौरव और प्रान्तकी रक्षाका प्रश्न है। इतने बड़े उत्तरदायित्वको मैं केवल अपने सिरपर लेनेका साहस नहीं कर सकता। मैं बहु-सम्मतिके सामने झुकता हूं। बहु-सम्मतिने स्थिर किया है कि दुर्गके भीतर, प्राचारके निकट रहकर शत्रुकी प्रतीक्षा की जाय और तोपों द्वारा तथा, सम्भव हो तो, दुर्गसे निकलकर प्रत्याक्रमण द्वारा शत्रुका आक्रमण विफल किया जाय। अतएव, मैं इसी मार्गका अवलम्बन करता हूं।"

इस वार अफसरोंने मेरी ओर व्यंग्य-पूर्ण दृष्टिसे देखा। समिति समाप्त हुई। मुझे सुयोग्य जनरलकी इस निर्बलता पर बड़ा खेद हुआ कि उसने अपने निश्चयका स्वयं विरोध किया और अनजान तथा अनुभव-हीन व्यक्तियोंके परामर्शानुसार कार्य्य करना निर्धारित किया।

सत्य-प्रतिज्ञ पावगाशफ़ने ओरनबर्ग पर चढ़ाई की। मैंने दुर्गकी उच्च-प्राचीरसे उसकी सेनाका निरीक्षण किया। बैलोगोर्स्क दुर्गपर उसने जितनी सेनासे आक्रमण किया था उससे इस बारकी सैन्य-संख्या अधिक थी। पावगाशफ विजित दुर्गोंकी तोपें अपने साथ ले लेता था, अतएव अब उसके पास तोपोंकी भी एक अच्छी संख्या हो गई थी। उस दिन यहाँकी समर-परामर्श-समितिने जो कुछ निर्णय किया था उसे स्मरण कर मुझे यह स्पष्ट भास गया कि शीघ्र ही दुर्ग अवरुद्ध हो जायगा और मारे क्रोधके मुझे रुलाई आ गई।

ओरनबर्ग घिर गया। मैं यहां इसका वर्णन नहीं करना चाहता, क्योंकि इसका सम्बन्ध इतिहाससे है न कि घरेलू चर्चासे। किन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगा कि स्थानीय शासकोंकी दुर्बुद्धि और असावधानीके कारण ओरनबर्गके निवासी महान संकटमें पड़ गये। वे भूखों मरने लगे और प्रत्येक प्रकारके अभावको अनुभव करने लगे। कहना नहीं होगा कि ओरन वर्गका जीवन असह्य हो उठा। सब शोक मिश्रित आकुलताके साथ भाग्यके अन्तिम निर्णयकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नगरमें भीषण अकालसे चारो ओर हहाकार मच गया। नगरनिवासी अपने घरोंकी छतोंपर गिरनेवाले शत्रुके गोलोंके अभ्यस्त हो गये। यहां तक कि पावगाशफके आक्रमणके कारण भी कोई विशेष उत्तेजना न पैदा हुई। अकर्मण्यताके कारण मैं मृतकसा हो रहा था। बैलोगोर्स्कसे पत्र न मिलनेके कारण चिन्ताके मारे म व्याकुल हो उठा।

सड़कें रोक दी गई थीं। मेरी-आइवनोवनाका वियोग अब मेरे लिये असह्य हो उठा। उसके भाग्यकी अनिश्चिततासे मुझे अत्यन्त कष्ट होने लगा।

पावगाशफके घेरेका कु-प्रभाव दिन-दिन बढ़ने लगा। सेनाको भी अब पूरा भोजन न मिलने लगा। घोड़े दुर्बल और शक्तिहीन हो गये। कभी-कभी हमारी यह भूखों मरती हुई क्षुधार्त्त दुर्बल सेना दुर्गसे निकल कर शत्रु पर आक्रमण करती किन्तु बर्फकी गहिराई और शत्रुके हृष्ट-पुष्ट घोड़ोंकी उड़ानके मारे कुछ सफलता न मिलती। इन मुठभेड़ोंमें शत्रु ही लाभमें रहता, क्योंकि उसके पास भोजन सामग्रीकी कमी नहीं था। उसकी सेनाके घोड़े भी अच्छे थे। दुर्ग-प्राचीरसे कभी-कभी हमारा तोपखाना व्यर्थ ही गरज पड़ता था। हमारा तोपखाना यदि मैदानमें भी होता तो कुछ कर न सकता, क्योंकि दुर्बल घोड़ोंमें इतनी शक्ति ही न थी कि वे उसे खींच सकते। यह सब ओरनबर्गके सिविल अफसरोंकी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ताका परिणाम था!

एक दिन जब हमलोग शत्रुकी एक बड़ी संख्याको तितिर-बितिर करने और पीछे हटानेमें समर्थ हुये, मेरी एक कासकसे जो अपने साथियोंके पीछे रह गया था, अकस्मात् मुठभेड़ हो गई और जैसे ही मैंने चाहा कि अपनी तुर्की तलवारसे उसपर वार करूं वैसे ही उसने अपनी टोपी उतार ली और चिल्लाकर कहा,—

"प्रणाम पीटर ऐण्ड्रियच, कहिये आप कैसे हैं!"

मैंने उसे पहिचाना, वह वही पुराना-नमकहराम अवदली

था। मैं नहीं कह सकता कि उसको देखकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने उससे कहा,—

"प्रणाम मैग्जिमिच, बैलोगोर्स्क छोड़े हुये तुमको कितना समय हुआ? वहाँसे कब चले थे?"

उसने कहा,—

"अधिक समय नहीं हुआ, मैं कल वहाँसे लौटा हूं। मेरे पास आपके लिये एक पत्र है।"

मैं उत्सुकतासे विह्वल होकर पुकार उठा,—"कहां है, दो।"

मैग्जिमिचने अपना हाथ अपनी छातीकी ओर ले जाते हुये उत्तर दिया,—

"मेरे पास है, मैंने पलाशाकासे प्रतिज्ञा की थी कि जिस प्रकार हो सकेगा, वह पत्र मैं आप तक पहुंचा दूंगा।"

उसने मुझे एक लिफाफा दिया और तत्काल अपने घोड़ेको भगाकर दूर निकल गया। मैने गम्भीर आकुलताके साथ लिफाफा फाड़ डाला। पत्रमें लिखा था,—

"यह ईश्वरकी इच्छा थी कि मैं अकस्मात मातृ-पितृ-हीना हो गई। इस विशाल और विस्तृत संसारमें मैं अकेली खड़ी हूं। न कोई रक्षक है और न कोई नाते-रिस्तेदार। इसलिये इस संकटके समयमें मेरी दृष्टि आपके ऊपर पड़ती है; क्योंकि मैं जानती हूं कि आप सदा मेरी भलाई चाहते रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपमें दूसरोंक ।हत करनेकी एक स्वाभाविक आकांक्षा है। मैं [illegible]से प्रार्थना करती हूं कि मेरा यह

पत्र किसी प्रकार आप तक पहुंच जाय। मैग्जिमिचने इस पत्रको आप तक पहुंचा देनेका वचन दिया है। पलाशकाने मैग्जिमिचसे सुना है कि ग्रेरेसे निकल कर आक्रमण करते हुये उसने आपको दूरसे प्रायः देखा है। उसने आपको जीवनकी उपेक्षा करके युद्धमें भाग लेते हुये देखा है। क्या आपका ध्यान उनकी ओर भी नहीं जाता जो अश्रुप्लावित नेत्रोंसे आपकी शुभ कामनाके लिये ईश्वरसे प्रार्थना किया करते हैं। मैं दीर्घ-काल तक अस्वस्थ रही। जब मैं सुख हुई तब एलेक्ज़ी आइ-वनोविचने जो मेरे स्वर्गीय पिताके स्थान पर शासक नियुक्त हुआ है फादर ग्रेसिमको विवश किया कि वे मुझको उसके हाथमें सौंप दें। उसने फादर ग्रेसिमको धमकी दी कि यदि ऐसा नहीं करते तो पावगाशफके रोषका स्मरण कर लेना। म अब अपने घरमें रहती हूं, मेरे घर पर एक सन्तरीका पहरा रहता है। एलेक्सी-आइवनोवना मुझे अपने साथ विवाह करनेके लिये विवश कर रहा है। वह कहता है कि अकोलाइना-पम्फाइलोवनाने तुमको अपनी भतीजी बताया था; यदि मैं चाहता तो उसी समय इस झूठ और छलका भण्डा-फोड़ कर देता। किन्तु इसे छिपाकर मैंने तुम्हारे जीवनकी रक्षा की है। किन्तु मैं एलेक्सी-आइवनोविच ऐसे व्यक्तिकी पत्नी होनेकी अपेक्षा मृत्युको कहीं अधिक अच्छा समझती हूं। वह मेरे साथ बड़ी निर्दयताका वर्त्ताव कर रहा है, वह मुझे धमकाकर मुझसे कहता है कि यदि तुम अपना निश्चय नहीं

परिवर्त्तित करती हो और मेरा प्रस्ताव नहीं स्वीकार करती हो तो मैं तुमको पावगाशफके कैम्पमें भेज दूंगा वहाँ एलिजबेथकार-लाफकी तरह तुम पर भी पावगाशफ बलात्कार करेगा और फांसी दिलवा देगा। मैंने उससे प्रार्थना की थी कि मैं अकस्मात माता-पिताकी स्नेहमयी गोदसे वञ्चित हो गई हूं, अतएव मुझे कुछ समय दो और मुझे सुचित हो लेने दो। उसने मुझे सोचने बिचारनेके लिये केवल तीन दिन दिये हैं। उसने कहा है कि तीन दिनके पश्चात यदि तुमने आत्म समर्पण न किया तो सब प्रकारकी दयासे वञ्चित हो जाओगी। आह, पीटर-ऐण्ड्रयच! केवल तुम मेरे रक्षक हो। इस निरुपाय और निस्सहाय बालिकाकी रक्षा करो। जनरल और कमांडरोंसे विनय करो कि वे जितनी जल्दी हो सके मेरी सहायता करें। यदि आसको तो स्वयं आओ।

आपकी आज्ञाकारिणी अकिंचन अनाथा,

"मेरी-माइरोनाफ"

पत्र पढ़कर कुछ क्षणके लिये मेरा मस्तिष्क विचार-शून्य हो गया। मैंने घोड़ेकी बाग नगरकी ओर मोड़ी, और निर्दय होकर उसके चाबुक जमाये। घोड़ा वायुवेगसे मुझे ले उड़ा। मार्गमें मैं उस असहाया बालिकाको मुक्त करनेके उपायों पर विचार करने लगा किन्तु किसी निश्चित परिणाम पर न पहुंच सका। नगरमें पहुंच कर मैं तत्काल जनरलके पास पहुंचा।

जनरल पाइपसे धुवां छोड़ता हुआ कमरेमें टहल रहा था। मुझे देखते ही वह रुक गया। सम्भवतः मेरे मुखकी विवर्णता

उसे खटकी, क्योंकि इस प्रकार हड़बड़ीमें मेरे आनेका कारण उसने बड़ी आकुलतासे पूछा—

"श्रीमान," मैंने कहा—"मैं आपकी सेवामें एक प्रार्थना लेकर आया हूं। मैं आपको अपने पिताके तुल्य समझता हूं। ईश्वरके लिये मुझ पर अनुग्रह कीजियेगा और मेरी प्रार्थना अस्वीकार न कीजियेगा। मेरे जीवनकी सुख-शान्ति इसी पर निर्भर है।"

जनरलने विस्मित होकर कहा,—

"क्या बात है ? बताओ मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं ? बोलो !"

मैंने आतुरताके साथ कहा,—

"मुझे एक पलटन सिपाही और एकदल कासक दीजिये और आज्ञा दीजिये कि बैलोगोस्कं-दुर्गको मैं लुटेरोंके हाथसे मुक्त करूं।"

जनरल मेरी ओर देखकर रह गया। वह अधिक न सोच सका। उसने समझा कि मेरा मस्तिष्क बिगड़ गया है। इसी भावसे उसने मेरी ओर एक दृष्टि फेंकी और कहा,—

"क्यों ? कैसे ? बैलोगोर्स्क-दुर्गको विजय करना....."

मैंने आवेगपूर्ण कण्ठसे कहा,—

"सारा उत्तरदायित्व मैं लेता हूं, केवल मुझ आप जाने दीजिये। निश्चय सफलता होगी।"

जनरलने सिर हिलाकर कहा,—

"नहीं, नवयुवक, बैलोगोर्स्क-दुर्ग यहांसे अन्तर पर है। इतने

अन्तरमें कहीं भी शत्रु तुम्हारा रास्ता रोक सकता है और तुम पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है। रास्ता रुक जाने पर....."

मैंने देखा कि जनरल सैन्य-सञ्चालन-नीतिकी उलझनमें पड़ गया। मैं शङ्कित हो उठा। मैंने जनरलको बीचमें ही रोक कर कहा,—

"कप्तान माइरोनाफकी कन्याने मुझे पत्र लिखा है और सहायताके लिये विनय की है। शेब्रिन बलपूर्वक उससे विवाह करना चाहता है।"

जनरलने कहा,—

"निस्सन्देह! ओह, शेब्रिन! पक्का धूर्त्त है। यदि मेरे हाथमें यह सैतान पड़े तो मैं दुर्गके कंगूरे पर बिठाकर इसको गोलीसे मार दूं। किन्तु इस समय हम लोग बेबस हैं, धीरज धरना चाहिये।"

मैं आपेसे बाहर होकर पुकार उठा,—

"किन्तु इसी समय तो वह मेरी-आइवनोवनाको पत्नी बनानेके लिये उस पर अमनुष्योचित दबाव डाल रहा है।"

जनरलने कर्कश-कण्ठसे उत्तर दिया,—

"किन्तु इस समय उसके दुर्भाग्य-निवारणका प्रतिकार नहीं हो सकता। इस समय उसके लिये यही उत्तम है कि वह शेब्रिन-की पत्नी होना स्वीकार कर ले। वह उसे अपनी देखभालमें ले लेगा, इस समय उसके लिये यही अच्छा रहेगा। फिर शेब्रिनको जब हम लोग मार डालेंगे तब उसके लिये ईश्वरकी अनुकम्पासे

कोई उसके योग्य वर ढूंढ़ लेंगे। रूपवती विधवायें अधिक समय तक बिनब्याही नहीं रहतीं। मेरे कहनेका तात्पर्य यह है कि कुमारियोंकी अपेक्षा विधवाओंको पति प्राप्त करनेमें शीघ्र सफलता होती है।"

मैंने आवेशोन्मत्त भावसे कहा,—

"मेरी-आइवनोवनाको मैं अपने जीतेजी शेब्रिनके हाथमें न पड़ने दूंगा।"

जनरलने मेरे भावावेशको लक्ष्य करके कहा,—

"होह! अब मैं समझा। तुम मेरी-आइवनोवनासे प्रेम करते हो, यह बात है! किन्तु अधीर नवयुवक, जो हो। मैं एक पलटन सिपाही और पचास कासक तुम्हें नहीं दे सकता। इस प्रकारका आक्रमण बड़ी भारी मूर्खता होगी। नहीं, भाई, मैं यह उत्तर-दायित्व अपने ऊपर कदापि नहीं ले सकता।"

मेरा सिर झुक गया और निराशाने मेरे ऊपर अधिकार कर लिया।

ग्यारहवां परिच्छेद

विद्रोही का पड़ाव

मैं शीघ्रताके साथ अपने कार्टरमें आया। सेवलिचने सदाके समान शिक्षा देते हुये मेरा स्वागत किया,—

"इन शराबी लुटेरोंसे लड़नेमें तुमको क्या आनन्द मिलता है? इन पाजियोंसे युद्ध करना क्या कुलीन व्यक्तिका काम है? तुम अपना जीवन व्यर्थ ही उत्सर्ग करते हो। यदि यह युद्ध लुटेरों और धूर्तोंसे न होकर तुर्कों या स्वीडोंसे होता तो मैं कुछ न कहता—उनसे युद्ध करना और विजयी होना गौरवकी बात है। किन्तु इस समय तुम जिन लोगोंसे युद्ध कर रहे हो उनका नाम लेनेमें भी लज्जा लगती है।....."

मैंने उसके इस व्याख्यानको रोक कर प्रश्न किया,—

"इस समय हमारे पास कितने रुपये बच रहे हैं?"

उसने सन्तोष भरी दृष्टिसे देखकर उत्तर दिया,—

"अभी भी बहुत कुछ है। यद्यपि दुष्टोंने घरका सामान लूटने के समय राई-रत्ती खोज डाला, फिर भी हमने रुपये बचा लिये।"

सेवलिचने एक लम्बी थैली मेरे सामने रख दी जो चाँदीके सिक्कोंसे भरी थी। मैंने उससे कहा,—

"अच्छा, सेवलिच, इसमेंसे आधा मुझे दे दो और शेष आधा अपने पास रखो। मैं बैलोगोर्स्क-दुर्ग जा रहा हूं।"

सेवलिचने कम्पित-कण्ठस्वरसे कहा,—

"इस भयङ्कर समयमें बैलोगोर्स्क क्यों जा रहे हो? वहां जानेका क्या काम है? वहाँ जानेके लिये रास्ता भी तो नहीं है। लुटेरोंने सब मार्ग रोक रखे हैं। कुछ ठहर जाओ पीटर ऐण्ड्रियच, सरकारी सेना हमलोगोंकी सहायताके लिये शीघ्र यहाँ आयेगी। इन विद्रोहियोंके भाग्यका निर्णय हो जाने दो। फिर जहाँ जी आये, जाना।"

किन्तु मेरा विचार दृढ़ हो चुका था, मैंने सेवलिचसे कहा,—

"सेवलिच, अधिक विचार करनेका समय नहीं है। मुझे अवश्य जाना है। तुम मेरी इस यात्रासे खिन्न न हो। ईश्वर दयावान है कदाचित फिर हमलोग परस्पर मिल सकें। खर्च अभी तुम्हारे पास है ही। यदि मैं तीनमें दिन न लौटूं....."

सेवलिचने बात काट कर कहा,—

"यह क्या कह रहे हो पीटर एण्ड्रियच, क्या तुम सोचते हो कि मैं तुमको अकेले जाने दूंगा? यह हो नहीं सकता। यदि तुम जानेका निश्चय ही कर चुके हो तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा, मैं तुमको अकेला नहीं छोड़ सकता, चाहे मुझे पैदल ही चलना पड़े। तुमने क्या मुझे बावला समझा है कि तुम जब अपनेको संकटमें डालने बाहर जा रहे हो तब मैं यहाँ पत्थरकी दीवालोंमें छिपा बैठा रहूं? चाहे जो हो, यह नहीं होने का पीटर ऐण्ड्रियच।"

मैंने देखा कि सेवलिचसे वाद विवाद करना व्यर्थ है। मैंने उसे भी यात्राके लिये प्रस्तुत होनेका आदेश दिया। आधे घंटे के भीतर तैयारी हो गई। मैं अपने उसी अच्छे घोड़ेपर सवार हुआ। और सेवलिच एक दुबले, लंगड़े घोड़े पर। यह घोड़ा यहींके किसी नागरिकका था। घोड़ेके खिलाने-पिलानेका प्रबंध करनेमें असमर्थ होनेके कारण उसने इसे सेवलिचको दे डाला था। हम लोगोंने दुर्ग-द्वारसे निकल कर ओरनबर्गका मार्ग लिया।

अँधेरा बढ़ने लगा था। मेरा रास्ता बर्ड नामक गाँवके पास से होकर गया था। इस गांवमें भी पावगाशफने अपना एक विश्राम-स्थान बना रखा था। मार्ग बर्फसे ढका हुआ था। किन्तु प्रतिदिन घोड़ोंकी टापसे एक रास्ता बन जाता था। मैंने घोड़ेको तेज दुलकी पर छोड़ दिया। सेवलिचने बहुत जोर मारा, पर उसका मरियल घोड़ा, मेरे घोड़ेके बराबर न पहुंच सका। उसने पुकार कर कहा,—

"इतना तेज अपना घोड़ा न हाँको। हमारा घोड़ा अधिक तेज नहीं चल सकता। और इतनी जल्दी क्या है? कौन वहां भोज हो रहा है जो सिरके बल दौड़ते जायं....."

बर्ड गांव दूरसे ही कुछ-कुछ दिखलाई पड़ने लगा। प्रकृतिने गाँवकी रक्षाके लिये गाँवसे कुछ दूर पर नाले बना रखे थे। हम लोग इन नालोंके पास पहुंचे। सेवलिच पीछे-पीछे आ रहा था, उसका बड़बड़ाना अब भी बन्द नहीं था। मुझे आशा

थी कि बिना रोक-टोकके मैं चुपचाप गाँवसे निकल जाऊँगा। किन्तु अंधेरेमें दूर पर-ठीक सामने मुझे पांच लट्ठबन्द आदमी देख पड़े। ये पावगाशफके कैम्पके पहरेदार थे। उन्होंने मुझे पुकारा। मैंने बिना कुछ उत्तर दिये हुये, घोड़ेको तेज करके आगे बढ़ जाना चाहा। किन्तु बढ़ न सका। उन लोगोंने तत्काल मुझे घेर लिया और एकने बढ़कर मेरे घोड़ेकी बाग थाम ली। मैंने विद्युत-वेगसे तलवार खींच ली और उसके सिर पर वार किया। वह चमक उठा, तलवार उसके टोपसे टकरा कर रह गई, उसे कोई क्षति न पहुंची, किन्तु वह घबड़ा गया और घोड़ेकी बाग उसके हाथसे छूट गई। अन्य लोग भी भयभीत हो गये और पीछे हट गये। मैंने अवसरसे लाभ उठाया और कोड़े लगाकर घोड़ेको वायु-वेगसे छोड़ दिया।

घनी अंधेरी रातके कारण मैं आगामी आपदाओंसे बच गया होता किन्तु, पीछे फिर कर देखने पर मुझे पता चला कि सेवलिच पीछे छूट गया है। एक तो बुड्ढा और फिर लंगड़ा घोड़ा, डाकुओंसे बचकर कदाचित ही निकल सके। क्या करना चाहिये? मैं ठहर गया और कुछ देर मैंने उसकी प्रतीक्षा की। अन्तमें मुझे निश्चय हुआ कि सेवलिच अवश्य रोक लिया गया। मैं उसकी सहायताके लिये लौट पड़ा।

नालेके पास पहुंचने पर मुझे अकुलतापूर्ण कण्ठ-ध्वनि सुनाई पड़ी। मैंने पहिचाना कि यह सेवलिच है। मैं वेगके साथ आगे बढा और शीघ्र ही उन लोगोंके बीचमें जा पहुंचा, जिन्होंने

कुछ देर पहिले मुझे रोका था। वे सेवलिचको घेरे खड़े थे। वे बिजलीकी तरह मेरे ऊपर टूट पड़े और मुझ घोड़ेसे नीचे खींच लिया। उनके मुखियाने मुझसे कहा,—

"चलो, तुमको जारके सामने लिये चलते हैं, वे ही यह निश्चय करेंगे कि तुम इसी समय लटकाये जाओगे या सबेरे।"

मैंने कोई आपत्ति नहीं की। वे लोग विजय-उन्मादसे उन्मत्त होकर हम दोनोंको ले चले।

नाला पार करके हमलोग गांवमें पहुंचे। गांवकी गलियों में यद्यपि बहुतसे लोग मिले किन्तु अन्धकारके कारण किसीने मुझे ओरनवर्गके अफसरके रूपमें नहीं पहिचाना। हमलोग एक झोपड़ेके सामने खड़े किये गये। यह झोपड़ा ऐसे स्थान पर था जहां दो रास्ते मिले थे। दरवाजे पर कुछ शराबके पीपे और दो तोपें रखी थीं। मुखियाने मुझसे कहा,—

"यही राज-प्रासाद है। ठहरो, मैं जारको तुम्हारी सूचना देता हूं।"

वह झोपड़ेके भीतर चला गया। मैंने सेवलिचकी ओर देखा, सेवलिच ईश-प्रार्थना करता हुआ धीरे-धीरे बड़बड़ा रहा था। बड़ी देरके बाद वह मुखिया भीतरसे लौटा, उसने कहा,—

"चलो, भीतर चलो। तुमको सम्मुख उपस्थित करनेकी आज्ञा दी गई है।"

मैंने झोपड़ेमें अथवा डाकुओंके शब्दोंमें—राज-प्रासादमें प्रवेश किया। दो बड़ी सी मोमबत्तियां जल रही थीं। दीवालों

पर कागज मढ़ा था। एक मेज थी, कुछ बेंचें रखी थीं, एक ओर हाथ धोनेका बर्तन तिपाई पर धरा था, ऊपर खूंटी पर तौलिया टंगी थी। कोनेमें तन्दूर बना था, पास ही बर्त्तन रखे थे। पावगाशफ लाल काफटन पहिने हुये था और एक ऊंची टोपी दिये था। वह एक निराले ढङ्गसे कमर पर हाथ रखे हुये था। उसके कई एक प्रधान अनुगामी उसके आसपास खड़े थे और उसकी ओर देख रहे थे। उनकी दृष्टिमें गौरव-प्रदर्शनका और आकृतिमें आदेश पालनका कृत्रिम भाव था। मुझे स्पष्ट ज्ञान पड़ा कि ओरनबर्गसे किसी अफसरके आनेके समाचारसे डाकुओंके हृदयमें कारण जाननेकी विशेष उत्कण्ठा उत्पन्न हो गई थी और उसीके परिणाम-स्वरूप इस समय इस रूपमें वे मुझे एकत्र मिले। पावगाशफने पहिली ही दृष्टिमें मुझे पहिचान लिया। उसके दिखाऊ कृत्रिमताके सब भाव विनष्ट हो गये। उसने प्रसन्नता सूचक कंठस्वरसे कहा,—

"अह, हा, आप हैं, कुशल तो है? कहिये, इधर कैसे आये?"

मैंने उत्तरमें कहा,—

"मैं अपने निजी कामसे यहांसे होकर जा रहा था, आपके आदमियोंने रोक लिया।"

उसने पूछा,—

"कैसा काम?"

मेरी समझमें न आया कि मैं उत्तरमें क्या कहूं! पावगाशफने कदाचित समझा कि मैं इतने सब लोगोंके सामने बतलानेमें

सोच-बीचार कर रहा हूं, इसलिये उसने अपने साथियोंको कमरेसे बाहर जानेकी आज्ञा दी। दोके अतिरिक्त सब चले गये। वे दो पूर्ववत यथा स्थान स्थित रहे। पावगाशफने कहा,—

"हां, अब आप निस्संकोच कहिये। ये मेरे अन्तरङ्ग सहायक हैं। इन लोगोंसे मैं कोई बात नहीं छिपाता।"

मैंने चुपकेसे उसके अन्तरंग साथियों पर दृष्टि डाली। उन दोमेंसे एक वृद्ध था, मुखाकृतिसे दुर्बलता प्रकट थी, कमर भी कुछ झुक गई थी। छोटी सी सफेद डाढ़ी थी। हरे रङ्गका सलूका पहिने हुए था। इस सलूकेके ऊपर नीले रङ्गका रेशमी चीर पड़ा हुआ था। पर दूसरे साथीको मैं कभी नहीं भूल सकता। वह लम्बा, चौड़े कन्धे और ऊँचे पूरे डीलका मनुष्य था। उसकी वयस मुझको लगभग पैंतालीसके जान पड़ी। घनी लाल डाढ़ी थी, भूरी चुभनेवाली आंखें थीं। मत्थे पर घावका चिह्न था। कपोलोंपर लालिमा थी। उसकी वीरता और ओज-पूर्ण मुखाकृतिका देखनेवालों पर प्रभाव पड़ता था। वह लाल रङ्गकी कमीजके ऊपर किरगस-कोट पहिने हुए था और पायजामा कासकोंका सा। पीछेसे मुझे ज्ञात हुआ कि पहलेका नाम बैलोबारोडाफ था और दूसरा आफनेसी-साकोलाफ था। यही आफनेसी-साकोलाफ कालूपाशाके नामसे प्रसिद्ध था जो कैद हो जाने पर तीन बार साइबेरियाकी सुरङ्गोंसे भाग कर निकल चुका था। इन दस्यु-नायकोंके बीचमें अपनेको खड़ा पाकर मेरे मनकी विचित्र दशा हो गई। पावगाशफने फिर प्रश्न किया,—

"बतलाइये, किस कामसे ओरनबर्गसे चले थे ?"

मेरे मस्तिष्कमें एक विचित्र-विचार उठा। मुझे जान पड़ा कि भाग्य मुझे दुबारा पावगाशफके सामने उपस्थित कर मेरे उद्देश्य को सफल बनानेमें सहायता कर रहा है। मैंने बिना कुछ और आगे सोचे-विचारे पावगाशफके प्रश्नका उत्तर दिया,—

"मैं बैलोगोर्स्क-दुर्गको जा रहा हूं, जहां एक अनाथ पर अत्याचार हो रहा है, मैं उसको अत्याचारोंसे मुक्त करूंगा।"

पावगाशफके नयनोंमें रक्त उतर आया, उसने उत्तेजित कण्ठ-स्वरमें कहा,—

"बताओ, वह कौन है ? मेरी प्रजामें वह कौन है जिसको अनाथके सतानेका साहस हुआ है ?"

मैंने कहा,—

"वह शेब्रिन है। जिस बालिकाको आपने पादरीके घर पर बीमार देखा था उसीको शेब्रिन सता रहा है और बलपूर्वक उसके साथ विवाह करना चाहता है।"

पावगाशफकी कण्ठध्वनिसे भयङ्करता बरस पड़ी। उसने कहा,—

"शेब्रिन ? अच्छा, शेब्रिनके भाग्यका अविलम्ब निर्णय होगा। वह देखेगा कि निजी इच्छाओं और निजी कामनाओंके लिये हमारी प्रजाको सतानेका क्या परिणाम होता है। मैं उसे सूली दूंगा।"

रूखे कण्ठस्वरसे कालूपाशाने कहा,—

"मुझे कुछ निवेदन करना है। आपने शेब्रिनको दुर्गका गवर्नर नियुक्त करनेमें बड़ी हड़बड़ीसे काम लिया और अब उसे सूली पर चढ़ानेमें भी उसी हड़बड़ीसे काम ले रहे हैं। शेब्रिनको कासकोंका शासक बनाकर आपने कासकोंको असन्तुष्ट कर दिया है। अब पहिले ही अपराधमें शेब्रिनको सूली पर चढ़ाकर उच्च श्रेणीवालोंको असन्तुष्ट न करना चाहिये।"

वृद्धने कहा,—

"वे दया या अनुग्रह किसीके भी पात्र नहीं, शेब्रिनका सूली चढ़ाया जाना भी कोई बड़ी शोचनीय घटना नहीं। इस ओरनबर्गके अफसरसे जिरह करना भी अनुचित न होगा। इसने आपसे न्यायकी फरियाद क्यों की है? यदि यह आपको जार नहीं स्वीकार करता तो आपसे न्याय प्रार्थना करने क्यों आया है और यदि आपको जार स्वीकार करता है तो अब तक यह शत्रुओंके साथ ओरनबर्गमें क्यों रहा? इसे कोर्टमें ले जाकर ताड़ना देकर सच्ची बातका पता लगानेकी आज्ञा दीजिए।"

वृद्धका तर्क मुझे बड़ा उपयुक्त जान पड़ा। यह सोचकर कि मैं कैसे भयानक व्यक्तियोंके हाथोंमें आ पड़ा हूं, मेरा शरीर कांप उठा। पावगाशफने मेरी व्याकुलता ताड़ ली। उसने आंखसे संकेत करते हुए मुझसे कहा,—

"हां, महाशय, मेरे फील्ड-मार्शलका कहना यथार्थ जान पड़ता है। कहिये, आप इस पर क्या कहते हैं? आप क्या सोचते हैं?"

पावगाशफकी मौन-हास्य-रसिकतासे मेरे साहसको बल मिला। मैंने शान्त भावसे उत्तर दिया,—

"इस समय मैं आपके हाथोंमें हूं। आपकी जो इच्छा हो, कीजिये।"

पावगाशफने कहा,—

"अच्छा, अब आप मुझे यह बताइये कि ओरनबर्गकी इस समय क्या हालत है?"

मैंने कहा,—

"ईश्वरको धन्यवाद है, सब ठीक है।"

पावगाशफने आतुरताके साथ कहा,—

"ठीक है? और खाद्य-सामग्री घट रही है; लोग भूखों मर रहे हैं!"

बात तो ठीक थी परन्तु राजभक्तिकी शपथके विचारसे हां करना मैंने कर्त्तव्य न समझा। मैंने उसे विश्वास दिलाया कि यह केवल गप आप तक पहुंची है, ओरनबर्गमें खाने पीनेकी पर्याप्त सामग्री है।

मेरी बातें सुनकर वृद्धने पावगाशफसे कहा,—

"यह लीजिये, आपके मुंह पर यह युवक आपको धोका दे रहा है। भागनेवाले एक मतसे कहते हैं कि ओरनबर्गमें भीषण अकाल और मरी फैली है। लोग भूखसे तड़पकर सड़ा-गला मांस खा रहे हैं और उसीको प्राप्त कर अपने भाग्यकी सराहना करते हैं। और यह विश्वास दिला रहा है कि ओरनबर्गमें खाने पीनेका

ढेरों सामान है ! यदि आप शेब्रिनको सूली देने जा रहे हैं तो उसी सूलीमें इस युवकको भी लटकाइये जिससे ये एक दूसरेको दोष न दे सकें।"

पावगाशफ पर इन शब्दोंका प्रभाव पड़ता जान पड़ा किन्तु, सौभाग्यसे इसी समय कालूपाशाने अपने वृद्ध साथीके विचारोंका विरोध करते हुए उससे कहा,—

"तुम केवल फांसी देने और लटकाने हीकी बात सोचते हो। तुम कैसे वीर हो ? कब्रमें एक पैर लटका है और अब भी दूसरोंको मारना प्रिय है। तुमको अपने ऊपर अधिकार नहीं है ?"

बैलोबारोडाफने कहा,—

"और आप कबसे सन्त बन गये ? आपके पल्ले दया कहांसे पड़ गई ?"

कालूपाशाने उत्तर दिया,—

"निस्सन्देह मैं भी सन्त नहीं हूं, खूनी हूं। किन्तु मैं शत्रुको मारता हूं, अतिथिको नहीं। खुले मार्गमें या अन्धेरे जङ्गलमें, घरमें या चूल्हे तन्दूरके पास नहीं। तबल और तलवारसे, बुड्ढेकी बकवादसे नहीं।"

वृद्धने रोष पूर्ण कण्ठसे कहा,—

"चुप रहो, नहीं तो नाक तोड़ दूंगा।"

कालूपाशाने डपटकर कहा,—

"तुम बिचारे क्या नाक तोड़ दोगे, पर मैं चाहूं तो अभी तुम्हारी नाक तोड़कर दिखा दूं।.....कहता हूं कि अब चुप

रहना, कुछ बोलना मत! नहीं तो डाढ़ी पकड़कर उखाड़ लूंगा।"

पावगाशफने वज्रनिनाद स्वरसे कड़ककर कहा,—

"सभ्य जनरलो, बस ठहरो। आपसमें बहुत काफी लड़ चुके। यदि ओरनबर्गके सब कुत्ते सूली पर लटका दिये जांय तो इसमें कोई अधिक सत्यानाशीकी बात नहीं जान पड़ती पर, यह अत्यन्त सत्यानाशीकी बात है कि अपने ही कुत्ते आपसमें लड़-कर, एक दूसरेको निगलनेकी चेष्टा करें! इसलिये एक दूसरेकी बातें भूल जाओ और फिर परस्पर मित्र बनो।"

कालूपाशा और बैलोबारोडाफने मुंहसे एक शब्द न कहा किन्तु भयङ्करता पूर्ण दृष्टिसे परस्पर घूर कर देखा। यह सोचकर कि इसका परिणाम मेरे लिये अत्यन्त भयङ्कर हो सकता है, मैंने बात-चीतका विषय परिवर्त्तित कर देना अत्यन्त आवश्यक समझा। मैंने कृत्रिम प्रसन्नताका भाव अपने मुंह पर लाकर पावगाशफसे कहा,—

"ओफ, मैं बिल्कुल भूल गया, मुझे आपको धन्यवाद देना है—घोड़ेके लिये और अंगरखेके लिये। रास्ता बर्फसे ढका था। यदि आपका घोड़ा न होता तो निस्सन्देह मैं ओरनबर्ग न पहुंच सकता, रास्ते ही में मेरी मृत्यु हो जाती।"

मेरी तरकीब चल गई, पावगाशफ फिर अच्छे भावोंमें आ गया। उसने आंखोंसे विनोदात्मक संकेत करके कहा,—

"धन्यवाद देना एक सद्गुण है। अच्छा, अब यह बतला-इये कि उस किशोर-वयस्क बालिकाके लिये जिसको श्वेब्रिन

सता रहा है, क्या विचार है ? कहीं उसने आपके हृदयमें आग तो नहीं सुलगा दी है ?"

मैंने देखा कि तूफान निकल गया, मैंने सब बातको छिपाना उचित न समझा, मैंने उत्तरमें कहा,—

"मेरा उसके साथ विवाह होना निश्चित हो चुका है, वह मेरी भावी पत्नी है।"

पावगाशफने कहा,—

"हां ? तो आपने यह पहिले क्यों न बतलाया ? अच्छा, हम आपके विवाहका प्रबन्ध करेंगे। विवाहोत्सवमें चहल-पहल रहेगी और अच्छा मनोविनोद होगा।"

फिर पावगाशफने बैलोबारोडाफसे कहा,—

"सुनो फील्ड-मार्शल, सुनो। ये हमारे पुराने मित्र हैं। इसलिये हम दोनों जने एक साथ खाना खायंगे। प्रभातका न्याय सन्ध्याके न्यायकी अपेक्षा अधिक बुद्धिमत्ताका होता है, अतएव कल प्रातःकाल हम लोग देखेंगे कि इनके साथ क्या किया जाय।"

इस प्रस्तावको मैं प्रसन्नताके साथ अस्वीकार कर दिये होता किन्तु वैसा करनेका कोई फल न होता। दो किशोर बालिकाओंने जो इस झोपड़ेमें रहनेवाले कासककी पुत्रियां थीं, मेज पर सफेद कपड़ा बिछा दिया और तत्काल खानेके सामानसे मेजको सज दिया। मेज पर कई एक शराबकी बोतलें और प्याले भी लाकर रख दिये। यह सब होनेमें क्षण भरसे अधिक देर न लगी होगी।

दूसरे क्षणमें मैंने अपनेको तथा पावगाशफको—उन्हीं भयङ्कर साथियों सहित खानेकी मेजके पास बैठे पाया।

खाना खानेके साथ-साथ प्याले चलने लगे। वे लोग सुरा-सेवनके अच्छे अभ्यासी थे ही। बड़ी रात बीते तक प्याले पर प्याले उड़ते रहे। अन्तमें उन्मत्तताने पावगाशफ और उसके साथियों पर प्रभाव डाला। पावगाशफ तो अचेत होकर जहां बैठा था, वहीं सो रहा। उसके साथी उठे और उन्होंने मुझे भी अपने साथ चलनेका संकेत किया। मैं उठ खड़ा हुआ और उनके साथ चल दिया। कालूपाशाकी आज्ञासे सन्तरीने मुझे न्याय-भवनमें पहुंचाया, सेवलिचको मैंने वहां पाया। सन्तरी हम दोनोंको बन्द करके चला गया। जो कुछ बीता था, सुनकर सेवलिच बड़ा विस्मित हुआ। उसकी समझमें कुछ न आया पर, उसने मुझसे कोई प्रश्न नहीं किया। चुपचाप वह अंधेरेमें लेट रहा और कराहने और आहें भरने लगा। फिर कुछ देरके बाद उसने बड़बड़ाना आरम्भ किया। एक तो यों ही मैं न सुलझने वाली उलझनेमें बेतरह फंसा हुआ था, दूसरे सेवलिचकी बड़-बड़ाहट। रातमें क्षण भरके लिये भी मेरी आंख न लगी।

भोर हुआ। पावगाशफने मुझे अपने सामने उपस्थित होनेकी आज्ञा दी। मैं उसके सामने पहुंचाया गया। दरवाजेके सामने किबितका (बर्फ पर चलनेकी गाड़ी) खड़ी थी और हृष्टपुष्ट तीन घोड़े उसमें जुते थे। गली लोगोंकी भीड़से भरी थी। मैंने कमरेमें पावगाशफसे भेंट की। वह यात्राके लिये तयार था—शरीर पर

लबादा और सिर पर किरगस टोपी। उसके रातके वे दोनों साथी अधीनताका भाव दिखलाते हुये उसके पास खड़े थे। उनका यह भाव ठीक उसी प्रकारका अब भी कृत्रिम था, जैसा कि मैंने रातमें पाया था। पावगाशफने आनन्दोत्फुल्ल भावसे मेरी ओर देखा और अपने साथ किबितकामें बैठनेकी आज्ञा दी।

हम लोग गाड़ी पर यथा स्थान बैठ गये।

एक तातारी, गाड़ी हाँकनेके लिये बैठा था। पावगाशफने उससे कहा,—

"चलो, बैलोगोर्स्क-दुर्ग ले चलो।"

मेरा हृदय जोरसे धड़क उठा। घोड़े चले, गाड़ीकी छोटी घण्टियां बज उठीं और किबितका बर्फ पर दौड़ने लगी।

"ठहरो, ठहरो।"—एक उच्च-कण्ठ-ध्वनि सुनाई पड़ी। इस कण्ठ ध्वनिसे मैं भलीभांति परिचित था। कण्ठ-ध्वनि सेवलिच की थी। मैंने देखा, सेवलिच हम लोगोंकी ओर दौड़ा चला आ रहा है।

पावगाशफने गाड़ीवानको गाड़ी खड़ी करनेकी आज्ञा दी। मेरे नौकरने चिल्लाकर कहा,—

"ऐ, भइया पीटर, पीटर ऐण्ड्रियच, मुझे इस वृद्ध-वयस-में यहाँ अकेला न छोड़ जाओ। इन लु....."

पावगाशफने उसको आगे कहनेसे रोककर कहा,—

"सुन बुड्ढे, यह ईश्वरकी इच्छा थी कि हम लोग फिर मिल गये। अच्छा, बैठ गाड़ीके पीछे।"

सेवलिचने गाड़ीमें बैठते हुये कहा,—

"धन्यवाद है जार, बहुत-बहुत धन्यवाद जार। ईश्वर सरकारको सौ वर्षकी आयु दे और सदा नीरोग रखे। क्योंकि आपने मुझ बुड्ढे पर दया दृष्टि की और मुझे ढारस बंधाया। मैं जबतक जीऊंगा सरकारकी कुशल-क्षेम सब दिन ईश्वरसे मनाता रहूंगा। और शश-चर्म-अंगरखेके संबन्धमें अब कभी कोई बात मुँहसे न निकालूंगा।"

इस शश-चर्म-अङ्गरखेकी बात सुनकर पावगाशफ अवश्य क्रोधित हो उठता। किन्तु सौभाग्यसे उसने नहीं सुना क्योंकि सेवलिचका कण्ठस्वर मन्द होते होते अन्तमें अत्यन्त धीमा हो गया था। घोड़े फिर अपनी चाल पर चल पड़े। जनसमूह जो अबतक पावगाशफके सम्मानार्थ, पीछे-पीछे आ रहा था, रुका। उसने विनीत भावसे अभिवादन करके पावगाशफकी शासन-सत्ताको स्वीकार करनेका प्रमाण दिया। पावगाशफने प्रत्येक ओर अपना सिर झुकाकर अभिवादनका उत्तर दिया। क्षण भरमें हम लोग गांवके बाहर आ गये और अब अश्व-परिचालित किबितका समतल-पटलमें दौड़ने लगी।

मैं कल्पनाके विस्तृत-क्षेत्रमें विचरने लगा। कुछ ही घंटों के पश्चात् मैं फिर उस प्राणाधार प्रेम-प्रतिमाके दर्शन करूंगा जिसके लिये मैंने समझा था कि सदाके लिये खो गई। मेरे नेत्रोंके सामने पुनर्मिलनके समयका काल्पनिक चित्र खिंच गया।.....मैंने यह भी सोचा कि इस समय किसके हाथोंमें

मेरे भाग्यका निर्णय है। संयोगकी विचित्र विचित्रता पर मैं कुछ क्षणके लिये अत्यन्त विस्मित हो गया। जो स्वभावसे ही विचार-हीन, निष्ठुर और रक्त-पिपासु है, वही आज मेरे प्रेम-पात्रको छुटकारा दिलाने चला है। पावगाशफ अभी नहीं जानता कि मेरी-आइवनोवना कप्तान-माइरोनाफकी कन्या है। बहुत सम्भव है कि रोष-क्षुब्ध शेब्रिन कच्चा-चिट्ठा उसके सामने खोल दे। अथवा किसी अन्य-प्रकारसे ही रहस्योद्घाटन हो जाय और पावगाशफ जान जाय कि यह माइरोनाफकी कन्या है.....तब मेरी-आइवनोवनाका भविष्य क्या होगा? भयसे हृदय भर गया, शरीर काँप उठा और रोंगटे खड़े हो गये।

अचानक पावगाशफने मेरे विचारोंमें बाधा डाली, मुझे सम्बोधित करके पूछा,—

"महाशय, क्या सोच रहे हैं?"

मैंने उत्तर दिया,—

"सोचनेके विषयोंकी क्या कमी है? सोच रहा हूं कि मैं एक सभ्य अफसर था। कल मैं आपके प्रतिकूल युद्ध कर रहा था और आज—आज एक ही गाड़ीमें आपके पास बैठा हूं। आज मेरे सम्पूर्ण जीवनका आनन्द आपके ऊपर निर्भर है।"

पावगाशफने कहा,—

"यह कैसे? क्या आप डरे हुये हैं?"

मैंने उत्तर दिया,—

"जिसने मेरे जीवनको बचाया है उससे न केवल मुझे दया-की वरन् सहायता लेनेकी भी आवश्यकता आ पड़ी है।"

पावगाशफने उत्तरमें कहा,—

"आपका यह कहना बिल्कुल ठीक है। मेरे सहचर आपको सन्देह-पूर्ण दृष्टिसे देखते थे। अभी आज तड़के उस वृद्धने जिसे कल रातमें आपने मेरे साथ देखा था, आकर मुझसे अनुरोध किया कि यह युवक अवश्य गुप्तचर है। उसने अपनी सम्मति प्रकट करते हुये कहा कि ताड़ना पूर्वक इसके मुंहसे सब बातें निकलवानी चाहिये और अन्तमें इसे सूली देना चाहिये। किन्तु मैं उसके विचारसे सहमत न हुआ।"

पावगाशफने अपना कण्ठ-स्वर धीमा कर लिया, अब उसके शब्द सेवलिच या गाड़ीवानको न सुन पड़े होंगे, उसने मुझसे कहा;—

"इसका कारण यह है कि मुझे आपका वह शराबका प्याला, और आपका वह शश-चर्म अङ्गरखा स्मरण है। आप देखें कि मुझे जैसा रक्त-पिपासु आपके बन्धु-बान्धव समझते हैं, मैं वास्तवमें वैसा नहीं हूं।"

मुझ बैलोगोर्स्क-दुर्गके लूटे जानेके समयकी घटनायें स्मरण हो आईं, किन्तु मैंने विरोधात्मक कोई शब्द कहना उचित न समझा। मैंने कुछ उत्तर न दिया और बिल्कुल चुप रहा।

कुछ क्षण मौन रहकर पावगाशफने कहा,—

"हां, बतलाइये, ओरनबर्गमें लोग मेरे सम्बन्धमें क्या कहते हैं?"

मैंने कहा,—

"वे कहते हैं कि,—आपको पराजित करना सरल नहीं है। सब स्वीकार करते हैं कि आप शक्ति-सम्पन्न हो उठे हैं।"

मेरे इन शब्दोंसे पावगाशफकी आकृतिमें आनन्द, उत्साह और अभिमानका रंग दौड़ गया। उसने आत्म-तुष्टिके साथ मेरी ओर देखा और कहा,—

"इस युद्धके ठाननेमें मेरे कुछ उद्देश्य हैं। क्या ओरनबर्गके-लोग यूजीफ-रणक्षेत्रका परिणाम सुन चुके हैं या नहीं? चालीस जनरल अफसर मारे गये थे और चार पूरी सेनायें कैद की गई थीं। क्या आप सोचते हैं कि प्रुशियाका राजा भी यह कर सकता?

एक लुटेरेकी इस डींग पर मुझे कुछ कौतुक जान पड़ा।

मैंने उससे कहा,—

"आप स्वयं अपने लिये क्या सोचते हैं? क्या आप सोचते हैं कि आप फ्रेडरिकको पराजित कर सकते?"

पावगाशफने उत्तर दिय,—

"फिडोर फेडरोविच? क्यों नहीं? मैंने आपके जनरलोंको पराजित किया और आपके जनरलोंने उसको पराजित किया है। मुझे अबतक बराबर फलता मिली है। किन्तु थोड़ा सब्र कीजिए, जब मैं मास्को पर आक्रमण करूंगा तब देखियेगा।"

मैंने प्रश्न किया,—

"तो क्या मास्को पर भी आक्रमण करनेका आपने विचार किया है ?"

कुछ क्षणके लिये पावगाशफ सोच-विचारमें पड़ गया, तत्पश्चात् क्षीण-स्वरमें उसने कहा,—

"ईश्वर जाने। मेरा मार्ग संकीर्ण है। और विचार दुर्बल। मेरे अनुगामी मेरी आज्ञायें ठीक-ठीक शिरोधार्य्य नहीं करते। वे दुरात्मा हैं। मुझे उनपर एक तीव्र दृष्टि रखनी पड़ती है। वे वास्तवमें ऐसे हैं कि यदि पांसा पलटे तो पहिले ही उलट-फेरमें मेरी खोपड़ी देकर ये लोग अपने गले बचा लें।"

मैंने पावगाशफसे कहा,—

"यह बिलकुल ठीक है। तब क्या यह उत्तम न होगा कि किसी अनुकूल अवसर पर आप इन लोगोंसे अलग हो जांय और महारानीसे दया-प्रार्थना करें ?"

पावगाशफने सूखी हँसी हंसकर कहा,—

"नहीं, पर्य्याप्त विलम्ब हो गया, पश्चात्तापका समय कभीका निकल गया। वहां अब मेरे लिये क्षमा नहीं है। मैं अब जिस मार्ग पर चल रहा हूं उसी पर बढ़ते रहना चाहिये। कौन जानता है ? कदाचित मैं अन्तमें सफल हो जाऊं। ग्रीश्का-ओट्रेपियफ मास्कोमें जार बनाया गया था।"

मैंने फिर कहा,—

"किन्तु यह भी तो आपको पता होगा कि उसका अन्त कैसे हुआ ? महलकी खिड़कीसे गिराया गया था। शरीरकी

बोटी बोटी काट कर जलाई गयी थी। और अस्थि-क्षार (राख) तोपोंमें भरकर हवामें उड़ाई गई थी!"

पावगाशफका कण्ठ-स्वर प्रचण्डतासे अनुप्राणित हो उठा और उसने कहा,—

"सुनो, मैंने बचपनमें एक वृद्ध कालमकसे एक कहानी सुनी थी, वह मैं तुम्हें सुनाता हूं। 'एक बार एक ईगल पक्षीने एक कौवेसे कहा,—"भाई कौवा, बतलाओ यह क्या बात है कि तुम तीन सौ वर्ष तक जीते रहते हो और हमारे बन्धुओंको केवल तेंतीस वर्षमें ही यह सुन्दर संसार छोड़ देना पड़ता है? कौवेने उत्तर दिया,—भाई ईगल, बात यह है कि तुम जीवित रक्त पीते हो और मैं गलित मांस खाकर जीता हूं। ईगल कुछ क्षण तक सोचता रहा और फिर बोला,—अच्छा तो मैं भी अब रक्त छोड़कर गलित-मांस खानेकी चेष्टा करूंगा। कौवेने कहा,—अच्छी बात है। दोनों उड़े। अचानक एक घोड़ेकी लाश देख पड़ी। दोनों उस लाश पर टूटे। कौवेने चोंच मार-मार कर मांस नोचना और स्वादके साथ खाना आरम्भ कर दिया। ईगलने एक बार मांस चखा, फिर लाशसे दूर हटकर अपने पङ्ख फड़फड़ाये और कौवेसे कहा,—नहीं, भाई कौवा, गलित मांस खाकर तीन सौ वर्ष तक जीते रहनेकी अपेक्षा जीवित रक्त पीकर एक वर्ष जीते रहनेको मैं कहीं अच्छा समझता हूं। और आगे आनेवाली बातोंको ईश्वरके भरोसे छोड़ता हूं।' वृद्ध कालमककी यह कहानी आपकी समझमें कैसी है?"

मैंने उत्तर दिया,—

"बड़ी सुन्दर है, युक्ति-युक्त और अत्यन्त चातुर्य्य पूर्ण है। किन्तु लूट-मार पर जीवित रहना मेरी समझमें, गलित मांस पर जीवित रहनेके समान ही है।"

पावगाशफने आश्चर्य्य पूर्ण दृष्टिसे मेरी ओर देखा पर, उत्तर में कुछ न कहा। हम दोनों चुप हो गये और अपने-अपने विचारोंमें तल्लीन हो गये। गाड़ीवान एक उदासीनता व्यञ्जक संगीत गुनगुनाने लगा। सेवलिच ऊंघने लगा और कभी इधर कभी उधर झुकने लगा। किबितका द्रुत-गतिसे चिकनी बर्फीली सड़क पर फिसलती आगे बढ़ रही थी।.....अकस्मात येकके ढालू तट पर एक छोटा सा गाँव देख पड़ा, और लगभग आध घंटे बाद हम लोग बैलोगोर्स्कदुर्गमें जा पहुंचे।

बारहवां परिच्छेद

अनाथ

किबितका कमानडेण्टके भवनके सामने खड़ी हो गई। नगरनिवासियोंने पावगाशफकी घंटीकी आवाज पहचान ली और तत्काल घरोंसे निकल पड़े और हम लोगोंके आस-पास एकत्र हो गये। शेब्रिन दुर्गके बाहर ही पावगाशफसे मिला। वह

कासकोंके से कपड़े पहिने था, और दाढ़ी रखाये हुए था। उसने पावगाशफको किबितकासे उतरनेमें सहारा दिया और अत्यन्त विनम्र शब्दोंमें अपनी प्रसन्नता और उत्साह प्रकट किया। मुझे देखकर वह कुछ घबड़ाया; किन्तु तत्काल उसने अपनेको संभाला और अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा,—

"अच्छा, अब आप भी अपने ही लोगोंमें हो गये, आपको तो बहुत पहिले ही हमारे दलमें सम्मिलित होना चाहिये था।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया और अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया।

मैंने जब कमानडेण्टके कमरेमें पैर रखा, मेरा दिल तड़प उठा। स्वर्गीय कमानडेण्टकी सनद् अब भी दीवाल पर टंगी हुई थी और शोक-पूर्ण भूत कालका स्मरण दिला रही थी। पावगाशफ उसी कोच पर बैठ गया जिसपर आइवन-कौजमिच अपनी पत्नीकी झिड़कियांकी लोरी सुनते हुए प्रायः सोया करते थे। शेव्रिन स्वयं शराब लाया। पावगाशफने एक प्याला पिया और फिर मेरी ओर संकेत करके कहा,—

"आपको भी एक प्याला दो।"

शेव्रिन तश्तरी लिये हुये मेरे पास आया, किन्तु मैंने द्वितीय बार फिर मुंह फेर लिया। उसने अपनी तीव्र बुद्धि और चातुर्य्य से पावगाशफकी असंतुष्टता ताड़ ली थी इसलिये वह दबका हुआ था। उसने मेरी ओर सन्देहकी दृष्टिसे घूर कर देखा।

पावगाशफने दुर्गके सम्बन्धमें अनेक प्रश्न किये। फिर आत्म-

समर्पण करनेवाली दुर्गकी पुरानी सेनाके रङ्ग-ढङ्ग पर कुछ प्रश्न किये। तत्पश्चात् अकस्मात् कहा,—

"दोस्त, बतलाओ, वह नव-वयस्क बालिका कौन है जिसको तुमने कैद कर रखा है? उसे हमारे सामने उपस्थित करो।"

शेव्रिनका रङ्ग उड़ गया, मानों उसके प्राण निकल गये। उसने थरथराते हुये कण्ठ स्वरसे कहा,—

"ज़ार, वह कैद नहीं है.....वह बीमार है.....चारपाई से लग रही है।"

पावगाशफने अपने स्थानसे उठते हुये कहा,—

"अच्छा, चलो मुझे उसके पास ले चलो।"

इनकार करना असम्भव था। शेव्रिन पावगाशफको मेरी-आइवनोवनाके कमरेकी ओर ले चला। मैं भी पीछे-पीछे इन लोगोंके साथ हो लिया।

शेव्रिन सीढ़ियोंके पास रुक गया, उसने कहा,—

"ज़ार, मेरे लिये और जो इच्छा हो, आज्ञा कीजिये। किन्तु एक बाहरी मनुष्यको मेरी पत्नीके शयनागारमें प्रवेश करनेकी आज्ञा न दीजिये।"

मैं कांप उठा।

"अच्छा तो तुमने ब्याह कर लिया!" मैंने शेव्रिनसे कहा, मैं उस समय उसके टुकड़े टुकड़े कर डालनेको तैयार था।

"चुप!"

पावगाशने बाधा दी, "यह मेरा काम है, और हां," शेव्रिन

की ओर घूमकर उसने कहा, "अपनी शान और दिखाव रहने दो, वह तुम्हारी पत्नी हो या न हो हम उसके सामने जिसे इच्छा होगी ले जायंगे। आप मेरे साथ आइए।"

शेव्रिन आगे बढ़ा, किन्तु कमरेके दरवाजे पर पहुंचकर लड़खड़ाती हुई आवाजमें उसने फिर कह,—

"ज़ार, मैं यह प्रार्थना कर देना चाहता हूं कि वह भयङ्कर ज्वरमें पीड़ित है और तीन दिनसे अचेत अवस्थामें लगातार प्रलाप बक रही है।"

पावगाशफने कहा,—

"दरवाजा खोलो!"

शेव्रिनने जेब टटोलना आरम्भ किया, और कुछ क्षण पश्चात उसने कहा,—

"ताली लाना भूल आया हूं।"

पावगाशफने पूरे बलके साथ दरवाज़ों पर एक लात जमाई, ताला टूट गया। हम लोग कमरेके भीतर पहुंचे।

मैंने कमरेकी चारों ओर देखा—और प्रायः अर्द्ध मूर्छित हो गया। मैले-पुराने और फटे वस्त्र पहिने हुये क्षीण काय मेरी-आइवनोवना फर्श पर बैठी हुई थी। उसका मुंह पीला पड़ गया था, और बाल बिखरे हुये थे। सामने पानीका घड़ा रखा था और उसीपर एक रोटी रखी थी। मुझे देखते ही वह कांपी और हृदयवेधी स्वरमें चीख पड़ी। मेरे भाव उस समय कैसे थे यह कहकर नहीं बतलाया जा सकता।

पावगाशफने शेव्रिनकी ओर देखा और व्यङ्गात्मक भावसे मुस्करा कर कहा,—

"तुमने कितना सुन्दर अस्पताल बनाया है!"

फिर मेरी-आइवनोवनाके पास पहुंचकर पावगाशफने कहा,—

"बेटी, बतलाओ। तुम्हारे पतिने इस प्रकार तुमको भीषण यन्त्रणा क्यों दे रखी है?"

"मेरा पति," मेरीने पावगाशफके शब्दको दोहराया, "वह मेरा पति नहीं है। मैं कभी उसकी पत्नी बननेके लिये नहीं प्रस्तुत हूं। मैं उसकी पत्नी बननेकी अपेक्षा मृत्युको अच्छा समझती हूं। और मैं यदि स्वतन्त्र न हुई तो निश्चय मर जाऊंगी।"

पावगाशफने धमकी भरी हुई दृष्टिसे शेव्रिनकी ओर ताका और कहा,—

"तुमने मुझ धोखा देनेका साहस किया? पाजी कहींके, जानते हो इसका परिणाम क्या होगा?"

शेव्रिनने घुटने टेक दिये.....घृणाने मेरे हृदयकी द्वेषाग्नि ठंढी कर दी और एक भले-मानुसको एक डाकू कासकके चरणों पर पड़ा दया-प्रार्थना करते देखकर मेरा हृदय घृणासे भर गया।

पावगाशफको दया आ गई, उसने शेव्रिनसे कहा,—

"अच्छा, इस बार मैं तुमको क्षमा करता हूं, परन्तु दूसरी बार यदि तुमने फिर कोई अपराध किया तो मैं तुम्हें क्षमा न करूंगा। मैं आजके इस अपराधकी भी कसर काढ़ लूंगा।"

फिर पावगाशफने मेरी-आइवनोवनाको सम्बोधित करके सरलताके साथ कहा,—

"बेटी, जाओ। मैंने तुमको स्वतंत्र कर दिया। मैं ज़ार हूं।"

मेरीने तत्काल पावगाशफकी ओर देखा, और सहज ही में समझ लिया कि उसके माता-पिताका घातक सामने खड़ा है। उसने दोनों हाथोंसे अपना मुंह ढक लिया और मूर्च्छित हो गई। मैं वेगके साथ उसकी ओर बढ़ा, किन्तु उसी समय पलाशाने साहस पूर्वक कमरेमें प्रवेश किया और मेरी-आइवनोवनाको संभाला। पावगाशफ कमरेसे बाहर निकला। निदान हम तीनों जन वहांसे चलकर बैठकेमें आ गये।

पावगाशफने मुझसे मुस्कराते हुए कहा,—

"अच्छा, महाशय, उस बालिकाको मैंने मुक्त कर दिया। अब कहिये, पोपको बुलाया जाय और आपके विवाहको आयोजना की जाय? यदि आप स्वीकार करें तो मैं उस बालिकाके पिताका कर्त्तव्य अपने हाथमें ले लूंगा और शेब्रिन सहबालाका काम करेगा। फिर हम लोग जी भरकर आमोद-प्रमोद मनाएंगे।"

मुझे जिस बातका खटका था वही सामने आई। पावगाशफका प्रस्ताव सुनकर शेब्रिन मारे क्रोधके आपेसे बाहर हो गया और आवेशोन्मत्त भावसे पुकार उठा,—

"ज़ार, मैं झूठ बोला, मैंने अपराध किया। किन्तु, ग्रोनेफने भी आपको धोखा दिया है। यह बालिका पोपकी भतीजी नहीं

है, यह आइवन-माइरोनाफकी कन्या है जो दुर्ग पर अधिकार करते समय सूली पर चढ़ाया गया था।"

पावगाशफने मेरी ओर आंखें फाड़कर देखा और फिर खिन्नतापूर्ण कण्ठस्वरमें कहा,—

"क्या बात है?"

मैंने तत्काल दृढताके साथ उत्तर दिया,—

"शेव्रिनकी बात सच है।"

पावगाशफकी आकृति गम्भीर हो गई। उसने कहा.—

"आपने मुझे यह नहीं बताया!"

मैंने कहा,—

"आप स्वयं विचार करें, क्या मैं आपके अनुयायियोंके सामने इसकी चर्चा कर सकता था? यह माइरोनाफकी कन्या है, यह सुनते ही तो वे इसे टुकड़े-टुकड़े कर डालते, किसी प्रकार इसके जीवनकी रक्षा न हो सकती!"

पावगाशफने मुस्कराकर कहा,—

"ठीक है। इन शराबियोंसे यह बेचारी बालिका कभी न त्राण पाती। पोपकी पत्नीने उन्हें धोखा देकर अच्छा किया।"

पावगाशफको सद्भावनाओंमें आया हुआ जानकर मैंने कहा,—

"सुनिये, मैं नहीं जानता कि आपको क्या कहकर पुकारूं और मुझे जाननेकी इच्छा भी नहीं है किन्तु, ईश्वर साक्षी है कि आपने जो उपकार मेरे साथ किये हैं उनका बदला चुकानेके लिये

मैं अपना जीवन भी दे सकता हूं; किन्तु मुझसे अपने आत्म-सम्मान और धर्म-विश्वासके विरुद्ध कोई काम न लीजिए। आप मेरे उपकार-कर्त्ता हैं। जैसा आपने आरम्भ किया है वैसे ही अन्ततक पहुंचने दीजिये। मुझे इस अनाथ बालिका सहित जहां ईश्वर ले जाय, जाने दीजिये। आप कहीं भी रहें और आप पर जो कुछ भी बीते, हम प्रतिदिन ईश्वरसे प्रार्थना करेंगे कि वह आपकी आत्माको शान्ति प्रदान करे....."

पावगाशफके अन्तस्तलमें एक धक्का लगा, उसने कहा,—

"अच्छी बात है, जो आपकी इच्छा। मेरा तो सिद्धान्त है, पूर्ण दण्ड या पूर्ण क्षमा। आप उस सौन्दर्य्य-प्रतिमाको साथ लेकर जहां इच्छा हो प्रसन्नतापूर्वक जाइये। ईश्वर आपको प्रेम और सुमति प्रदान करे।"

फिर उसने शेब्रिनको उसके अधीनस्थ दुर्गों और नाकोंसे सकुशल निकल जानेके लिये मुझे आज्ञा पत्र देनेकी आज्ञा दी। शेब्रिन यह सब देखकर हतबुद्धि होकर गूंगोंकी तरह खड़ा रहा। इसके बाद शेब्रिनको साथ लेकर पावगाशफ दुर्ग निरीक्षण करने चला गया। अपनी यात्राकी तैयारी करनेके बहाने मैं वहीं ठहर गया। मैं शीघ्रताके साथ मेरी-आइवनोवनाके कमरेके पास पहुंचा। भीतरसे सांकल लगी थी। मैंने किंवाड़े खटखटाये।

पालाशाने भीतरसे पूछा,—

"कौन है?"

मैंने अपना नाम बताया। मेरी-आइवनोवनाने भीतरसे मृदु-सुकोमल स्वरमें उत्तर दिया,—

"कुछ क्षण ठहरो पीटर ऐण्ड्रियच, मैं कपड़े बदल रही हूं। तब तक तुम अकोलाइना-पम्फाइलोवनाके पास चलो, मैं वहीं आ रही हूं।"

मैं तुरन्त फादर ग्रेसिमके घरकी ओर चल पड़ा फादर ग्रेसिम और उनकी पत्नीने घरसे बाहर आकर प्रसन्नतापूर्वक मुझसे भेंट की। श्वेवलिच उनसे सब घटना विस्तारपूर्वक पहिले ही बता चुका था।

पोपकी पत्नीने कहा,—

"स्वागत है पीटर-ऐड्रियच, ईश्वरने अनुग्रह की कि हम लोग फिर मिल गये। बताओ सकुशल तो रहे? कोई दिन नहीं बीता, जिस दिन हमलोगोंने तुम्हारी चर्चा न चलाई हो। बेचारी मेरी-आइवनोवना तो बड़े दुखोंमें रही। पर यह तो बताओ पावगाशफ पर कसे जादू चलाया? उसके हाथसे बच जाना बड़ी बात है!"

फादर ग्रेसिमने बात काटकर कहा,—

"ठहरो, यह क्या बक-बक लगा दी। सब सुन तो चुकी हो, फिर अब उन्हीं बातोंके दुहरानेसे क्या लाभ?"

फिर मुझे सम्बोधित करके कहा,—

"आओ, पीटर-ऐण्ड्रियच, बहुत दिनों बाद मिले हो। चलो, भीतर चलें।"

हम लोग घरके भीतर आये। पोपकी पत्नीने जो कुछ घरमें

मौजूद था हमारे सामने रखा ; उसकी ज़बान एक क्षणके लिये भी बन्द नहीं हुई। उसने बताया कि शेब्रिनने मेरी-आइवनोवनाको उसके हवाले कर देनेके लिये उन पर अनेक प्रकारके दबाव डाले, मेरी-आइवनोवना यह घर छोड़नेके लिये राजी न थी, वह कितना रोई-पीटी थी, वह पलाशाके द्वारा बराबर अपना संवाद उन लोगोंको देती रहती थी फिर उसने मेरीको मुझे पत्र लिखनेकी राय दी तथा पलाशाने अरदलीको अपने वशमें करके वह पत्र मेरे पास पहुंचा देनेके लिये बाध्य किया आदि आदि—

मैंने भी बदलेमें अपनी कहानी कह सुनाई। पोप और उनकी पत्नीने जब यह सुना कि पावगाशफको यह ज्ञात हो गया है कि मेरी-आइवनोवनाको अपनी भतीजी बताकर उन्होंने उसको धोखा दिया था तो उनको बड़ा भय हुआ।

अकोलाइना-पम्फाइलोवनाने कहा,—

"क्रासकी शक्ति हमलोगोंकी रक्षा करे। ईश्वर करे विपदके बादल छँट जायँ। निस्सन्देह, एलेग्सी-आइवेनिच, तुम बड़े चतुर हो।"

इसी समय दरवाजा खुला और मेरी-आइवनोवनाने मुस्कुराते हुये कमरेमें प्रवेश किया। उसने अपने पुराने कपड़े उतार डाले थे और अब ऐसे वस्त्रोंमें थी जो सादे होने पर भी सुन्दर थे।

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया किन्तु मेरे मुंहसे शब्द न निकला। हम दोनोंके जी भर आये। कई क्षणतक कोई कुछ न बोल सका। पोप और उनकी पत्नी कमरेसे बाहर चले गये।

अब कमरेमें केवल मैं और मेरी-आइवनोवना रह गये। हम सब कुछ भूल गये थे। अन्तमें हम लोगोंकी बातचीत आरम्भ हुई। मेरी-आइवनोवनाने दुर्गके विजय कालसे लेकर अब तकका सब वृत्तान्त वर्णन किया। हृदय-विदीर्णकारी अपनी विपद-कथा सुनाई। बतलाया कि दुरात्मा शेब्रिनने किस किस प्रकारके प्रलोभन दिये, कष्ट दिये और भयङ्कर यन्त्रणायें दीं। हमको वह पूर्वकालका सुखी जीवन स्मरण हो आया और हम दोनों रो पड़े। अन्तमें मैंने उसको अपनी भविष्य योजना समझाई। मैंने कहा, यह दुर्ग पावगाशफके अधिकारमें है और शेब्रिन यहाँका गवर्नर है यहां रहना किसी प्रकार सम्भव नहीं। ओरनबर्गमें शत्रु घेरा डाले पड़ा है जिससे वहां दुर्भिक्ष, मरी आदि आदि नाना प्रकारके कष्टोंका ताण्डव हो रहा है, वहां जाना भी ठीक नहीं। उसका संसारमें और कहीं कोई आत्मीय-स्वजन भी नहीं। मैंने प्रस्ताव किया कि वह मेरे माता-पिताके पास जाकर रहे। पिताके निश्शील-स्वभावको स्मरण करके वह पहले कुछ झिझकी परन्तु मैंने उसे समझा बुझाकर शान्त किया। मैं यह जानता था कि मेरे पिता एक वीर सैनिककी कन्याका जो अपने देश पर बलि-दान हो गया है, स्वागत करना अपना कर्त्तव्य समझेंगे।—

"प्यारी मेरी-आइवनोवना" मैंने कहा, "मैं तुमको अपनी पत्नी-के रूपमें देखता हूं। विचित्र संयोगने हम लोगोंको अविच्छेद्य रूपसे एकत्र किया है। संसारकी कोई शक्ति हम लोगोंको अलग नहीं कर सकती।"

मेरी-आइवनोविचने मेरी बातें गम्भीरताके साथ सुनीं। उसने यह अनुभव किया कि भाग्यने हम दोनोंको एक सूत्रमें बाँध दिया है। किन्तु उसने अपने पिछले शब्द फिर दुहराये और कहा कि मैं आपकी पत्नी तबतक नहीं हो सकती जबतक कि आपके माता-पिता सहर्ष स्वीकृति नहीं दे देते। मैंने उसका विरोध नहीं किया। हमने परस्पर भावोन्मत्त होकर एक दूसरे का चुम्बन किया और इस प्रकार हमारी भविष्य आयोजना निश्चित हो गई।

लगभग एक घंटा बाद एक सिपाहीने आकर मुझे मार्गमें सुरक्षित रहनेके लिये पावगाशफके हाथका लिखा हुआ आज्ञा-पत्र दिया और कहा,—

"सरकार आपसे मिलना चाहते हैं।"

मैंने पावगाशफको यात्राके लिये बिलकुल तयार पाया। पावगाशफ एक भयङ्कर देश-द्रोही और केवल एक मुझको छोड़कर और सबके लिये अत्यन्त क्रूर तथा निष्ठुर व्यक्ति था। मैं नहीं कह सकता कि उससे विदा होते समय मेरे हृदय में क्या-क्या भावनायें उठीं। किन्तु मैं झूठ क्यों बोलूं? मेरे हृदयमें उसके लिये सहानुभूतिकी बड़ी प्रबल भावना उठी। मेरी प्रबल इच्छा हुई कि मैं उसे उसके अनुगामियोंसे बलपूर्वक पृथक कर दूं और समय रहते ही उसकी रक्षा करूं। किन्तु शेत्रिन तथा अन्य लोगोंकी उपस्थितिके कारण मैं उस समय उससे कुछ कह न सका।

मैं पावगाशफसे एक मित्रके रूपमें विदा हुआ। पावगाशफ-ने भीड़में अकोलाइना-एम्फाइलोवनाको देखा और उसकी ओर अङ्गुली उठाकर धमकाया तथा अर्थ पूर्ण पलक मारा, फिर किबितकामें सवार होकर गाड़ीवानको 'बर्ड' लौट चलनेकी आज्ञा दी। और, जब घोड़े चल पड़े तो उसने गाड़ी पर पीछेकी ओर झुककर, मुझको पुकारा और कहा,—

"महाशय, कदाचित हम लोग फिर कभी मिलें, अच्छा; अब विदा।"

हम लोग सचमुच एक बार फिर मिले, किन्तु एक अद्भुत परिस्थितमें ;—

पावगाशफ चला गया। मैं बड़ी देर तक खड़े-खड़े बर्फीले मैदानमें बेगके साथ दौड़ती हुई किबितकाको देखता रहा। भीड़ छँट गई। शेब्रिन भी चला गया। मैं पोपके घरपर लौट आया। मेरी यात्राकी भी तयारी सब ठीक हो चुकी थी, मैंने विलम्ब करना उचित न समझा। कमानडेण्टकी पुरानी यात्रा गाड़ीमें मेरा सामान ठीक करके रख दिया गया था। घोड़े, गाड़ीमें जोत दिये गये। मेरी-आइवनोवना अपने माता-पिताकी कब्रों पर अलविदा कहने गई। मैंने चाहा कि मैं भी उसके साथ जाऊं किन्तु उसने स्वयमेव अकेले हो जानेका मुझसे अनुरोध किया। कुछ क्षण पश्चात वह वहांसे विलाप करती हुई लौटी। गाड़ी तयार थी। फादर ग्रेसिम पत्नी सहित गाड़ीके पास

आये। मेरी-आइवनोवना, मैं और पलाशा गाड़ीके भीतर बैठ गये, सेवलिच सामने बैठा,—

"विदा मेरी-आइवनोवना और पीटर-ऐण्ड्रियच," पोपकी पत्नीने कहा, "यात्रा शुभ हो। ईश्वर तुम दोनोंको सुखी करे।"

हमारी गाड़ी हांक दी गई। मैंने कमानडेण्ट-भवनकी खिड़की पर शेब्रिनको खड़े देखा। उसके मुंहपर उदासी और द्वेष झलक रहे थे। मैंने पराजित शत्रुके प्रति गर्व प्रकट करना उचित न समझा और दूसरी ओर आंखें फेर लीं।

अन्तमें हम लोग प्रधान द्वारसे बाहर निकले और बेलोगोर्स्क दुर्गको सदाके लिये छोड़ दिया।

तेरहवां परिच्छेद

गिरफ्तारी

इस प्रकार अप्रत्याशित रूपसे मेरीके संयोगके कारण, जिसके लिए आज सवेरे मैं भयानक रूपसे चिन्तान्वित था, मुझे अपनी ज्ञानेन्द्रियों पर इस समय कठिनतासे विश्वास हो रहा था और मैं कल्पना कर रहा था कि मुझ पर जो कुछ बीता है वह कोरा स्वप्न था। मेरी उद्विग्न भावसे अब भी कभी मेरी ओर और कभी मार्गकी ओर बड़े ध्यानसे निरखती थी। ऐसा जान पड़ता

था मानों उसकी आत्म-चेतना अभी तक जागृत नहीं हो पायी है। हम दोनों मौन थे। हमारे हृदय मानसिक उत्तेजनासे लबालब थे। समय अज्ञात रूपसे बीत रहा था। दो घण्टेकी यात्राके बाद हम दूसरे दुर्गके पास पहुंचे। यह दुर्ग भी पावगाशफके अधिकारमें था। यहां हमने घोड़े बदले। पावगाशफने यहां एक दढ़ियल काशकको कमानडेण्ट नियुक्त किया था। हमारे गाड़ीवानने उससे कुछ इस ढंगसे गप-शप की कि उसने मुझे पावगाशफका मित्र समझा और हमारे साथ बड़े अच्छे ढंगसे व्यवहार किया।

हम लोग फिर आगे बढ़े। अंधेरा होने लगा। गाड़ी एक छोटेसे नगरके पास पहुंची। जिस दुर्गमें हमारे घोड़े बदले गये थे वहांके कमानडेण्टसे हमें यह ज्ञात हो चुका था कि यहांसे एक बड़ी सेना पावगाशफके साथ योग देने जा रही थी। सन्तरियोंने हमें रोका। सन्तरियोंके "कौन जा रहा है?" के प्रश्नका हमारे गाड़ीवानने चिल्लाकर उत्तर दिया,—

"जारके मित्र अपनी नव-वधू सहित जा रहे हैं।"

अकस्मात् हसार सेनाके एक दलने वाही-तबाही बकते हुए हम लोगोंको घेर लिया। बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले सारजण्ट मेजर-ने पुकार कर कहा,—

"नीचे उतरो शैतानके मित्र, तुम्हारी और तुम्हारी नववधूकी प्रतीक्षा विपत्तियां कर रही हैं।"

मैं किबितकासे उतर पड़ा और सारजंटसे अनुरोध किया कि

मुझे अपने कमांडरके पास ले चलो। मेरे तन पर सैनिक अफ-सरोंका यूनीफार्म देखकर सिपाहियोंका बकना बन्द हो गया, और सारजण्ट मुझे अपने मेजरके पास ले गया। सेवलिच बड़बड़ाता हुआ मेरे साथ हो लिया।

"जारका मित्र बननेसे यह फल हुआ! जलती आगमें पैर रखा! प्रभो, सर्वशक्तिमान भगवान! हाय, अब क्या होगा?"

किबितका भी धीरे-धीरे हम लोगोंके पीछे चली।

लगभग पाँच मिनटके बाद हमलोग एक छोटेसे किन्तु, साफ-सुथरे घरके निकट पहुंचे। सारजण्ट मेजर मुझ पहरे में रखकर, स्वयम् घरके भीतर गया। वह उलटे पांव तत्काल लौटा और उसने मुझ सूचना दी कि श्रीमान मेजरके पास समय नहीं है कि वे आपको इस समय अपने पास बुलायें और आपसे कुछ पूछें। उन्होंने आपको कैदमें रखनेकी और आपकी पत्नीको अपने सामने उपस्थित करनेकी आज्ञा दी है।

मैं क्रोधसे लाल हो गया मैंने चिल्लाकर कहा,—

"इसका क्या अर्थ है? उनको अपने आपेकी सुधि तो है?"

सारजण्ट-मेजरने कहा,—

"मैं नहीं जानता महाशय, उन्होंने केवल यह आज्ञा दी है कि आपको कैद कर लिया जाय और आपकी पत्नीको उनके सम्मुख उपस्थित किया जाय।"

मैं तीरकी तरह सीढ़ियों पर चढ़ गया, सन्तरीको रोकने अथवा कुछ कहनेका अवसर न मिला। मैं सीधा कमरेमें

पहुंचा। छ हसार अफसर बैठे ताश खेल रहे थे। मेजर भी उन्हीं में था। मैंने वहां आइवन-आइवनोविच-ज़ूरिनको देखा। मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। इसीसे मैं सिमबर्स्कंकी सरायमें सौ रबल हारा था। मैंने पुकारकर कहा,—

"यह क्या, आइवन-आइवनोविच! क्या सचमुच आप हैं?"

"अरे, पीटर ऐण्ड्रियच, किस संयोगसे आज इधर आ पड़े? अभी आप कहांसे आ रहे हैं? भाई, और आपके साथ कौन है? आओ, एक बाजी ताश खेलें।"

"धन्यवाद, किन्तु पहिले मेरे ठहरनेके लिये कोई क्वार्टर दीजिये।"

"कैसा क्वार्टर? आप मेरे साथ रहें।"

"नहीं, मैं आपके साथ नहीं रह सकता, मैं अकेला नहीं हूं।"

"अच्छी बात है, तो अपने साथीको भी यहीं ले आइये।"

"मेरे साथ मेरा कोई मित्र नहीं है। मेरे साथ एक—स्त्री है।"

"स्त्री? स्त्री कहांसे पा गये, भाई पीटर ऐण्ड्रियच?"

इन शब्दोंके साथ ज़ूरिनने कुछ ऐसे सार्थक ढङ्गसे सीटी बजाई कि उसके सब साथी हंस पड़े। मैं हक्का-बक्का रह गया।

ज़ूरिनने फिर कहा,—

"अच्छा, आपको क्वार्टर मिलेगा। मुझे खेद है.....किन्तु आप तो हमारे पुराने मित्र हैं, इस हास-उपहासका बुरा न मानना....."

ज़ूरिनने फिर नौकरको सम्बोधित करके कहा,—

"क्यों, पावगाशफकी स्त्री मित्र अब तक हमारे सामने क्यों नहीं लाई गई ? क्या वह यहां न आनेके लिये हठ कर रही है ? उससे कह दो कि बुलाने वाला सभ्य-मनुष्य है, और यदि न आ रही हो तो उसे घसीट कर ले आओ।"

मैंने ज़ूरिनसे कहा,—

"यह आप क्या कह रहे हैं ? आप पावगाशफकी किस स्त्री मित्रके सम्बन्धमें बात कर रहे हैं ? वह स्वर्गीय कप्तान माइरोनाफकी कन्या है। मैंने उसे कारागारसे मुक्त किया है। वह अनाथ है। उसे मैं अपने माता-पिताके पास छोड़ने जा रहा हूं।"

"अरे, तो क्या जिसके सम्बन्धमें अभी मुझे सूचना दी गई थी वह आप ही थे ? यह क्या रहस्य है ? बात क्या है ?"

"मैं सब बतलाऊंगा, पहिले आप उस बेचारी बालिकाके जिसे आपके हसारोंने बुरी तरहसे डरा और घबरा दिया है निश्चिन्त होनेका प्रबन्ध कीजिए।"

ज़ूरिनने तत्काल आवश्यक आज्ञायें दीं। फिर स्वयं घरसे बाहर आकर मेरी-आइवनोवनासे क्षमा-प्रार्थना की और कहा कि अनजानमें भूल हो गई है। और सारजण्ट-मेजरको मेरी आइवनोवनाको नगरके सबसे सुन्दर भवनमें ठहरानेकी आज्ञा दी। मैं ज़ूरिनके पास ताश-वाश खेलने लगा और रातमें वहीं रह गया।

हम लोगोंने एक साथ खाना खाया। और लोग चले गये, केवल ज़ूरिन और मैं कमरेमें रह गये। मैंने अपनी भयङ्कर कहानी

आद्योपान्त जूरिनको सुनाई, उसने बड़े ध्यानसे सब सुना। जब मैंने अपनी बातचीत समाप्त की तो उसने सिर हिलाया और कहा,—

"बड़ा अच्छा हुआ बन्धु, किन्तु एक बात मेरी समझमें न आई। विवाह क्यों करने जा रहे हो? यह क्या पागलपन सवार हुआ है? मैं आपको एक अफ़सर और सम्भ्रान्त व्यक्तिकी हैसियतसे धोका नहीं देना चाहता, विश्वास मानो यह विवाह-इवाह केवल व्यर्थका झगड़ा है। परोंमें विवाहकी बेड़ियां डाल कर कच्चे-बच्चोंके झमेलेमें पड़ने क्यों जा रहे हो। सुनो, मित्र मेरी बात सुनो। इस कप्तानकी कन्याको दूर करो। सिमबर्स्कका मार्ग पूर्ण रूपसे सुरक्षित है। इसे कल अकेली अपने माता-पिताके पास भेज दो और तुम यहीं हमारे साथ रहो। ओरनबर्ग लौटकर जानेकी आवश्यकता नहीं है, यदि कहीं फिर लुटेरोंके हाथमें पड़ गये तो इस बार उनके हाथसे उबरना कठिन हो जायगा और यह प्रेम-व्रम सब धरा रह जायगा।"

यद्यपि प्रकट रूपसे मैंने हां नहीं की, तौ भी मैंने अनुभव किया कि कर्त्तव्य और आत्म-सम्मानके नाम पर मुझे महारानी-की सेनामें रहना चाहिये। मैंने जूरिनके उपदेशानुसार मेरी-आइवनोवनाको अकेली पिताके पास भेजना निश्चय किया, मैंने सोचा कि मैं यहीं जूरिनके साथ रहूंगा।

सेवलिच मेरे कपड़े उतारनेके लिये मेरे पास आया। मैंने उससे कहा कि कल तुमको मेरी-आइवनोवनाको साथ लेकर

पिताके पास जानेके लिये यात्रा करनी होगी। तैयार रहना। उसने असम्मति प्रकट करते हुए कहा,—

"यह क्या कह रहे हो पीटर ऐण्ड्रियच? मैं भला तुमको अकेला छोड़ सकता हूं? मैं न रहूंगा तो तुम्हारी देख-भाल कौन करेगा? तुम्हारे माता-पिता क्या कहेंगे?"

मैंने सोचा कि हठी सेवलिच यों न मानेगा, इसलिये मैंने लल्लोपत्तो और दम-दिलासेसे काम लेना उचित समझा। मैंने उससे कहा,—

"मेरे सच्चे शुभचिन्तक आरकिप-सेवलिच, मुझे यहां नौकर-की बिलकुल आवश्यकता नहीं है और यदि मेरी-आइवनोवना अकेली गई और तुम साथमें न हुए तो अनिष्ट चिन्तनाके मारे मुझे क्षण भर भी कल न पड़ेगी। उसकी सेवा करना और उसे सुख पहुंचाना, मेरी सेवा करना और मुझे सुख पहुंचाना है। क्योंकि मैंने मेरी-आइवनोवनाके साथ विवाह करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है। घटना-चक्रने अवसर दिया कि हम दोनों विवाहित रूपमें एक साथ होंगे।"

सेवलिचने साश्चर्य तालियां बजाते हुए कहा,—

"विवाह! लड़का विवाह करना चाहता है! किन्तु, तुम्हारे पिता क्या कहेंगे? और तुम्हारी माँ क्या सोचेंगी?"

मैंने उत्तर दिया,—

"वे जब मेरीसे परिचित हो जायंगे तो निस्सन्देह प्रसन्नता-पूर्वक वे अपनी सम्मति प्रदान करेंगे। मेरे पिता और मेरी माता-

का तुम्हारे ऊपर बड़ा विश्वास है। मुझे भरोसा है कि माता-पिताके विचारोंको मेरे अनुकूल बननेमें तुम मेरी सहायता करोगे, करोगे न ?"

मेरी बातोंका बुड्ढे पर कुछ असर पड़ा। उसने कहा,—

"ओह, पीटर-ऐण्ड्रियच, यद्यपि तुम समयसे कुछ पहले ही विवाह करनेका विचार कर रहे हो, किन्तु मेरी आइवनोवना जैसी अच्छी लड़कीको छोड़ना भी उचित न होगा, तुम जो कहते हो मैं वही करूंगा। मैं मेरीके साथ जाऊंगा और तुम्हारे माता-पिताको अत्यन्त नम्र शब्दोंमें समझाऊंगा कि ऐसी सुन्दर, सद्गुण सम्पन्न लड़कीके लिए दहेजकी आवश्यकता नहीं हुआ करती।"

मैंने सेवलिचको धन्यवाद दिया और वहीं, जूरिनके कमरे में, लेट रहा। मेरा मन उत्तेजित था, अतएव मैं चुपचाप लेटा न रह सका; मैंने जूरिनसे फिर वार्त्तालाप आरम्भ किया। जूरिनने प्रारम्भमें तो मेरी बातें बड़े ध्यानसे सुनीं। किन्तु धीरे-धीरे उसके शब्द न्यून और असम्बद्ध होने लगे और अन्तमें मेरी बातका उत्तर देनेके बदले उसने खर्राटे लगाना आरम्भ किया। मुझे विवश होकर उसके उदाहरणका अनुकरण करना पड़ा।

दूसरे दिन सवेरे मैं मेरीके पास गया और अपने विचार उससे कहे। उसने मेरे विचारोंकी उपयुक्तता समझी और उनके अनुसार काम करना स्वीकार किया। जूरिनकी सेना उसी दिन कूच करनेवाली थी। व्यर्थ गंवानेके लिए समय नहीं था। मेरीको सेवलिचकी हिफ़ाज़तमें सिपुर्द कर मैंने विदा किया और

माता-पिताके नाम एक पत्र उसे दे दिया ; मेरी रो पड़ी और मृदु स्वरमें कहा,—

"विदा पीटर ऐण्ड्रियच, ईश्वर ही जाने हम लोग फिर एकत्र हो सकेंगे या नहीं। किन्तु जो हो, मैं तुमको कभी न भूलूंगी, मृत्युकी घड़ी तक इस हृदयमें तुम—केवल तुम विराजते रहोगे।"

मैंने उत्तर देना चाहा, किन्तु हम लोगोंके पास और लोग भी एकत्र हो गये थे इसलिये उन सबके सामने मैंने अपनी हृद्-भावनायें प्रकट करना उचित न समझा। निदान मेरी-आइव-नोवना विदा हुई। मैं चुप और उदास जूरिनके पास लौट आया। उसने मेरी उदासी दूर करनेका प्रयत्न किया, मैंने भी अपनी विचार-प्रगति दूसरी ओर मोड़नेकी चेष्टा की।

फरवरीका महीना समाप्त हो रहा था। अब तक शीतकी भीषणता सैनिक दलोंके एकत्र होनेमें एक महान बाधा थी। अब यह बाधा दूर हो चली। जनरलोंने मिलकर पावगाशफ पर धावा बोलनेकी तयारी आरम्भ की। पावगाशफने ओरनबर्ग विजय कर लिया था और आजकल वह वहीं था। हमारी सेनाओंने मिलकर चढ़ाई आरम्भ की। डाकू पराजित होने लगे। गांवके गांव जो डाकुओंके हाथमें चले गये थे फिर हम लोगोंके अधिकारमें आने लगे, परिस्थित शीघ्र ही इस युद्धका सफल अन्त होनेकी आशा दिलाने लगी।

कुछ दिनों पश्चात् प्रिंस गोलाइजनने टेटिशफ-दुर्गमें पाव-गाशफको पराजित किया। उसके अनुगामी उसका साथ छोड़

भागे और उसकी पूरी तरह हार हुई। फिर ओरनबर्गका दुर्ग डाकुओंके अधिकारसे मुक्त किया गया। विद्रोही वाशकरोंने भी हार खाई और वे तितिर-बितिर हो गये। वसन्तके आरम्भमें हम लोग तातारियोंके एक छोटेसे गांवमें थे। नदियोंमें बाढ़ आ गई और सड़कें अगम्य हो गईं। हम लोगोंने अकर्मण्यताके इस समयको यह विचार कर सह लिया कि लुटेरों और डाकुओं-का यह छोटा सा युद्ध अब शीघ्र ही समाप्त हो जायगा।

किन्तु पावगाशफ अबतक न पकड़ा गया था। शीघ्र ही साइबेरियाके शिल्प प्रधान प्रदेशोंमें पहुंच कर एक बार उसने फिर अपना संगठन किया। और पहिलेकी भांति लूट मार, और दुर्गों पर अधिकार करना आरम्भ कर दिया। उसकी सफलताके समाचार फिर चारों ओर फैल गये। हम लोगोंने सुना कि साइबेरियाके कई एक दुर्गों पर उसने भीषण निष्ठु-रताके साथ अधिकार कर लिया। फिर समाचार मिला कि कजानको पावगाशफने विजय कर लिया और अब सीधे मास्को पर धावा बोल दिया है। मास्कोमें इस समाचारके पहुंच जाने से कि विद्रोहियोंकी शक्ति पूर्ण रूपसे नष्ट भ्रष्ट कर दी गई—सैन्य सञ्चालकोंमें बड़ी गड़बड़ी और क्रम-विहीनता फैल गई थी। जूरिनको वालगा पार करके शीघ्र आनेका आदेश मिला।

हमारी सेनायें कैसे बढ़ीं? किन-किन विपदाओंका सामना करना पड़ा? और इस युद्धका अन्त कैसे हुआ?—आदि बातोंका वर्णन करके मैं पाठकोंका समय नहीं नष्ट करना

चाहता। इस सम्बन्धमें इतना ही जान लेना बस होगा कि इस बारका युद्ध यत्परोनास्ति विपत्ति पूर्ण था। शान्ति और विधानका अन्त हो गया। ज़मींदार जङ्गलोंमें जा छिपे। लुटेरों के दलने चारों ओर तहस-नहस मचा दिया। अपने दलसे बिछुड़ी हुई सेनाओंके कमांडरोंमें कुछ दण्डित हुए और कुछ क्षमा किये गए। रूस राज्यके जिस विस्तृत भूभागमें बलवा हुआ था उसकी दशा भीषण हो उठी; भगवान करें कि ऐसा निष्ठुर और भयङ्कर विद्रोह फिर कभी देखनेमें न आवे।

पावगाशफ भागा। आइवन-आइवनोविच-माइकेलसनने उसका पीछा किया। हम लोगोंको समाचार मिला कि पावगाशफ पूरी तरह हार गया। और अन्तमें जूरिनके पास पावगाशफके गिरफ्तार कर लिये जानेका समाचार और ठहर जानेकी आज्ञा आ गई। युद्ध समाप्त हो गया। अब मुझे घर जानेका अवसर मिला, मेरी आइवनोवनाका अबतक कोई समाचार न मिला था। मैं यह सोच कर कि शीघ्र ही माता-पिताके दर्शन करूंगा और मेरी-आइवनोवनाको देखूंगा—आह्लादित हो उठा। मैं बच्चोंकी तरह उछल पड़ा और नाचने लगा। मेरी यह अवस्था देखकर जूरिनको हंसी आ गई। उसने मुंह चिढ़ाकर, व्यङ्ग भावसे कहा,—

"विवाहसे कोई लाभ न होगा। विवाह करके तुम अपनेको खो दोगे।"

इसी समय एक विचित्र विचारने मेरे आनन्दमें विष बो

दिया। मुझे बाबगाशफका स्मरण हो आया। न जाने कितने निरपराधियोंका उसने रक्तपात किया और न जाने कितने हृदयों-को अपने क्रूर अत्याचारसे तड़पाया और कलछाया है! उसका भयंकर परिणाम सोचकर मैं सिहर उठा।

मैंने अपने मनमें व्याकुलतासे कहा,—

"हाय, तुमने अपने कलेजेमें तलवार क्यों न भोंक ली? अथवा तुम गोलीके सामने क्यों न खड़े हो गये?—तुम्हारे लिये तो यही अच्छा होता!"

मेरे हृदयमें उसके लिये सहानुभूति होना स्वाभाविक बात थी। सूली पर चढ़ते-चढ़ते मुझे उसने उतार लिया था और मेरी प्रेम-प्रतिमाको दुष्ट शेब्रिनके पंजेसे मुक्त किया था। मैं उसके लिये क्यों न दुखी होता!

जूरिनने मेरी छुट्टी स्वीकार कर ली। थोड़े ही दिनोंमें मैं अपने घर पहुंचूंगा, आत्मीय-स्वजनोंसे मिलूंगा, सौन्दर्य्य-राशि मेरी-आइवनोवना फिर इन आंखोंके सामने होगी..... इन विचारोंने मेरे हृदयमें एक तूफान पैदा कर दिया, मेरा हृदय आन्दोलित हो उठा।

वह दिन आ गया जिस दिन मैंने यात्रा करनेका निश्चय किया था। मैं शीघ्रतासे तयार होकर चलने ही को था कि इसी समय जूरिन मेरे क्वार्टरमें आया। जूरिनके हाथमें एक कागज था और दृष्टिमें थी चिन्तना और उदासीनताकी एक गहिरी छाप। मेरे कलेजेमें एक धड़का समा गया, बिना कुछ जाने

हुए ही मेरे जी में भय और त्रास भर गया। उसने मेरे नौकरको कमरेसे बाहर जानेको कहा और फिर मुझसे कहा कि आपसे कुछ कहना है। मैंने घबड़ाकर कहा,—"कहिये क्या बात है?"

मेरे हाथमें कागज देते हुये जूरिनने कहा,—

"महान दुख पूर्ण समाचार है, पढ़िये, यह कागज अभी मुझे मिला है।"

मैंने उसे पढ़ा। यह राजाज्ञा थी जो गुप्त रूपसे प्रत्येक कमाण्डरके पास भेजी गई थी। उसमें लिखा था पीटर ऐण्ड्रियच जहां मिले उसे तत्काल गिरफ्तार करलिया जाय और अविलम्ब कजानमें उस कमीशन (विचार-समिति) के सामने उपस्थित किया जाय जो अभियुक्त पावगाशफके निर्णयके लिये नियुक्त हुआ है।

कागज मेरे हाथसे गिर गया। जूरिनने कहा,—

"क्या करूं! कोई प्रतीकार नहीं है, आज्ञा पालन करना मेरा कर्त्तव्य है। जान पड़ता है कि तुम्हारे साथ पावगाशफने जो व्यवहार-वर्त्ताव किया वे बातें ऊपर तक किसी प्रकार पहुंची हैं। मुझे आशा है कि परिणाम सन्ताप-जनक न होगा। कमीशनके सामने तुम निर्दोष प्रमाणित होगे। घबड़ाओ मत। यात्राके लिए तयार हो जाओ।"

मैंने साम्राज्यके विरुद्ध खड़े होनेका कभी विचार तक न किया था, अतएव कमीशनके सामने उपस्थित होनेकी बात सोचकर मैं विचलित न हुआ; किन्तु यह सोचकर कि अब फिर

कई महीनोंके लिये मेरीसे मिलना टल गया—मैं अधीर हो उठा।

गाड़ी तयार थी। मैं गाड़ी पर बैठा। हाथमें नंगी-तलवार लेकर दो हसार सैनिक मेरे अगल बगल बैठे। चलते समय जूरिन पूर्ववत् मित्र भावसे मिला। हम अपने गन्तव्य स्थानको चल पड़े।

चौदहवां परिच्छेद

निर्णय

मुझे निश्चय हो गया कि बिना छुट्टी लिये ओरनबर्ग-दुर्गसे चला आना ही मेरी गिरफ्तारीका कारण है। इस संबन्ध-में मैं अपनी सफाई असानीसे दे सकता था। क्योंकि शत्रुके विरुद्ध धावा करनेकी मनाही नहीं थी वरन् ऐसा करनेके लिये उत्साह भी दिया जाता था। अनाज्ञाकरिताके बदले मेरे ऊपर अनु-पयुक्त औद्धत्यका अपराध लगाया जा सकता था पावगाशफके साथ मेरी मित्रताके साक्षी मिल सकते थे उससे मुझ पर सन्देह अवश्य हो सकता था। मैं रास्ते भर उन प्रश्नोंके उत्तर जिनके मुझसे पूछे जानेकी सम्भावना थी, सोचता रहा। मैंने निश्चय किया कि कमीशनके सामने जो कुछ अबतक हुआ है सत्य सत्य

और स्पष्ट रूपसे वर्णन करूंगा। मुझे विश्वास था कि अपनी सफाई देनेका इससे बढ़कर सरल और सुनिश्चित उपाय दूसरा नहीं हो सकता।

मैं कज़ान पहुंच गया। नगर लूट लिया और अन्तमें फूंक दिया गया था। नगरकी गलियोंसे निकलने पर जले हुए पत्थरोंका ढेर, और काली, टूटी-फूटी और बिना छतकी दीवालें देख पड़ीं। पाशगाशफ ये ही चिन्ह छोड़ गया था। मैं दुर्गमें जो जलनेसे बच गया था, पहुंचाया गया। हत्यारोंने मुझे गारदके अफसरको सौंप दिया। उसने लोहार बुला कर मेरे पैरोंमें बेड़ियाँ डाल दीं। अनन्तर मैं जेलखानेकी एक संकरी और अन्धेरी कोठरीमें जिसमें केवल एक खिड़की थी कैद कर दिया गया।

यह प्रारम्भिक शकुन आशाजनक नहीं था। परन्तु फिर भी मैं निराश न हुआ, और न मेरा साहस टूटा। इस विपद-कालमें मैंने धैर्य्य धारण करके विशुद्ध किन्तु शोक सन्तप्त हृदयसे मैंने ईश्वरकी प्रार्थना की और आगे क्या होगा—इसका सोच-विचार छोड़कर शान्तिपूर्वक सो गया।

दूसरे दिन जेलरने मुझे जगाया, और कमीशनके सामने उपस्थित होनेकी आज्ञा दी। दो सिपाही मुझे कमानडेण्ट-भवन-की ओर ले चले। सिपाही सेहनमें ही रुक गये और मुझे भीतर जानेको कहा। खिड़कीके पास एक अलग मेज पर सेक्रेटरी कान पर कलम और सामने मेज पर कागज रखे बैठा था। वह मेरा बयान लिखनेके लिये बिलकुल तयार था।

मेरा बयान लिया जाने लगा। मेरा नाम पूछा गया, और फिर जीविकाका साधन। जनरलने मुझसे पूछा कि क्या तुम ऐण्ड्री-पीटरोविच-ग्रीनेफके पुत्र हो. मेरे हाँ कहने पर उसने दृढ़-कठोर स्वरमें कहा,—

"कितने परितापकी बात है कि एक ऐसे सम्मानित व्यक्तिका पुत्र ऐसा नालायक निकले!"

मैंने शान्तिके साथ उत्तर दिया कि मेरे विरुद्ध चाहे जो अभियोग लगाये गये हों किन्तु मुझ आशा है कि मैं सत्यको प्रकाश कर अपनी सफाई दे सकूंगा।

"तुम बड़े धृष्ट जान पड़ते हो," उसने भ्रुकुटी चढ़ाकर कहा, किन्तु तुम्हारे समान अनेक अपराधी हम देख चुके हैं।"

मुझसे प्रश्न किया गया,—

"तुमने किस परिस्थितिमें, कब और किस कामके लिये पावगाशफकी नौकरी की थी?"

मैंने क्रुद्ध भावसे उत्तर दिया,—

"एक उच्चश्रेणीके व्यक्ति और एक अफसरकी हैसियतसे मैं पावगाशफकी नौकरी कदापि नहीं कर सकता था, मैंने कभी उसकी नौकरी नहीं की।"

प्रश्नकर्त्ताने कहा,—

"अच्छा, तब यह कुलीन व्यक्ति और अफसर ही अकेला उसके हाथसे कैसे बचा, जब कि उसके साथके अन्य सब अफसर निर्दयता पूर्वक मार डाले गये? और यह कुलीन व्यक्ति और

अफसर लुटेरों और डाकुओंके साथ रङ्ग-रेलियां कैसे कर सका और लुटेरोंके नेतासे वह एक अंगरखा, एक घोड़ा और अर्ध रबलकी भेंट कैसे स्वीकार कर सका ? यह आश्चर्यजनक मित्रता कैसे हुई और यदि यह राजद्रोह नहीं, तो क्या अत्यन्त घृणित और असभ्य कायरता भी नहीं है ?"

गारदके अफ़सरकी बात सुन कर मैं बड़ा क्षुब्ध हुआ; बड़े आवेशके साथ मैंने अपनेको निरपराध सिद्ध करना आरम्भ किया। मैंने बताया कि सेनामें भरती होनेके लिए जानेके समय मार्गमें भयङ्कर तूफान आया था और उस समय पापगाशफसे मार्ग-दर्शकके रूपमें मेरा परिचय हुआ था। बैलोगोर्स्क-दुर्ग पर अधिकार करनेके समय मुझे पहचान कर उसी परिचयके कारण उसने मुझे सूली नहीं दी। मैंने अंगरखा और घोड़ेका मिलना स्वीकार किया और कहा कि यह सब कुछ होते हुए भी मैंने बैलोगोर्स्क दुर्गको अन्तिम घड़ी तक शत्रुसे बचाया था।

अन्तमें मैंने कहा कि ओरनबर्ग दुर्गका जेनरल मेरे कथनकी सत्यताकी साक्षी दे सकता है और बता सकता है कि जब दुर्ग सांघातिक रूपसे घिरा था तब मैंने किस लगनसे काम किया था।

न्यायाधीशने मेज परसे एक खुली चिट्ठी उठा ली और उसे ज़ोरसे पढ़ना आरम्भ किया,—

"श्रीमानने पीटर ऐण्ड्रियच ग्रीनेफके सम्बन्धमें—जिस पर वर्त्तमान विद्रोहमें भाग लेनेका, विद्रोहियोंके नेतासे मेल करनेका

और सेना-विधान तथा राज-भक्तिकी शपथ भंग करनेका अपराध लगाया गया है—मुझसे पूछा है। उत्तरमें निवेदन है कि उक्त अभियुक्त अक्टूबर १७९३ के आरम्भमें यहां आया और वर्त्तमान वर्षकी चौथी फरवरी तक यहाँ रहा। इसके बाद फिर वह यहाँ नहीं देख पड़ा। कुछ भागे हुए लोगोंसे मैंने सुना था कि वह पावगाशफके कैम्पमें था, और उसके साथ बेलोगोर्स्क-दुर्गको गया था जहां वह पहले सैनिक अफसर था, उसके आचरणके सम्बन्धमें मैं केवल इतना कह सकता हूं कि....."

जनरलने आगे पढ़ना बन्द कर दिया और अत्यन्त कटुतासे मुझसे कहा,—

"बोलो, अब इस पर क्या कहते हो?"

मैं उत्तरमें अपने और मेरी-आइवनोवनाके सम्बन्धकी पूरी घटना स्पष्ट रूपसे कहने ही वाला था कि तत्काल मेरे हृदयमें यह विचार उठा,—"यदि मैंने मेरी-आइवनोवनाका नाम लिया तो कमीशन उसे भी अपने सम्मुख उपस्थित होनेकी आज्ञा देगा। मेरी-आइवनोवनाके पवित्र नामका इन दुरात्मा लुटेरोंकी चर्चाके साथ आना महान कलंककी बात है।"—मैं सिहर उठा और मैंने मौन रहना ही उत्तम समझा।

न्यायाधीशोंके मनमें आरम्भमें मेरा उत्तर सुनकर जो यत्-किंचित् सद्भाव उत्पन्न होता प्रतीत हुआ था वह अब मेरी घबराहट देखकर दूर हो गया। गारदके अफसरने आज्ञा दी कि मेरे प्रधान अभियोकासे मेरा मुक़ाबला कराया जाय। जनरलने

मेरे अभियोक्ताको बुलानेकी आज्ञा दी। मैं शीघ्रतासे दरवाजेकी ओर घूम कर अपने अभियोक्ताकी प्रतीक्षा करने लगा। कुछ क्षण पश्चात् बेड़ियोंकी झनकार सुनाई पड़ी, दरवाजा खुला और शेब्रिन भीतर आया। मैंने विस्मयसे उसके मुंहकी ओर देखा। वह सूखकर कांटा हो गया था, शरीर बिलकुल पीला पड़ गया था। उसके बाल जिनका कुछ ही समय पूर्व मैंने काले देखे थे अब बिलकुल भूरे हो गये थे। उसकी लम्बी दाढ़ी ऐसी उलझी थी मानों बरसोंसे कंघा न की गई हो। उसने अपना बयान धीमे किन्तु दृढ़ स्वरमें दिया। उसने कहा कि मैं पावगाशफकी ओरसे गुप्तचर बनकर ओरनबर्ग गया था। नगरमें जो कुछ होता था मैं प्रतिदिन उसकी सूचना पावगाशफको देता था। अन्तमें मैं खुल्लम-खुल्ला पावगाशफके साथ हो गया और दुर्ग-दुर्ग उसके साथ घूमने लगा तथा पुरस्कार, और पद-सम्मानके प्रलोभनसे अपने ही लोगोंको अपराधोंमें सान सानकर सब प्रकारसे उनके साथ अनर्थ करनेकी चेष्टा करने लगा।

मैंने बड़े ध्यानसे शेब्रिनका बयान सुना। मुझे यह देखकर हर्ष और सन्तोष हुआ कि दुरात्मा शेब्रिनने अपने बयानमें मेरी-आइवनोवनाकी चर्चा नहीं की। चाहे उसके आत्म अभिमानने इस लिए उसे उसका नाम न लेने दिया हो कि उसने तिरस्कार पूर्वक उसके प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया था, अथवा फिर वही कारण हो जिसने मुझे मौन बना दिया था। कारण कोई भी रहा हो, बेलोगोस्कके कमानडेण्टकी कन्याका नाम कमीशनके

सामने न आया। अब मेरा पहिला विचार और भी दृढ़ हो गया और जब न्यायाधीशोंने पूछा कि शेब्रिनके साक्ष्यके उत्तरमें मेरा क्या वक्तव्य है तो मैंने उत्तर दिया कि मैं पहिले जो बयान दे चुका हूं उसके अतिरिक्त अपनी सफाईमें और मुझे कुछ नहीं कहना है।

जनरलने हम लोगोंको हटाये जानेकी आज्ञा दी। हम दोनों साथ ही कमरेसे बाहर निकले। मैंने स्थिर दृष्टिसे शब्रिनकी ओर देखा किन्तु एक शब्द भी उससे न कहा। वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराया। उसकी मुस्कुराहटमें द्वेषकी झलक थी। वह मेरे सामने अपने बेड़ौ-जकड़े पैरोंको जोरसे पटक कर, आगे बढ़ गया। मैं कारागारमें लाया गया। फिर मैं दुबरा कोर्टके सामने बयान देनेके लिये नहीं बुलाया गया।

इसके आगे मेरे सम्बन्धमें पाठकोंके जाननेके योग्य जो बातें रह गई हैं वे यद्यपि मेरी देखी हुई नहीं हैं, किन्तु उनको मैंने विस्तार पूर्वक इतनी बार सुना है कि वे मेरी स्मृतिमें अमिट रूपसे अङ्कित हो गई हैं, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मानो मैंने स्वयं उनमें भाग लिया हो।

मरी-आइवनोवना मेरे घर पहुंची। मेरे माता-पिताने सदय-हृदयसे जैसा कि पुराने समयमें समझदार लोगोंकी प्रवृत्ति रहती थी, उसका आदर और स्नेहके साथ स्वागत किया। उन्होंने ईश्वर की यह अनुग्रह समझी कि एक अनाथ बालिकाको शरण देनेका उनको सुअवसर प्राप्त हुआ। यह असम्भव बात थी कि मेरी-आइवनोवनाके सुन्दर व्यवहार-बर्तावका मेरे माता-पिताके ऊपर

प्रभाव न पडता। मेरे माता-पिताके हृदयमें शीघ्र ही मेरी-आइवनोवनाके प्रति ममत्व उत्पन्न हो गया। धीरे धीरे मेरे माता-पिता को अनुभव हो गया कि मेरी-आइवनोवनासे मेरा प्रेम करना बौड़मपन न था, अब उनके हृदयमें स्वयं यह कामना जागृत हो गई कि इसको अपनी पुत्र-बधू बनावें।

मेरी गिरफ्तारीके समाचारने मेरे घरमें बेकली उत्पन्न कर दी। मेरी-आइवनोवनाने मेरे माता-पितासे पावगाशफसे मेरे विचित्र परिचयकी कहानी कही थी। पूरी घटना सुनकर न केवल वे निश्चिन्त ही हुए थे किन्तु अनेक बार वे दिल खोलकर हँसे भी थे। मेरे पिताको विश्वास न होता था कि मैंने इस बदनाम बलवाईका जिसका उद्देश्य धनिकोंको सत्यानाश करना और राज्यको नष्ट करना था, साथ दिया होगा। उन्होंने सेवलिचसे अनेक प्रकारके अनेक प्रश्न किये। सेवलिचने इस बातसे तो इनकार नहीं किया कि मैं पावगाशफके यहाँ मेहमान रहा और मेरे साथ पावगाशफका वर्त्ताव अत्यन्त उदार रहा किन्तु, साथ ही उसने इस बातका भी पिताको दृढ़ विश्वास दिलाया कि मैं अपनी राजभक्तिकी शपथसे रत्ती भर भी नहीं डिगा था। जो हो, मेरे माता-पिता मेरी कृतिसे सन्तुष्ट हुए और मेरे सम्बन्धमें और समाचार पानेके लिये उत्सुकताके साथ मार्ग देखने लगे। किन्तु मेरी-आइवनोवनाके हृदयमें बड़ी अशान्ति थी; परन्तु वह अत्यन्त नम्र और विचारवान स्वभावकी थी, अवएव मौन रहती थी।

कई सप्ताह बीत गये.....मेरे पिताने अचानक सेन्टपीटर्स-

बर्गसे भेजा हुआ हमारे आत्मीय प्रिंस बो—का पत्र पाया। पत्र मेरे सम्बन्धमें था। साधारण शिष्टाचारके पश्चात् पत्रमें जो लिखा हुआ था उसका आशय यह था कि पीटर ऐण्ड्रियच पर विद्रोहियोंका साथ देनेका जो सन्देह था वह दुर्भाग्यवश सत्य प्रमाणित हो गया है; उसे मृत्युदण्ड ही दिया जाता किन्तु, महारानीने मेरे पिताकी सच्ची सेवाओं और उनके सफ़ेद बालोंका विचार करके मुझपर दया प्रदर्शित की और घृणित मृत्यु दण्डके बदले आजन्म कालेपानीका दण्ड दिया है। इस पत्रसे पिताको अकस्मात् ऐसा धक्का लगा कि उनकी अवस्था जीवन-मृत हो गई। उनकी सदैवकी दृढ़ता खो गई और उनके शोकने जो पहले अव्यक्त रहा करता था, अब व्यक्त रूप धारण कर लिया।

आपेसे बाहर हो उन्होंने कहा,—

"क्या, मेरे पुत्रने पावगाशफके साथ विद्रोहमें भाग लिया! हे न्यायवान प्रभो! यह मैं क्या देखता हूं? क्या मैं अबतक यही देखनेके लिये जीता रहा! महारानीने उसका जीवन बचा लिया! किन्तु यह तो मेरे लिये और व्यथा-जनक बात हुई! जल्लादोंके द्वारा फांसीके तख्ते पर मरनेमें कोई भीषणता नहीं है—मेरे प्रपितामह अपने आत्म-विश्वाससे न डिगे और सूलीपर चढ़ गये, मेरे पिताने वालिअनस्काई और कारोकाशफके साथ मृत्यु-यंत्रणा स्वीकार की, किन्तु एक कुलीन व्यक्तिके लिए अपना वचन भङ्ग करना, शपथ तोड़ देना और लुटेरों, हत्यारों और भगोड़े गुलामोंका साथ

देना !.....हमारी कुलीन जातिके लिये घोर लज्जा और अपमानकी बात है।"

मेरे पिताका दुःख देखकर मेरी माता घबड़ा गईं, उन्हें उनके सामने रोनेका साहस न होता था। 'दूसरोंकी सम्मति पर अधिक विश्वास न करना चाहिए,' 'यह संवाद ग़लत भी हो सकता है,' आदि बातें कह कर उन्होंने उन्हें शान्त करनेकी चेष्टा की। किन्तु मेरे पिता किसी प्रकार शान्त न हुए।

सबसे अधिक दुखी हुई मेरी आइवनोवना। उसे यह दृढ़ विश्वास था कि यदि मैं चाहता तो अपनी सफ़ाई दे सकता था। उसने मेरे मौनावलम्बन का कारण अनुमान कर लिया और समझ लिया कि मेरी विपत्तिका कारण वही है। उसने अपना कष्ट किसी पर प्रकट न होने दिया और लुक छिप कर रोने लगी। वह यही सोचा करती कि मेरे बचावका क्या पथ है।

एक दिन शामको मेरे पिता कौच पर बैठे हुए, "कोर्ट-कैलेण्डर" के पन्ने उलट रहे थे, किन्तु उनके विचार उड़े हुए थे और कैलेण्डर उन पर अपना स्वाभाविक प्रभाव न डाल सकता था। मेरी मां, चुपचाप एक वेस्ट-कोट पर बेल-बूटे काढ़ रही थीं, बीच-बीचमें उनके अश्रुबिन्द भी टपक पड़ते थे। मेरी आइवनोवना भी उसी कमरेमें बैठी अपने काममें लगी हुई थी। अकस्मात् मेरी आइवनोवनाने कहा कि उसका सेण्टर्स पीटर्सबर्ग जाना अनिवार्य्य है। उसने मेरे माता-पितासे अपनी यात्राका

आयोजन कर देनेकी प्रार्थना की। मेरी मांको यह प्रस्ताव बहुत अखरा। मांने कहा,—

"तुम सेण्टस्पीटर्सबर्ग जाकर क्या करोगी? मेरी आइवनोवना, क्या अब तुम भी हमलोगोंको छोड़कर चली जाओगी?"

मेरी आइवनोवनाने उत्तरमें प्रार्थना की,—

"इसी यात्रा पर मेरा भाग्य निर्भर है। मेरे पिता साम्राज्यके हितके लिये बलिदान हुए हैं। मैं वहां जाऊँगी और उच्च अधिकारीवर्गसे सहायता और रक्षाकी प्रार्थना करूँगी।"

मेरे पिताने अपना सर नीचा कर लिया; मेरी आइवनोवनाके शब्दोंसे मुझपर आरोपित अपराधकी स्मृति ताज़ी हो गई। उनके प्राणोंमें पीड़ा होने लगी और उन्हें अपमान बोध होने लगा। आह भर कर उन्होंने मेरी-आइवनोवनासे कहा,—

"जाओ बेटी, यदि तुम्हारी इच्छा है तो जाओ, हम तुम्हारी इच्छाके विधातक और तुम्हारे मार्गमें कण्टक नहीं होना चाहते ईश्वर तुमको एक ईमानदार पति दे न कि बदनाम देशद्रोही।"

पिता कमरेसे उठ कर बाहर चले गये।

मेरी आइवनोवनाने जो कुछ सोचा था अकेलेमें मांको बतला कर अपनी सफलताका विश्वास दिलाया। मांने आंखोंमें आंसू भर कर उसे गले लगा लिया और ईश्वरसे प्रार्थना की कि उसकी कामना पूरी हो। मेरी-आइवनोवनाने दो-चार दिनमें तय्यारी करके सेण्ट-पीटर्सबर्गकी यात्रा कर दी। उसने अपनी विश्वस्त परिचारिका पलाशा और उसीके समान विश्वस्त भृत्य

सेवलिचको साथ ले लिया। सेवलिचको जो बड़ी कठिनाईसे मुझसे अलग हुआ था, यह विचार कर बड़ी सान्त्वना मिलती थी कि वह मेरी भावी पत्नीकी सेवा कर रहा है।

मेरी-आइवनोवनाने सोफिया पहुंच कर सुना कि उस समय दरबार 'ज़ारको सीलो' (Tsarskoe Selo) में था; वह वहीं रुक कर प्रतीक्षा करने लगी। पोस्ट आफिसके पीछे एक क्षुद्र गृह-खण्ड उसे रहनेके लिए मिला। पोस्ट मास्टरकी पत्नी उससे गप-शप करनेके लिए आई और बातचीतके सिलसिलेमें उसने बतलाया कि वह दरबारके एक रसोइयेकी भतीजी है और दरबारी जीवनके रहस्य भी बताए। उसने महारानीके जागनेका समय बतलाया और कहा कि जागनेके बाद वे काफी पीती हैं और फिर टहलने निकलती हैं। सारांश यह कि उसे महारानीकी दिन-चर्य्याके सम्बन्धमें जो कुछ ज्ञान था सब विस्तार पूर्वक मेरी-आइवनोवनासे कहा।

मेरी-आइवनोवनाने बड़े ध्यानसे सब बातें सुनीं। फिर वे दोनों प्रासाद-काननमें गईं। आना-क्लेसोवनाने घूम-घूम कर मेरी-आइवनोवनाको प्रासाद-काननकी सैर कराई और प्रत्येक कुञ्ज और छोटे-छोटे पुलोंके सम्बन्धमें आवश्यक बातें बतलाईं। फिर वे दोनों सन्तोषके साथ पोस्ट-आफिस लौट आईं।

दूसरे दिन तड़के मेरी-आइवनोवना जगी, और उचित वेषमें स्वयं अकेले प्रासाद-काननमें पहुंची। बड़ी सुन्दर प्रभात-वेला थी। पत्तियों पर सूर्य्य सोनेका पानी चढ़ा रहा था, और

वसन्त वायुमें सुहावनापन ला रहा था। विशाल ह्रदमें सुनहले परत लहरा-लहरा कर चमक रहे थे। उसके मनोहर तटपर राज-हंस तर रहे थे। मेरी-आइवनोवना एक मनोरम लान (हरित तृणावर्त्त भू-भाग) की ओर बढ़ी। लानके समीप काउण्ट-पोटर-एलेग्जेण्डरोविच रोमेनजाफका स्मारक बना हुआ था जिसने गत तुर्क-समरमें विजय प्राप्त की थी। अकस्मात् एक अँगरेजी नस्ल-का कुत्ता मेरी-आइवनोवनाकी ओर भूंकता हुआ दौड़ा। वह भयभीत होकर खड़ी हो गई। इसी समय उसे किसी स्त्रीकी कोमल कण्ठ-ध्वनि सुनाई पड़ी,—

"डरो मत, वह काटेगा नहीं।"

मेरीने देखा कि स्मारकके सामने बेञ्च पर एक भद्र महिला बैठी हुई है। मेरी भी चुपचाप जाकर उसी बेञ्च पर एक किनारे बैठ गई। उसने ध्यान पूर्वक मेरीको ओर देखा, मेरीने भी उसकी निगाह बचाकर उसे आपाद-मस्तक देख लिया। वह महिला प्रातःकालीन गाउन पहिने हुये थी, सिरपर उसके एक हलकी टोपी थी और शरीर पर एक बहुमूल्य लबादा। उसकी वयस लगभग चालीस वर्षके होगी। उसकी सुन्दर शान्त लालिमा-पूर्ण आकृतिसे प्रताप झलक रहा था। उसके नील-वर्ण नयनों और हास्य-पूरित ओठोंमें अवर्णनीय मनोमोहकता थी। उस भद्र महिलाने ही पहिले मौन भङ्ग किया। उसने पूछा,—

"जान पड़ता है, आप कहीं बाहरकी रहनेवाली हैं।

"हां, मैं देहातसे कल ही यहां पहुंची हूं।"

"क्या आप अपने माता-पिताके साथ आई हैं?"

"नहीं मैं अकेली हूं।"

"अकेली! आप तो अभी अत्यन्त नव-वयस्क हैं, इस वयस में अकेली निकल पड़ीं!"

"मेरे न पिता हैं और न माता।"

"कदाचित यहां किसी कामसे आप आई हों?"

"हां, मुझे महारानीकी सेवामें कुछ विनय करना है।"

"आप अनाथ हैं, सम्भवतः कुछ अन्याय हुआ होगा उसीके लिये न्याय-प्रार्थना होगी।"

"नहीं न्याय प्रार्थना नहीं, मुझे दया-प्रार्थना करनी है।"

"क्या मैं जान सकती हूं, कि आप कौन हैं?"

"मैं कप्तान माइरोनाफकी कन्या हूं।"

"कप्तान माइरोनाफ! वही कप्तान माइरोनाफ जो ओरनबर्ग के एक दुर्गमें कमानडेण्ट थे।"

"हां, महाशया।"

उसने अत्यन्त कोमल कण्ठस्वरमें कहा, "अपने मामलेमें मुझे दिलचस्पी लेनेके लिए क्षमा करना, मुझे कोर्टमें उपस्थित होनेका प्रायः सौभाग्य प्राप्त होता है। बतलाइये आपकी क्या प्रार्थना है, सम्भव है मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूं।"

मेरी-आइवनोवनाने खड़ी होकर सम्मान पूर्वक उस भद्र महिलाको धन्यवाद दिया। इस अपरिचित भद्र महिलाके

व्यवहार वर्त्तावसे मेरियाका हृदय उसकी ओर आकृष्ट हुआ और विश्वाससे अनुप्राणित हो उठा। उसने अपने पाकेटसे एक कागज निकाला और उस अपरिचित दयाशीला महिलाके हाथमें रख दिया। वह उसे पढ़ने लगी।

पहिले तो उसने उदासता पूर्वक ध्यानसे पढ़ना आरम्भ किया; किन्तु अकस्मात् उसकी मुखाकृति पलट गई। मेरी जो उसके मुंह और भावभङ्गीको बड़े ध्यानसे देख रही थी उसके कुछ ही क्षण पहिलेके शान्त और दयापूर्ण मुखके उस कठोर भावको देखकर भयभीत हो उठी।

महिलाने म्लान कण्ठ-स्वरमें कहा,—

"क्या आप ग्रीनेफके लिये प्रार्थना करना चाहती हैं? महारानी उसे क्षमा नहीं करेंगी। उसने राज-द्रोहीका साथ दिया है, और सो भी अनजान और भूलसे नहीं, एक अत्यन्त पतित और भयानक लुच्चेकी भांति।

मेरीने कहा,—

"ओह! यह सच नहीं है"

महिलाका मुंह तमतमा उठा, उसने कहा,—

"कैसे सच नहीं है?"

मेरीने विनीत भावसे कहा,—

"हां महाशया, यह सच नहीं है। ईश्वर जानता है सच नहीं है। मुझे ठीक-ठीक पता है, मैं आपसे प्रत्येक बात विस्तार-पूर्वक कहूंगी। ग्रीनेफने केवल मेरे कारण जान बूझकर अपनेको

विपत्तिमें फंसाया है। मुझे इस काण्डसे अलग रखनेके उद्देश्य से ही उसने अपनेको निरपराध सिद्ध करनेकी चेष्टा नहीं की।"

मेरीने आदिसे अन्त तक सारी कहानी जो पाठक पिछले पृष्ठोंमें पढ़ चुके हैं, महिलासे कह सुनाई। महिलाने ध्यान-पूर्वक सब बातें सुनीं। मेरीके कह चुकने पर उसने पूछा, 'आप कहां ठहरी हैं?' और यह सुनकर कि वह पोस्टमास्टरकी पत्नी आनाब्लासीवनाके पास ठहरी है मुस्कराकर कहा,—

"अह, मैं जानती हूं। अच्छा, अब इस समय विदा, मुझसे मिलनेके सम्बन्धमें किसीसे भी कोई चर्चा न चलाना। मुझे आशा है कि इस प्रार्थना पत्रका उत्तर पानेके लिये आपको अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी।"

इतना कह कर वह उठी और क्षणभरमें एक कुञ्जके भीतर जाकर दृष्टि-ओट हो गई। मेरी-आइवनोवना आशा-पूर्ण हृदयसे आना-ब्लासीवनाके पास लौट आई।

आना-ब्लासीवना मेरी-आइवनोवनाके इतना तड़के बाहर चले जानेके लिए बक झक करने लगी। उसने कहा कि प्रातःकालीन वसन्त-वायु नव-वयस्कोंके स्वास्थ्यके लिये अत्यन्त अहितकर होता है। वह शीघ्रताके साथ चायदानी ले आई और प्यालेमें चाय ढालकर अपनी कभी न चुकने वाली कोर्ट सम्बन्धी गप आरम्भ ही करने वाली थी कि अकस्मात् द्वार पर राज-चिन्ह-वेष्टित एक गाड़ी आ खड़ी हुई। एक परिचारकने आकर कहा कि

महारानीने कप्तान माइरोनाफकी कन्याको अपने सामने उपस्थित होनेके लिये बुलाया है।

आना ब्लेसीवना एकदम आश्चर्य चकित हो गई।

"या भगवान", उसने कहा, "महारानीने तुम्हें कोर्टमें बुलाया है। तुम्हारी खबर महारानीने केसे पाई मेरी बेटी, तुम महारानीके समक्ष केसे जाओगी? मैं समझती हूं कि तुम तो यह भी नहीं जानतीं कि दरबारी नियमके अनुसार कैसे चला जाता है।.....क्या मैं साथ चलू? मैं तुम्हें अन्ततः सतर्क तो कर सकूंगी। और तुम इन यात्राके कपड़ोंमें जाओगी हो क्योंकर? क्या आया का पीला गाउन मँगा लूं?"

राज-परिचारकने कहा कि महारानीने आदेश दिया है कि कप्तान माइरोनाफकी कन्या अकेली आवे और जिस वेषमें हो उसी वस्त्र-वेषमें अविलम्ब सामने उपस्थित हो। मेरी-आइवनोवना तत्काल गाड़ी पर जा बैठी, आना-ब्लेसीवनाने उसे अनेक उपदेश तथा आशीर्वाद दिये। मेरी-आइवनोवनाको अनुभव हुआ कि हमारे भाग्यका निर्णय होने वाला है, उसका कलेजा जोरसे धड़क उठा। कुछ ही देरमें गाड़ी राजद्वार पर जा खड़ी हुई। मेरी-आइवनोवना कांपते पैरोंसे गाड़ीसे उतरी। दरवाजे खुल गये। कई एक कमरोंमें होकर उसे जाना पड़ा। कमरे जन-शून्य थे किन्तु साज-सामानसे सुसज्जित थे। अन्तमें राज-परिचारकने मेरी-आइवनोवनाको एक बन्द द्वारके पास लाकर खड़ा कर दिया

विवाह हो गया। उसके वंशके लोग अब भी सिम्बर्स्क राज्यमें रहते हैं।.....से लगभग बीस मील दूर पर एक गांव है, जिस पर दस जमीनदारोंका कब्जा है। इनमेंसे एकके घरमें कैथराइन द्वितीयके हाथका लिखा हुआ वह पत्र अब भी शीशेमें मढ़ा हुआ टंगा है जो पीटर ऐण्ड्रियचके पिताके नाम लिखा गया था। पत्रमें लिखा है कि तुम्हारे पुत्रने जो कुछ किया, उचित किया। इसके अतिरिक्त पत्रमें कप्तान माइरोनाफकी पुत्रीके हृदय और बुद्धिकी प्रशंसा की गई है।

समाप्त